विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक

सम्पादकीय

खण्ड २६

समानान्तर दर्शन

प्रथम खण्ड

मिथिलाक प्रश्नसँ बहुप्रमाणीय विवेक धरि

बहत्तरि अध्यायक मूल-पाठाधारित समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २६

समानान्तर दर्शन

प्रथम खण्डक विस्तृत दार्शनिक समीक्षा

मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ आधुनिक दर्शन धरि

मूल मैथिली आ अंग्रेजी द्विभाषिक ग्रन्थाधारित अध्ययन

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · २०२६

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

समीक्षाक विषय : गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १

मूल दर्शनग्रन्थक लेखक तथा मैथिली-अंग्रेजी द्विभाषिक पाठ : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशन : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (ISSN 2229-547X), २०२६।

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। मूल कृति, सम्पादकीय सामग्री आ प्रकाशनसम्बन्धी अधिकार सुरक्षित।

ई पुस्तक मूल दर्शनग्रन्थक उपलब्ध पाठपर आधारित पृथक् आलोचनात्मक अध्ययन अछि। उद्धृत अंश मूल लेखकक छथि; समीक्षकक विवेचन हुनकासँ अलग अछि।

सम्पादकीय भूमिका

‘समानान्तर दर्शन’क प्रथम खण्ड दर्शनकेँ उत्तरक स्थिर संग्रह नहि, प्रश्न, संशय, प्रमाण आ आत्मसमीक्षाक प्रक्रिया मानैत अछि। ई अध्ययन मूल ग्रन्थक बहत्तरि अध्यायकेँ अलग-अलग पढ़ैत अछि; प्रत्येक अध्यायक तर्क, प्रतिपक्ष, ऐतिहासिक चेतना आ भाषिक प्रस्तुतिक आलोचनात्मक परीक्षण करैत अछि।

मिथिलाक दार्शनिक परम्परा एतय केवल स्थानविशेषक उल्लेख नहि, बल्कि न्याय, नव्य-न्याय, भाषा आ शास्त्रार्थसँ बनल प्रश्नविधिक एकटा आधार अछि। तथापि ऐतिहासिक सम्बन्ध आ बौद्धिक समानता एक वस्तु नहि: जतेक जगह मूल पाठ समानता प्रस्तावित करैत अछि, एतय ओकर प्रमाण-सीमा सेहो परखल गेल अछि।

मूल मैथिली पाठकेँ समीक्षा लेल मुख्य आधार मानल गेल अछि; उपलब्ध अंग्रेजी पाठक चयनित प्रसङ्ग मिलाओल गेल अछि। अनुवादक अर्थ-विपर्यय देखाइत अछि तँ ओकरा बिना छिपेने आलोचनात्मक रूपमे राखल गेल अछि।

अनुक्रम

1. दर्शन की अछि? 8
2. प्रश्न, संशय आ प्रमाण 11
3. सत्य आ दृष्टिकोण 14
4. ज्ञानक सीमा 22
5. समानान्तर दर्शनक पद्धति 25
6. वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न 28
7. सांख्य 32
8. योग 34
9. न्याय 36
10. वैशेषिक 38
11. पूर्वमीमांसा 40
12. वेदान्त 42
13. बौद्ध दर्शन 44
14. जैन दर्शन 46
15. लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न 48
16. भाषा, शब्द आ अर्थ 50
17. विदेह: प्रश्नक भूगोल 54
18. याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी 56
19. न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार 58
20. उदयनाचार्य 60
21. वाचस्पति मिश्र 62
22. गङ्गेश उपाध्याय 64
23. नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन 66
24. लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला 68
25. यूनानी प्रश्न 71
26. सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू 73
27. मध्ययुगीन दर्शन 75
28. देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स 77
29. लॉक, बर्कली आ ह्यूम 79
30. कान्ट 81

31. हेगेल आ द्वन्द्व 83
32. मार्क्स 85
33. कीर्केगार्द आ नीत्शे 87
34. प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद 89
35. विश्लेषणात्मक दर्शन 91
36. व्यवहारवाद 93
37. विज्ञान-दर्शन 95
38. व्यक्ति आ समाज 98
39. राज्यक औचित्य 100
40. स्वतंत्रता 102
41. समानता 104
42. न्याय 106
43. जाति आ सामाजिक पदानुक्रम 108
44. वर्ग आ आर्थिक सत्ता 110
45. स्त्री, लिंग आ सत्ता 112
46. भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता 114
47. लोकतन्त्र 116
48. गांधी 118
49. आम्बेडकर 120
50. धर्म की अछि? 123
51. ईश्वरक प्रश्न 125
52. आस्था आ तर्क 127
53. दुःख आ अशुभक समस्या 129
54. कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष 131
55. धर्मबहुलता 133
56. धर्म आ राज्य 135
57. लोकधर्म आ संस्थागत धर्म 137
58. आधुनिकता 139
59. विज्ञान आ मनुष्य 141
60. भाषा आ सत्ता 143
61. इतिहास आ स्मृति 145
62. ज्ञान आ डिजिटल संसार 147
63. कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व 149
64. पर्यावरण आ भावी पीढ़ी 151

65. बहुप्रमाणीय विवेकवाद 154
66. सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद 156
67. गरिमा-आधारित नैतिकता 158
68. बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र 160
69. धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता 162
70. समानान्तर इतिहास-दृष्टि 164
71. समानान्तर दर्शनक सूत्र 166
72. उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ 168

मूल ग्रन्थ, पाठाधार आ समीक्षा-सीमा

समीक्ष्य मूल ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन, प्रथम खण्ड। उपशीर्षक : मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ भारतीय, पाश्चात्य, सामाजिक-राजनीतिक-धर्म आ आधुनिक दर्शनक पुनर्पाठ। मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर। उपलब्ध Word संस्करणमे ७२ मैथिली अध्यायक बाद क्रमसँ ७२ अंग्रेजी अध्याय उपस्थित अछि। पुस्तकक प्रकाशन-विवरणमे खण्ड १ आ २क संयुक्त उल्लेख अछि, मुदा एहि समीक्षा-इकाईमे पहिल खण्डक ७२ अध्याय मात्र अध्ययनाधार बनाओल गेल अछि।

मूल ग्रन्थक भूमिका, मैथिली अनुक्रम, अंग्रेजी अनुक्रम, मूल गद्य आ उपलब्ध अध्यायान्त सन्दर्भक मिलान कएल गेल अछि। शब्दार्थक सम्बन्धमे प्राथमिकता लेखकक मूल मैथिली अभिव्यक्तिकेँ देल गेल अछि।

शास्त्रीय आ आधुनिक दार्शनिकसभक ऐतिहासिक विचारक सम्पूर्ण बाह्य सत्यापन एहि ग्रन्थक एकल अध्ययन-विषय नहि अछि; समीक्षाक प्रमुख आधार प्रकाशित पाठक अपन प्रतिज्ञा, तर्क, दृष्टान्त आ तुलनात्मक निर्वचन अछि।

अध्याय १ : दर्शन की अछि? — प्रश्न, प्रमाण आ इतिहाससम्मत आत्मसमीक्षाक प्रतिज्ञा

दार्शनिक आरम्भ आ मूल प्रतिज्ञाक संरचना

अध्यायक आरम्भमे दर्शनकेँ दार्शनिकसभक मतक इतिहास धरि सीमित करबाक प्रवृत्तिपर प्रतिवाद कएल गेल अछि। ई मात्र अनुशासनक परिभाषा नहि, पूरा ग्रन्थक पद्धतिगत निर्णयन अछि। लेखक विश्वास, अनुभव, मूल्य, व्यवहार आ संस्थाक आधार पूछबाक प्रक्रियाकेँ दर्शनक आरम्भ मानैत छथि। ‘‘ई हमर परम्परा अछि’’ कहला मात्रसँ औचित्य सिद्ध नहि होइत अछि—एहि प्रश्नमे परम्पराक अस्वीकार नहि, ओकर प्रमाण-परीक्षणक माँग निहित अछि।

अध्याय १.१ मे विस्मयसँ आत्मसमीक्षा धरि पाँच गतिपथक उल्लेख एहि प्रतिज्ञाकेँ कार्यविधिमे बदलैत अछि। विस्मय भावात्मक आरम्भ अछि, मुदा अवधारणा आ प्रतिपक्षक परीक्षण बिना ओ दर्शनक सुनिश्चित स्वरूप नहि पबैत अछि।

अध्याय १.२ मे ‘‘हम मानैत छी’’ आ ‘‘हमर मानबाक कारण ई अछि’’क बीच कएल भेद शास्त्रार्थीय उत्तरदायित्वक महत्त्वपूर्ण स्थापना अछि। पहिल कथन मानसक स्थितिक सूचना दैत अछि; दोसर कथन अपनासँ बाहर उत्तरदेय होइत अछि। एहि भेदकेँ न्याय-परम्पराक पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष पद्धतिक समकक्ष राखि देखला पर बुझाइत अछि जे लेखक अपन विवेचनक सम्भावित पाठककेँ सहमत अनुयायीक स्थानपर प्रश्न कयनिहार व्यक्ति बनबैत छथि। मुदा एतय एकटा विशेष सावधानी चाही : प्रत्येक सामाजिक विश्वासक पाछाँ स्पष्ट औपचारिक अनुमान नहि भेटब ओकर निरर्थकता सिद्ध नहि करैत अछि। लोकज्ञानक मौन व्यवहारिकता आ विद्वत् तर्कक लिखित संरचना दू भिन्न प्रमाण-परिस्थिति हो सकैत अछि; एहि भिन्नताकेँ आगामी अध्यायसभमे जतेक स्पष्ट कएल जाएत, समानान्तर पद्धति ततेक फलदायी होयत।

विधागत विभाजनक लाभ आ ओकर सीमा

अध्याय १.३ मे तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, मूल्यशास्त्र, धर्म-दर्शन, विज्ञान-दर्शन आ भाषा-दर्शनक परिचय दैत समय लेखक एहि शाखासभक अन्तरसम्बन्धकेँ सुरक्षित राखैत छथि। ‘‘मनुष्य स्वतंत्र अछि की

नहि?'' प्रश्नकेँ तत्त्वमीमांसा, नैतिक उत्तरदायित्व, दण्डक राजनीतिक औचित्य आ अनुभवक प्रघटनात्मक रूपसँ अलग-अलग देखब एकटा प्रभावी शिक्षण-विधि अछि। विषय-सीमाकेँ कठोर देवाल नहि मानबाक एहि निर्णयसँ पाठक बुझैत छथि जे दार्शनिक वर्गीकरण विचारक सुविधा थिक, जीवनक स्वयंभू बँटवारा नहि।

अध्याय १.४ मे रक्तचापक मापन आ स्वास्थ्य-संसाधनक न्यायपूर्ण वितरणक अन्तर विशेष अर्थपूर्ण अछि। मापनक तथ्यसँ वितरणक मूल्यनिर्णय स्वतः नहि निकलैत अछि। ई दृष्टान्त तथ्य आ मान्यताक कृत्रिम पृथक्करणक पक्ष नहि लैत; ओ देखबैत अछि जे उचित निष्कर्ष लेल प्रश्नानुसार प्रमाणक रूप बदलैत अछि। एतय लेखक विज्ञानक प्रयोगात्मक अनुशासनकेँ महत्त्व दैत छथि, तथापि प्रयोगात्मक निष्कर्षक नैतिक सीमा सेहो स्पष्ट करैत छथि। एहि स्थिति मे दार्शनिक चिन्तन विज्ञानक विकल्प नहि, ओकर अवधारणात्मक आ नैतिक सहचर बनैत अछि।

मिथिलाक पद्धतिगत स्थान : उपलब्धि आ जाँचबाक प्रश्न

अध्याय १.८ मिथिलाकेँ भौगोलिक गौरवक प्रतीक मात्र नहि, ''पद्धतिगत स्मृति''क रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। एहि अवधारणामे विदेहक प्रश्नसंवाद, न्याय-मीमांसा आ नव्य-न्यायक परिभाषागत कठोरताकेँ वर्तमान विवेकशील अभ्याससँ जोड़बाक प्रयत्न अछि। ग्रन्थ अपनहि कहैत अछि जे स्थानीय बौद्धिक परम्पराकेँ गौरवगानमे बदलि देब उद्देश्य नहि; ''गौरव सेहो प्रमाण माँगैत अछि''—ई आत्मसीमा स्वीकारब एहि अध्यायक मूल नैतिक सामर्थ्य अछि।

तथापि इतिहासगत निरन्तरताक दावा आ उपयोगी पद्धतिगत प्रेरणाक दावा भिन्न अछि। विदेहक प्राचीन विमर्शसँ आधुनिक मिथिलाक सब समुदाय धरि एकहि अविच्छिन्न शास्त्रार्थीय संस्कारक प्रसार मानि लेब प्रमाण माँगैत अछि। ऐतिहासिक ग्रन्थ, संस्था, लोकपाठ, जातिगत पहुँच आ भाषिक वञ्चनाक पृथक् परीक्षा बिना बौद्धिक स्मृति क्षेत्रीय समरूपताक भ्रम दऽ सकैत अछि। लेखकक घोषित समानान्तर पद्धति स्वयं एहि सम्भावित जोखिमक सुधारक उपाय

उपलब्ध करबैत अछि : प्रमाणक कसौटी केवल केन्द्रपर नहि, अपन क्षेत्रीय दाबीपर सेहो लागू करब।

पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष आ समेकित आलोचना

अध्यायक अन्तिम पूर्वपक्ष दर्शनकेँ विचारक इतिहास मानैत अछि; उत्तरपक्ष इतिहाससम्मत आलोचनात्मक संवादक वकालत करैत अछि। एहि विधिमे प्रतिपक्ष पूर्णतः निराधार नहि बनाओल गेल अछि—इतिहासक आवश्यकताकेँ स्वीकार कऽ ओकर अपर्याप्तता देखाओल गेल अछि। ई विचारगत उदारता अध्यायक बल अछि। मुदा ‘‘इतिहास’’ आ ‘‘दर्शन’’क कार्यकेँ एक-दोसराक निरपेक्ष विलोम मानबो उचित नहि; लेखकक ‘‘संगम’’क सूत्र एहि अतिरिक्त सरलीकरणसँ बचबैत अछि।

समग्र रूपसँ पहिल अध्याय घोषणात्मक होइतो केवल घोषणापत्र नहि रहैत; ओकर दृष्टान्त, भेद-निर्धारण आ पूर्वपक्ष-विन्यास ओकरा कार्यशील प्रस्तावना बनबैत अछि। सीमा ई अछि जे दर्शनक अनेक विशाल शाखा संक्षेपमे उपस्थित भेला कारण किछु पदक विशिष्ट शास्त्रीय अर्थ एखन उद्घाटित नहि होइत। एहि कमीकेँ ग्रन्थक आरम्भिक परिचयक स्वाभाविक सीमा मानल जा सकैत अछि, अन्तिम प्रमेयक सिद्धि नहि। निर्णयक कसौटी आगाँक अध्यायसभमे एहि उद्घोषणाक वास्तविक अनुप्रयोग होयत।

अध्याय २ : प्रश्न, संशय आ प्रमाण — त्रुटिसंशोध्य ज्ञानक निर्माण

संशयक वैधता : प्रश्न उठेबाक अनुशासन

एहि अध्यायक पहिल वाक्य संशयकेँ ज्ञानक शत्रु नहि, ओकर प्रहरी कहैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई अछि जे लेखक संशयक सभ रूप समान रूपसँ उपयोगी नहि मानैत छथि। अध्याय २.१ मे जानकारीक अभाव, स्रोतक विश्वसनीयतापर शङ्का आ विश्वसनीयताक अवधारणात्मक प्रश्नकेँ तीन अलग स्तरमे बाँटल गेल अछि। एतय केवल ‘‘प्रश्न करबाक स्वतंत्रता’’ नहि, प्रश्नक प्रकार पहिचानबाक अनुशासन उपस्थित अछि। जँ तथ्यगत प्रश्नकेँ सिद्धान्तगत समस्या मानि लेल जाए तँ शोध अनावश्यक विवादमे फँसि सकैत अछि; जँ सिद्धान्तगत प्रश्नकेँ केवल जानकारीक अभाव बुझल जाए तँ ज्ञानमीमांसा ओझराएत।

अध्याय २.५ मे व्यावहारिक, पद्धतिगत आ सर्वव्यापी दार्शनिक संशयक विभाजन एहि भेदकेँ विस्तार दैत अछि। देकार्तक उदाहरण पद्धतिगत संशयक विशिष्ट उद्देश्य देखबैत अछि; मुदा भारतीय न्याय-परम्पराक सामान्य जाँच-व्यवहारकेँ ओकर ऐतिहासिक यथावत् रूपमे अलग राखब आवश्यक अछि। ग्रन्थ एहि दू परम्पराकेँ अक्षरशः एक नहि घोषित करैत, बल्कि संशयक नियमनमे तुलनात्मक संवाद खोजैत अछि। एही संयममे ओकर तुलनात्मक उपयोगिता अछि।

चारि प्रमाण आ दू प्रकारक ज्ञानगत प्रश्न

अध्याय २.२ न्यायसम्मत चारि प्रमाण—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—पर परिचय दैत अछि। प्रयोगक विशेषता ई जे लेखक प्रत्येक प्रमाणक क्षेत्र देखबैत संग ओकर भ्रान्तिक सम्भावना सेहो देखबैत छथि। प्रत्यक्षमे दृष्टिभ्रम, अनुमानमे गलत सामान्यीकरण, उपमानमे सीमित समानता आ शब्दप्रमाणमे वक्ताक विश्वसनीयता आ हित-संघर्षक प्रश्न उठैत अछि। एहन प्रस्तुति प्रमाणकेँ असन्दिग्ध जादुई अधिकार नहि बनबैत; प्रमाणक स्वभावे परीक्ष्य अछि।

मुदा ''उपमान''क व्याख्या केवल सामान्य समानता अथवा उपमा धरि रहि गेलासँ न्यायीय उपमानप्रमाणक विशिष्ट नाम-वस्तु-सम्बन्धी ज्ञानक प्रश्न कम स्पष्ट होइत अछि। सामान्य तर्कमे समानताक दुरुपयोगक आलोचना उपयोगी अछि, मुदा उपमानक न्यायशास्त्रीय परिभाषासँ ओकरा भिन्न चिन्हब अधिक निर्दोष होयत। तहिना शब्दप्रमाणमे सामाजिक संस्थासभक विश्वसनीयता मुख्य समस्या थिक, मुदा प्रमाणिक वचनक ज्ञानोत्पादक शर्त आ केवल प्रतिष्ठित वक्ताक स्वीकृतिक बीच अंतर बढ़ि कऽ देखाबय योग्य अछि। ई आपत्ति अध्यायक व्यापक शिक्षण-गुणकेँ नकारैत नहि; ओकरा तकनीकी रूपसँ परिष्कृत करबाक दिशा दैत अछि।

गेटियर-समस्या, प्रत्ययक औचित्य आ प्रमाणशृंखला

अध्याय २.४ मे संयोगवश सत्य विश्वासक उदाहरण सत्य आ ज्ञानक अन्तर खोलैत अछि। ''काल्हि वर्षा होयत''क बिना आधार अनुमान बादमे सही सिद्ध भेला परो ओ विश्वास ज्ञान किएक नहि कहल जाए—ई प्रश्न आधुनिक औचित्ययुक्त सत्य विश्वासक विचार आ गेटियर-समस्याक परिचय देबाक सुव्यवस्थित उपाय अछि। लेखक एहिकेँ भारतीय प्रमा-प्रमाण भेदसँ संवादमे राखैत छथि, मुदा भारतीय परम्पराक समस्त ऐतिहासिक मतकेँ गेटियरक पूर्वरूप घोषित नहि करैत छथि। एहि इतिहासबोधक सावधानी प्रशंसनीय अछि।

अध्याय २.९ मे सर्वाधिक गम्भीर तर्क उपस्थित अछि : प्रत्येक प्रमाणक पुष्टिक लेल आन प्रमाण चाही तँ अनवस्था; अपनासँ पुष्टि करय तँ चक्र; बिना आधार मानि लेब मनमानी। उत्तरमे लेखक सामान्य ज्ञान-प्रक्रियाकेँ आरम्भिक विश्वसनीयता दैत छथि आ तकर विरोध उठला पर सुधारक प्रक्रिया स्वीकारैत छथि। ''त्रुटिसंशोध्य आरम्भ'' एकटा महत्त्वपूर्ण ज्ञानमीमांसक स्थिति अछि। मुदा एहि कथनक सफलताक कसौटी ई नहि जे ओ अनवस्था शब्दकेँ टारि देत; कसौटी ई अछि जे प्रारम्भिक विश्वसनीयता दएबाक शर्त, खण्डनकारी प्रमाणक बल आ विरोधी स्रोतक तौल कोना निश्चित होयत। ई प्रश्न भविष्यक विस्तृत अध्यायसभक लेल खुलल अछि।

डिजिटल ज्ञानक राजनीति आ प्रमाणक सार्वजनिकता

अध्याय २.७–२.८ मे विशेषज्ञ संस्था आ डिजिटल माध्यमक चर्चा ग्रन्थकेँ आधुनिक सार्वजनिक ज्ञानक विवादमे आनैत अछि। लेखक देखबैत छथि जे हजार साझा कएल प्रविष्टि हजार स्वतंत्र प्रमाण नहि; ई विचार स्रोतगत स्वतन्त्रताक शर्तकेँ स्पष्ट करैत अछि। चलचित्र प्रत्यक्ष-जकाँ देखाय परो सम्पादित हो सकैत अछि, तेँ माध्यमक दृश्य प्रभाव आ घटनाक वास्तविक साक्ष्य अलग जाँचबाक आवश्यकता अछि।

आनन्ददायक पक्ष ई जे विशेषज्ञताक विरोध आ विशेषज्ञतापर अन्धविश्वास दुनूक आलोचना कएल गेल अछि। ज्ञानक लोकतन्त्रीकरण आ विशेषज्ञ मानदण्डक बीच द्वन्द्वकेँ लेखक नारेमे नहि सुलझबैत, बल्कि सार्वजनिक परीक्षण, पारदर्शिता आ संशोधनयोग्यतामे समाधानक दिशा देखबैत छथि। तथापि विशेषज्ञताक संस्थागत परीक्षणमे संसाधनहीन समुदायक वास्तविक पहुँचक प्रश्न आओर पैघ स्थान माँगैत अछि। जँ प्रमाण सार्वजनिक तँ ओकर अध्ययन लेल भाषा, पहुँच आ समय सेहो आवश्यक अछि; समानान्तर दर्शनक नैतिक प्रतिज्ञा एहि भौतिक शर्तसभकेँ अपनावे बिना अपूर्ण रहत।

अध्याय ३ : सत्य आ दृष्टिकोण — बहुदृष्टिगतता आ प्रमाणक साझा कसौटी

विरोधाभास आ बहुवर्णनीय यथार्थक भेद

अध्याय ३क प्रवेशवाक्य ‘‘सभक अपन-अपन सत्य अछि’’क लोकप्रिय रूपकेँ तर्कक कसौटीपर रखैत अछि। एकहि समय आ एकहि अर्थमे ‘‘दीप जरि रहल अछि’’ आ ‘‘दीप नहि जरि रहल अछि’’ दुनू सत्य नहि भऽ सकैत; मुदा एकटा नदीकेँ जलप्रवाह, सिंचाइ, स्मृति, धार्मिक स्थल, राज्यीय संसाधन आ पारिस्थितिकी तन्त्रक रूपमे देखब परस्पर विरोधी कथन नहि। एहि दू दृष्टान्तक जोड़ अध्यायक केन्द्रवर्ती तर्क अछि। अनेक वर्णनक सम्भावना आ प्रत्यक्ष विरोधक असम्भावना अलग राखि लेखक अतिसरलीकृत सापेक्षतावाद आ एकमात्र वर्णनक कठोरतासँ एक संग बचैत छथि।

एहि भेदक आलोचनात्मक शक्ति ई अछि जे ‘‘विरोध’’क पहिने वस्तु, समय, दृष्टि आ आशयक निर्धारण आवश्यक अछि। नव्य-न्यायमे सम्बन्ध आ अवच्छेदकक सूक्ष्मता जे समस्या उठबैत अछि, तकर व्यापक पाठकीय रूप एहि दृष्टान्तमे भेटैत अछि। मुदा ग्रन्थक एहि आरम्भिक अध्यायमे ताहि तकनीकी समकक्षताकेँ सुस्पष्ट परिभाषाक रूप नहि देल गेल अछि; समीक्षा एकर सम्भावना देखैत अछि, सिद्ध ऐतिहासिक समानता घोषित नहि करैत।

अनुरूपता, संगति आ व्यवहार : त्रिधाराक विश्लेषण

अध्याय ३.२–३.४ सत्यक तीन अलग परीक्षण-विधि सामने आनैत अछि। अनुरूपतामे ‘‘आँगनमे आमक गाछ अछि’’क वास्तविक मेल; संगतिमे ऐतिहासिक दावाक तिथि, अभिलेख आ भौगोलिक तथ्यसँ समन्वय; व्यवहारमे दूरसँ पानि बुझि दौड़ला पर मृगतृष्णा भेटबाक असफल क्रिया। एहि उदाहरणसभसँ सिद्धान्त केवल नामक ढेर नहि रहि कऽ ज्ञानक परीक्षणीय व्यवहार बनैत अछि। लेखक स्वयं सचेत छथि जे आन्तरिक संगति कल्पित कथामे सेहो भेटि सकैत अछि आ उपयोगिता कखनो असत्यक सहचर भऽ सकैत अछि। तेँ तीनू सिद्धान्तपरस्पर आलोचनाक स्थान छोड़ैत अछि।

मुदा अनुरूपताक कथन आ वस्तुक ''मेल'' स्वयं कोना निर्दिष्ट हो—एहि प्रश्नकेँ उठाकऽ लेखक जटिल तत्त्वमीमांसा दिश संकेत करैत छथि, ओकर पूर्ण समाधान नहि दैत। सत्यक त्रिधाराकेँ एकटा अन्तिम सर्वमान्य सूत्र मानि लेब स्वयं ग्रन्थक विरोधाभास होयत। उचित पाठ ई अछि जे परीक्षणक प्रसंग भिन्न अछि; विज्ञान, इतिहास आ नैतिक विवेकमे सत्यापनक प्रश्न एकहि मापदण्डसँ समाप्त नहि होइत।

जैन अनेकान्त, बौद्ध द्विसत्य आ सामाजिक दृष्टि

अध्याय ३.५ मे जैन अनेकान्तवाद आ बौद्ध द्विसत्यक उल्लेख एहन सन्दर्भमे अछि जतय लेखक दुनूकेँ ''सभ सत्य बराबर''क वर्तमान लोकप्रिय कथनमे विलीन करबाक विरोध करैत छथि। ''शर्त, दृष्टि आ नयक अनुशासन'' अनेकान्तक विशेषता रूपमे राखल गेल अछि; बौद्ध द्विसत्यकेँ सेहो विशिष्ट दार्शनिक प्रयोजनसँ जोड़ि देखल गेल अछि। एतय तुलना करबाक पहिने भिन्नता सुरक्षित रखबाक दृष्टि स्पष्ट अछि। तथापि जैन नयवाद आ बौद्ध परम्पराक विविध आन्तरिक मतक मूल स्रोताधारित विस्तार एहि अध्यायमे अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि। अवधारणाक सम्पूर्ण ऐतिहासिक सन्दर्भ ग्रहण करबाक लेल अगिला सम्बन्धित अध्यायसभ अनिवार्य होयत।

अध्याय ३.६ मे किसानक नदी-अनुभव आ अधिकारीक संकलित आँकड़ाक तुलना समानान्तर दर्शनक सामाजिक कसौटी स्पष्ट करैत अछि। लेखक किसानक स्थानीय अनुभवकेँ अप्रमाणिक नहि मानैत छथि, आ अधिकारीक व्यापक आँकड़ाकेँ मात्र संस्थागत स्रोत होयबाक कारण तिरस्कृत सेहो नहि करैत छथि। सापेक्ष सामाजिक स्थान अनुभवक विशेष पहुँच दऽ सकैत अछि, मुदा अचूकता नहि—ई स्वीकारोक्ति उपेक्षित स्वरक पक्षमे ठाढ़ भऽ कऽ सेहो प्रमाणक समता राखैत अछि। प्रश्न बचैत अछि : राज्यीय आँकड़ाक सार्वजनिक उपलब्धता, स्थानीय अनुभवक दस्तावेजीकरण आ विवादित तथ्यक निर्णयनक वास्तविक व्यवस्था कोन होय? ग्रन्थक घोषित पद्धति एकर दिश देखबैत अछि; संस्थागत रूपरेखा भविष्यक विस्तारक विषय बनैत अछि।

सत्ता, अभिलेख आ नैतिक निर्णय

अध्याय ३.८–३.९ मे ''आधिकारिक'' आ ''सत्य''क अन्तर विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। अभिलेख ककरा द्वारा, कखन, कोन उद्देश्यसँ बनाओल गेल—ई प्रश्न इतिहासक प्रमाणक तर्कमे सत्ता-विमर्श जोड़ैत अछि। मुदा हाशियाक स्रोतकेँ केवल उपेक्षित होयबाक कारण अचूक मानि लेबो ओहि असन्तुलनक दोसर रूप होयत। लेखकक सुझाव अछि जे केन्द्र आ हाशिया दुनूकेँ समान प्रमाण-अनुशासनमे राखल जाए। ई ''समानान्तर''क राजनीतिक उत्साहपर बौद्धिक नियन्त्रण अछि, जकर बिना पद मात्र घोषणाक साधन बनि जाएत।

घटनाक घटित होयब, घटनाक अर्थ आ घटनाक नैतिक औचित्य—एहि तीन स्तरक पृथक्करण अध्यायक एकटा सूक्ष्म लाभ अछि। कानून पास भेनाइ तथ्य अछि; ओकर गरीबसँ सम्बन्धित असमान परिणाम अनुभवजन्य दाबी; आ अन्यायपूर्ण कहल जाएब नैतिक विमर्श। केवल जनमतसँ तथ्य नहि पलटैत, आ केवल आँकड़ासँ नैतिक निष्कर्ष स्वतः नहि जन्मैत। समानान्तर दर्शनक समग्र परियोजना लेल ई स्तर-भेद अनिवार्य अछि, किएक तँ एही पर ऐतिहासिक स्रोतक चयन, सामाजिक व्याख्या आ नैतिक निर्णयक विश्वसनीयता टिकल रहत।

समेकित निर्णय

तेसर अध्यायक मुख्य उपलब्धि बहुदृष्टिगतता आ साझा सत्य-कसौटीक संगति अछि। लेखक प्रतिपक्षकेँ सुनबाक आवश्यकता स्वीकारैत छथि, मुदा सीधा विरोधी कथनक बीच निर्णय स्थगित करब अन्तिम समाधान नहि मानैत छथि। एहि कारण ''सत्य बहुदृष्टिगत भऽ सकैत अछि, मुदा मनमाना नहि'' वाक्य दार्शनिक अनुशासनक संक्षिप्त सूत्र बनैत अछि, अनियन्त्रित मतबहुलताक नारा नहि। आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे वस्तु, कथन, सामाजिक स्थिति आ नैतिक मूल्यक स्तरसभक परस्पर सम्बन्धक अन्तिम नियम अभी प्रस्तावनात्मक अछि। तथापि एहि अध्यायक तर्क-विन्यास पहिल दू अध्यायक प्रश्न आ प्रमाणक प्रतिज्ञाकेँ प्रत्यक्ष सामाजिक रूप दैत अछि।

मैथिली–अंग्रेजी पाठान्तर : अध्याय १–३क प्रमाणाधारित परीक्षण

नीचाँक तुलनासभ प्रकाशित/संलग्न मैथिली आ अंग्रेजी पाठमे एकहि अध्याय-उपशीर्षकक सीधा वाक्य-मिलानपर आधारित अछि। अंग्रेजी उद्धरण मूल DOCXसँ जसक तस लेल गेल अछि; सुधारित अंग्रेजी वाक्य नूतन अनुवादरूपेँ नहि जोड़ल गेल अछि।

अध्याय	मूल मैथिली	अंग्रेजी पाठ	समालोचनात्मक निर्णय
१·१.३	‘‘ज्ञानमीमांसा पूछैत अछि—ज्ञान की?’’	“Epistemology asks what science is.”	ज्ञानक प्रश्न विज्ञानक परिभाषामे बदलल; मूल ज्ञानमीमांसात्मक अभिप्राय बाधित।
१·१.३	‘‘भारतीय न्याय-परम्पराक हेत्वाभास-विमर्श’’	“Indian jurisprudence”	न्यायक तर्कपरम्पराकेँ विधि-न्यायशास्त्रक दिश अनावश्यक मोड़।
१·१.९	‘‘मुख्यधारा गलत, हाशिया सही’’	“This mainstream misogyny would be just the opposite of bigotry.”	मूलमे नहि रहल स्त्रीद्वेषक अर्थ जोड़ल; मूल प्रतिपक्षक कथ्य ओझरायल।
१·१.९	‘‘सत्ता हो तँ वैधता पूछू’’	“if existence, ask for legitimacy.”	सत्ताक राजनीतिक अर्थ अस्तित्वमे बदलल; तर्कक

			वैधता-विमर्श दूषित।
२ · २.१	‘‘प्रश्न आ संशयक भेद’’	“Questions and Differences of Opinion”	संशय आ मतभेद समार्थक नहि; मुख्य पदक अनुचित विस्थापन।
३ · ३.५	‘‘शुक्तिमे रजत देखबाक भ्रम’’	“in the illusion of seeing silver in ink”	शुक्ति–रजत दृष्टान्तक पदार्थ बदलि गेल; दार्शनिक उदाहरणक पहिचान नष्ट।
३ · ३.७	‘‘सत्यक बहुदृष्टिगतता’’	“the polytheism of truth”	बहुदृष्टिगतता धार्मिक बहुदेववाद नहि; दार्शनिक श्रेणी गलत।
३ · ग्रन्थसूची	‘‘उमास्वाति — Tattvārthasūtra.’’	“Umasvati is the mother of Tattvārthasūtra.”	ग्रन्थकार–ग्रन्थक सम्बन्ध असंगत पारिवारिक कथनमे बदलल।

एहि उदाहरणसँ एकटा महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय सीमा प्रमाणित होइत अछि : अंग्रेजी पाठक उपस्थिति स्वयं अर्थनिष्ठ द्विभाषिकता सुनिश्चित नहि करैत। प्रत्येक अध्यायमे विषयक पाठमिलान, न्यायीय पदावली, तार्किक निष्कर्ष, ग्रन्थकारक नाम आ मूल दृष्टान्त अलगसँ परखबाक आवश्यकता अछि।

अध्याय १–३क अन्तराध्यायिक समेकन

पहिल अध्याय दर्शनकेँ प्रमाण माँगयवाली आत्मसचेत प्रक्रिया बनबैत अछि; दोसर अध्याय प्रश्न उठेबाक आ संशयक उचित नियम बतबैत अछि; तेसर

अध्याय देखबैत अछि जे प्रमाणक साझा कसौटीक भीतर विभिन्न दृष्टिकोण कोना सहअस्तित्वमे रहि सकैत अछि। एहि क्रममे एकटा स्पष्ट तर्क-विकास अछि : प्रश्न → प्रमाणक स्रोत → सत्य-विवादक अनुशासन। ई क्रम विषयसूचीक संयोग नहि, दर्शनक आरम्भिक पाठकीय प्रशिक्षणक रूपमे कार्य करैत अछि।

तीनू अध्यायमे पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षक उपस्थितिसँ विधागत एकरूपता अबैत अछि, मुदा प्रत्येक ठाम वास्तविक कठोर प्रतिपक्षक स्तर समान नहि। पहिल अध्यायमे दर्शनक इतिहास-विरोधक प्रश्न, दोसरमे प्रमाणक अनवस्थाक तर्क, तेसरमे सापेक्षतावादक आत्मसन्दर्भी कठिनाई—एहि क्रममे प्रतिपक्षक तार्किक जटिलता बढ़ैत अछि। एहि वृद्धि सँ परियोजनाक मुख्य तात्पर्य स्पष्ट अछि : समानान्तरताक आधार संस्था-विरोध नहि, प्रमाण-समीक्षाक सममित अनुशासन अछि।

एहि तीन अध्यायक सीमा सेहो साझा अछि। विशाल ऐतिहासिक परम्परासभ प्रारम्भिक शिक्षण-सन्दर्भमे संक्षेपित छथि; मिथिलाक बहुल वास्तविक सामाजिक इतिहासक उदाहरण अपेक्षाकृत कम अछि; तकनीकी न्यायीय पदावली अपन सम्पूर्ण परिभाषागत कठोरतामे एखनो विस्तृत नहि भेल अछि। एहि कारण ग्रन्थक आरम्भिक प्रतिज्ञा प्रभावी होइतो ओकर परीक्षा अध्याय ४ सँ आगामी विधागत विवेचनमे आवश्यक रहत। उपलब्ध अंग्रेजी अनुवादक प्रत्यक्ष अर्थभ्रंश एहि अगिला परीक्षणकेँ आओर आवश्यक बनबैत अछि।

पाठाधार आ ग्रन्थ-सन्दर्भ

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १। उपलब्ध द्विभाषिक Microsoft Word संस्करण; अध्याय १–३ आ समतुल्य अंग्रेजी अध्याय १–३।

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १। भूमिका, अध्याय-निष्कर्ष आ अध्याय-ग्रन्थसूची; उपलब्ध मूल DOCX।

अध्याय ४–६ मूल मैथिली पाठक स्वतन्त्र दर्शन-समीक्षा। प्रमाण-सन्दर्भ : मूल Wordक अध्याय ४–६, तदन्तर्गत उपशीर्षक, पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ४–६।

अध्याय ४ : ज्ञानक सीमा — संशोध्य निष्कर्ष आ संरचित अज्ञान

ज्ञानात्मक विनम्रताक अर्थ

अध्याय ज्ञानक सीमाक स्वीकारकेँ अज्ञानक विजय नहि मानैत अछि। ‘‘हम नहि जानैत छी’’ कहबाक अनुशासनकेँ चिकित्सक, इतिहासकार आ वैज्ञानिकक अलग-अलग परिस्थितिसँ जोड़ल गेल अछि। अनिश्चितता एतय असमर्थताक चिन्ह नहि, प्रमाणक प्रकृतिसँ उपजल उत्तरदायित्व अछि। ग्रन्थक दावा इहे नहि जे मनुष्य त्रुटि करैत अछि; दावा ई सेहो अछि जे त्रुटिक सम्भावनाक निश्चित ज्ञान मानवीय खोजकेँ अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि। एहि तर्कक केन्द्र अध्याय ४.१ आ ४.११ अछि, जतय संशोधनयोग्यता आ मजबूत प्रमाणपर उचित विश्वास एकसंग राखल गेल अछि।

अध्याय ४.१० मे व्यक्तिगत अज्ञान, वर्तमान सामूहिक अज्ञान आ सिद्धान्ततः अज्ञेयताक तीन पृथक् स्तर चिन्हल गेल अछि। ‘‘एखन ज्ञात नहि’’ सँ ‘‘कखनो ज्ञात नहि भऽ सकत’’क निष्कर्ष नहि निकलैत—ई तर्क दार्शनिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा एकटा अनुत्तरित प्रश्न उठैत अछि : कोनो प्रश्न वस्तुतः अज्ञेय अछि, एकर निर्णयन लेल की कसौटी होय? ऐतिहासिक घटनाक नष्ट अभिलेख ज्ञानक व्यावहारिक सीमा बतबैत अछि; ओ स्वतः तत्त्वमीमांसक असम्भाव्यता सिद्ध नहि करैत अछि। लेखकक स्तर-भेद एहि भ्रमकेँ बहुत सीमा धरि रोकैत अछि।

प्रत्यक्ष, स्मृति आ अनुभवक पुनर्परीक्षा

अध्याय ४.२ मे जलमे डण्डा टेढ़ देखायब आ अस्पष्ट प्रकाशमे रस्सीकेँ साँप बुझबाक उदाहरणसँ प्रत्यक्षक त्रुटि देखाओल गेल अछि। मुदा भ्रम चिन्हबाक उपाय सेहो आन प्रत्यक्ष, स्पर्श, निकट अवलोकन आ उपकरणसँ खोजल जाइत अछि। एहि कारण लेखक प्रत्यक्षक एक घटना असत्य भेलासँ प्रत्यक्षमात्रक निरर्थकता नहि मानैत छथि। ई संरचना न्यायीय प्रमाणमीमांसाक प्रश्नसँ मेल खाइत अछि, मुदा ओकर सम्पूर्ण शास्त्रीय तात्पर्य एतय प्रतिपादित नहि भेल

अछि। विशेष ध्यान देबाक बात ई जे दूरबीन आ सूक्ष्मदर्शी-जकाँ उपकरणक परिणाम सेहो व्याख्या आ अंशांकन माँगैत अछि; उपकरणक निष्कर्ष कैं निर्विवाद प्रत्यक्ष मानि लेब तर्क-दोष हो सकैत अछि।

अध्याय ४.३ मे स्मृतिपर कएल विचार मौखिक इतिहासक स्रोतगत सम्मान आ ओकर त्रुटिक स्वीकार—दुनूकैं साथ रखैत अछि। स्मृति पुनर्निर्मित भऽ सकैत अछि; तथापि ई कहि ओकरा लिखित राज्यीय अभिलेखसँ स्वतः नीचाँ राखब उचित नहि। दस्तावेज स्वयं चयन आ संस्थागत उद्देश्यक अधीन बनैत अछि। समीक्षाक दृष्टिसँ एहि तुलनाक उपलब्धि एहि बातमे अछि जे स्रोत-विवादकैं भावुक ‘‘मौखिक बनाम लिखित’’ द्वन्द्वसँ हटाकऽ परस्पर पुष्टि आ स्रोत-स्वरूपक प्रश्न बनाओल गेल अछि।

ज्ञानक सीमासँ सामाजिक संरचनाक आलोचना धरि

अध्याय ४.८–४.९ ग्रन्थक समानान्तर उद्देश्यकैं विशेष बल दैत अछि। ग्रामीण स्त्रीक पानि-संकट सम्बन्धी अनुभव आ नीति-विशेषज्ञक व्यापक आँकड़ाक भेदक माध्यमसँ सामाजिक स्थानकैं ज्ञान-उत्पादनक वास्तविक परिस्थिति मानल गेल अछि। एहि बिन्दुपर ओहि अध्यायक प्रतिज्ञा तेसर अध्यायक किसान–अधिकारीक दृष्टान्तक पुनरावृत्ति-जकाँ बुझा सकैत अछि। मुदा भेद ई अछि जे तेसर अध्याय सत्यक बहुवर्णनीयताक चर्चा करैत छल, चारिम अध्याय निर्णय-प्रक्रियामे ककर अनुभव अनदिखायल रहि जाइत अछि से देखबैत अछि। आंशिक पुनरुक्ति विषयगत प्रगति बनैत अछि, जँ पाठक एहि अन्तरकैं पहचानैत छथि।

‘‘संरचित अज्ञान’’क संकल्पना अध्याय ४.९ मे विशिष्ट अछि। राज्य करक अभिलेख रखय मुदा विस्थापनक सामाजिक लागत नहि; कम्पनी लाभ मापय मुदा अवैतनिक देखभालक श्रम नहि—एहि उदाहरणसभमे अज्ञान निजी विस्मृति नहि, संस्थागत चयनक परिणाम अछि। एतय पाठकसँ प्रमाण-संग्रहक

नूतन क्षेत्र खोलबाक माँग होइत अछि, कल्पित तथ्यक आविष्कारक नहि। ई सीमा स्वयं समानान्तर इतिहास-पद्धतिक उचित नैतिक अनुशासन अछि।

आगमन, गेटियर आ विवेकपूर्ण निष्कर्ष

अध्याय ४.५ मे गेटियर-समस्याक दोहराव अध्याय २.४ सँ स्पष्ट सम्बन्ध रखैत अछि। एतय ओकरा विश्वसनीय कारण-प्रक्रियाक प्रश्नसँ जोड़ल गेल, मुदा विकसित उदाहरणक विस्तार अपेक्षाकृत संक्षिप्त अछि। अध्याय ४.६ मे ह्यूमक आगमन-संशयकेँ सांख्यिकी, पुनरावृत्ति आ त्रुटि-मूल्याङ्कनक आधुनिक व्यवहारीय उत्तरसँ जोड़ल गेल अछि। एतय सावधानी जरूरी अछि : वैज्ञानिक प्रक्रियासभ आगमनक दार्शनिक प्रश्नकेँ सदा लेल अन्त नहि करैत; ओ ज्ञान-व्यवहारमे जोखिम व्यवस्थापित करैत अछि। लेखक ताहि भेदकेँ प्रायः सुरक्षित रखैत छथि।

अध्यायान्तक चारि भाषा-श्रेणी—मजबूत प्रमाणित, सम्भावित, विवादित आ अज्ञात—शोधक स्रोत-प्रस्तुति लेल उपयोगी अछि। तथापि एहि श्रेणीसभक बीच वर्गीकरण-मानदण्ड स्पष्ट करब आगामी अनुप्रयोगमे आवश्यक होयत, नहि तँ ‘‘विवादित’’ शब्द विचारक वास्तविक कमजोरीक स्थानपर केवल विरोधी व्यक्तिक उपस्थिति भरि दर्शाएत। अध्यायक उपलब्धि जँ ज्ञानक आत्मसीमा अछि, तँ ओकर आलोचनात्मक परीक्षा एहि सीमाक व्यवहारिक रूपरेखा थिक।

अध्याय ५ : समानान्तर दर्शनक पद्धति — बारह चरण आ आत्मपरीक्षाक अनिवार्यता

घोषणासँ संचालन-विधि धरि

पाँचम अध्याय पहिल चारि अध्यायक मूल दावाकेँ नियमित शोध-पद्धतिमे बदलबाक प्रयत्न अछि। मुख्य बाट आ समानान्तर बाटक रूपक जतय केन्द्र-हाशियाक जटिल सम्पर्ककेँ देखबैत अछि, ओतहि मार्ग-विस्तारकेँ विध्वंसक विकल्प नहि मानैत। विषयपरिभाषा, स्रोत-क्रम, सबल पूर्वपक्ष, न्यायसंगत वाद, सममित प्रमाणक कसौटी, ऐतिहासिक परीक्षण, अनुवाद, तुलनाक स्तर, केन्द्र-हाशिया आ आत्मसमीक्षा—ई सभ एक-दोसरसँ सम्बद्ध शर्त थिक। एहि कारण अध्यायक मूल्य केवल ‘‘नियम बताओल’’ नहि; मूल दार्शनिक परियोजनाकेँ पुनरावृत्तिशील परीक्षणक प्रक्रिया बनाओल अछि।

अध्याय ५.३ प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक आ लोक-स्रोतक परिचय दैत अछि। एहि वर्गीकरणक महत्त्व स्रोतक श्रेणीबद्ध प्रतिष्ठा नहि, ओकर ज्ञानोत्पादनक भिन्न स्वभाव अछि। मौखिक स्मृति राजकीय आदेश नहि; राजकीय आदेश निष्पक्ष समाज-वर्णन नहि। ई दू वाक्य समानान्तर इतिहासक आधार बनि सकैत अछि, कारण एकरे बिना लेखक न राज्यक अभिलेखकेँ पूर्ण सत्य मानि सकैत छथि, न स्मृतिक अपन सामाजिक निकटताकेँ पर्याप्त प्रमाण।

सबल पूर्वपक्ष आ वादक नैतिकता

अध्याय ५.४ मे प्रतिपक्षक सबल रूप प्रस्तुत करबाक आग्रह दार्शनिक नैतिकताक केन्द्रीय नियम अछि। प्रतिपक्षक समर्थक अपन विचारक उचित प्रस्तुति पहचानि सकथि—एहन कसौटी औपचारिक शिष्टता सँ पैघ अछि। ई विद्वत् विवादमे छलपूर्वक दुर्बल प्रतिमान बनायबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत अछि। न्यायीय वाद, जल्प आ वितण्डाक अन्तर एहि नीतिक व्यावहारिक रूप होइत अछि। सत्यक लक्ष्य, विजयक लक्ष्य आ केवल विरोधीकेँ खण्डित

करबाक लक्ष्य अलग कएने बिना सार्वजनिक वाद-विवादक गुणवत्ता जाँचब सम्भव नहि।

मुदा जँ सामाजिक शक्तिक असमानता अत्यधिक हो, तँ ‘‘समान प्रमाण-कसौटी’’क व्यवहारिक अर्थ कोना तय होयत? मौखिक गवाही, शोषित समुदायक स्मृति आ संस्थागत अभिलेखक प्रमाण जुटेबाक संसाधन एक नहि। अध्याय ५.६ समानताक अर्थ स्रोतसभक एकहि रूप नहि, दावाक प्रकृतिनुसार प्रमाणभार बतबैत अछि। एहि वाक्यमे समाधानक मुख्य सम्भावना अछि; परन्तु प्रमाण संग्रहक वास्तविक असमान साधनपर आगामी ऐतिहासिक अध्यायमे अधिक ठोस विवेचन चाही।

अनुवाद आ तुलनाक तीन स्तर

अध्याय ५.८ मे ‘‘प्रमाण’’ कैं सदा ‘‘evidence’’ लिखि देबाक असमर्थता मूलतः दार्शनिक अर्थक समस्या अछि। प्रमाण केवळ तर्कमे दत्त वस्तु नहि, विश्वसनीय यथार्थबोधक उत्पादक साधन सेहो हो सकैत अछि। तहिना धर्मकैं religion आ आत्मन् कैं self लिखि देब सर्वसन्दर्भमे पर्याप्त नहि। यैह दार्शनिक अनुशासन अछि जकर उल्लङ्घन पहिल अध्यायक उपलब्ध अंग्रेजी अनुवादमे ‘‘ज्ञान’’ कैं science आ ‘‘सत्ता’’ कैं existence करैत भेटैत अछि। एहि प्रकार अध्याय पाठमे अपन द्विभाषिक सम्पादनक कसौटी स्वतः प्रस्तुत करैत अछि; सम्पादकीय परीक्षणमे शब्दक मूल अर्थक रक्षा विशेष आवश्यक अछि।

तुलनाक तीन स्तर—विषयगत समानता, समस्या-संरचनात्मक समता आ वास्तविक तर्क-संवाद—ग्रन्थक एकटा स्पष्ट बौद्धिक उपलब्धि अछि। गङ्गेशक व्याप्ति आ ह्यूमक आगमन दुनू ज्ञातसँ अज्ञातक औचित्यक प्रश्न छुबैत छथि, मुदा एकर अर्थ ई नहि जे इतिहास, पदावली आ समाधान समरूप अछि। ‘‘प्राचीन आचार्य आधुनिक सिद्धान्त पहिनहि कहि देने छलाह’’क विजयवादी दाबी नकारब ऐतिहासिक अनैतिहासिकतासँ बचबाक प्रतिबद्धता अछि।

बारह चरणक प्रणाली आ आत्मसमीक्षा

अध्याय ५.१४ मे बारह चरण क्रमबद्ध छथि : प्रश्न आ पद स्पष्ट करब; विश्वसनीय स्रोत खोजब; इतिहास पुनर्निर्मित करब; मूल मतकेँ सबल रूपमे रखब; प्रतिपक्ष, प्रमाण, तुलना आ वर्तमान प्रासंगिकता जाँचब; स्वतंत्र निष्कर्षकेँ स्रोतसँ अलग करब; आ तकर सीमा स्वीकारब। ई क्रम शोध-पाण्डुलिपिक जाँच-सूची बनबाक सामर्थ्य रखैत अछि। मुदा लेखक स्वयं चेतबैत छथि जे बारह चरण प्रत्येक अध्यायक यान्त्रिक साँचा नहि। विषयक विविधताक अनुरूप लचीला संचालन ई अनुशासनक सफलता लेल आवश्यक अछि।

अध्याय ५.१६ मे पद्धति अपनासँ प्रमाण माँगैत अछि। ई स्वप्रतिबद्धता विशेष महत्त्वपूर्ण अछि : जे दर्शन केन्द्रक चयनक आलोचना करैत अछि, ओकरा अपन लेखकत्व, मौन आ चयन सेहो परीक्षणीय मानय पड़त। समालोचनाक दृष्टिसँ एहि नियमक मूल्य घोषणा मात्र नहि; जँ ग्रन्थक आगामी अध्यायसभमे प्रिय क्षेत्रीय स्रोतक कठोर समीक्षा होयत, तखन ई सिद्धान्त कार्यरूप ग्रहण करत। अध्यायक समेकित निर्णय एहि भविष्यत् पाठ-परीक्षापर आधारित रहत, केवल सम्पादकीय प्रशंसापर नहि।

अध्याय ६ : वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न — बहुवचनता आ ऐतिहासिक सावधानी

काव्य, अनुष्ठान आ दर्शनक परस्पर सम्बन्ध

छठम अध्याय भारतीय दर्शनक प्राचीन पृष्ठभूमिकेँ एकहि सिद्धान्तक रेखीय इतिहास नहि बनबैत। वैदिक मंत्र, ब्राह्मण, आरण्यक आ उपनिषदमे जगत्, ऋत, यज्ञ, वाक्, मृत्यु, आत्मा आ मुक्ति सम्बन्धी विविध प्रश्न एकसाथ रहैत अछि—एहि विविधताकेँ लेखक दार्शनिक सामग्री मानैत छथि। अध्याय ६.१ मे नासदीय सूक्तक ज्ञानगत संशयकेँ आधुनिक खगोल-विज्ञानक पूर्वज्ञान मानबाक प्रलोभनसँ बचल गेल अछि। धार्मिक काव्यमे ‘‘के जानैत छथि?’’ प्रश्नक उपस्थिति अपनहि महत्त्व रखैत अछि; आधुनिक विज्ञानक शब्द चिपकौलासँ ओ महत्त्व बढ़ैत नहि।

अध्याय ६.२–६.३ मे यज्ञ आ आत्मविद्याक सम्बन्धकेँ ‘‘पुरान कर्मकाण्ड समाप्त, नव दर्शन शुरू’’क सरल कथा नहि बनाओल गेल अछि। अनुष्ठानक प्रतीकात्मक पुनर्व्याख्या, आन्तरिक ज्ञानक उभार आ निरन्तरता एकसंग देखाओल गेल अछि। एहि पद्धतिसँ परिवर्तन आ अविच्छिन्नता दुनूक दाबी जाँचल जा सकैत अछि। तथापि पाठककेँ ई सदा ध्यान राखय पड़त जे अलग-अलग वैदिक पाठक रचनाकाल आ सामाजिक प्रसंग एक नहि। ग्रन्थक आरम्भिक संक्षेप सेहो एहि अनेकान्त ऐतिहासिक क्रमक पूर्ण सिद्धि नहि।

संवादात्मक तर्क : उद्दालक, मैत्रेयी, गार्गी आ नचिकेता

अध्याय ६.७ मे उद्दालक–श्वेतकेतु संवादक माटि, बीज आ लवणक दृष्टान्तकेँ ‘‘एक जानला सँ अनेक कोना जानल जाए’’ प्रश्नसँ जोड़ल गेल अछि। ई दृष्टान्त पदार्थविज्ञानक आधुनिक सिद्धान्तक प्रत्यक्ष पूर्वरूप नहि, शिक्षणीय सामान्यीकरणक दार्शनिक संकेत थिक। अध्याय ६.८ मे मैत्रेयी–याज्ञवल्क्य संवादमे धन आ अमरत्वक सम्बन्ध उठैत अछि; एतय प्रश्नक

स्वरूप केवल आधुनिक व्यक्तिवादी स्वार्थ-तर्क नहि, आत्मबोधक जीवनगत मूल्य अछि।

गार्गीक जनकसभामे जिज्ञासा शास्त्रीय सार्वजनिकताक उदाहरण अछि। लेखक एतयसँ प्राचीन समाजमे सार्वत्रिक लैंगिक समानताक निष्कर्ष नहि निकालैत छथि। एकटा स्त्री आचार्यक उपस्थिति आ व्यापक सामाजिक पहुँचक प्रमाण अलग होइत अछि—ई सावधानी ग्रन्थक समानान्तर ऐतिहासिक अनुशासनक प्रत्यक्ष अनुप्रयोग अछि। नचिकेताक प्रश्नमे मृत्यु, श्रेय-प्रेय आ आत्मबोधक नैतिक गठन देखाओल गेल अछि; रथरूपककेँ बादक सांख्यक पूर्ण सिद्धान्त मानबाक इतिहासविरोधी शॉर्टकट अस्वीकृत अछि।

विदेहक स्थान : प्राचीन सन्दर्भ आ आधुनिक अस्मिताक भेद

अध्याय ६.१५ मे मिथिलाक सन्दर्भ विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। जनक, याज्ञवल्क्य आ विदेहक प्रश्नपरम्पराकेँ वर्तमान मिथिलाक इतिहाससँ संवादमे रखबाक प्रयास अछि, मुदा प्राचीन विदेह, आधुनिक सीमारेखा आ वर्तमान मैथिली अस्मिताकेँ बिना मध्यवर्ती प्रमाणक एकहि वस्तु मानबाक विरोध कएल गेल अछि। ई आत्मसीमा आवश्यक अछि; नहि तँ क्षेत्रीय सांस्कृतिक आनन्द ऐतिहासिक निष्कर्षक स्थान लऽ लेत। ग्रन्थक पद्धति एहि सम्भावित जोखिमकेँ पहचानैत अछि।

एहि अध्यायमे बौद्धिक चरित्रक निरन्तरता आ आधुनिक समूहगत उत्तराधिकारक भेद अधिक स्पष्ट करबाक अवसर एखन शेष अछि। जनकसभाक स्मृति लेखकक दार्शनिक चयन लेल प्रेरक हो सकैत अछि; मुदा प्राचीन शिक्षण-संस्थासँ वर्तमान भाषाभाषी सभक सामाजिक उत्तराधिकार कतेक प्रकारक छल, तकर अलग अभिलेखी अध्ययन चाही। नहि तँ दार्शनिक पद्धतिक प्रेरणा इतिहासक प्रमाणित वंशावलीक रूप धऽ लेत।

दार्शनिक पुनर्निर्माणक सीमा आ निष्कर्ष

अध्याय ६.१६ मे पूर्वपक्ष उपनिषदकेँ आध्यात्मिक काव्य मात्र मानैत अछि, कारण ओकर बहुसंख्य पाठमे औपचारिक परिभाषा आ तर्कक क्रम संस्कृत न्यायसूत्र-जकाँ स्पष्ट नहि। उत्तरपक्ष बतबैत अछि जे प्रश्न, प्रतिप्रश्न, निषेध, दृष्टान्त आ सार्वजनिक बहस सेहो दार्शनिकता धारण कऽ सकैत अछि। ई

विचार सम्यक् अछि; किन्तु लेखक स्वयं चेतबैत छथि जे प्रत्येक प्रतीकात्मक पदकेँ विकसित दार्शनिक सिद्धान्त बनायबो गलती होयत। एहि सतर्कताक कारण अध्याय रूपकक व्याख्या आ इतिहाससम्मत पुनर्निर्माणक सीमा स्वीकारैत अछि।

समग्र रूपसँ छठम अध्याय समानान्तर दर्शनक पहिल वास्तविक ऐतिहासिक सामग्रीक परीक्षा अछि। एतय पहिल पाँच अध्यायक प्रमाण, इतिहास, सबल पूर्वपक्ष आ आत्मसीमाक नियम स्पष्ट रूपसँ प्रयुक्त होइत अछि—विशेषतः आधुनिक विज्ञानक कालविपर्यय नकारबाक प्रसंगमे। सीमा ई जे मूल संस्कृत वाक्यसभक विस्तृत समालोचनात्मक पाठ-साक्ष्य अध्यायक एहि आरम्भिक स्वरूपमे सीमित अछि; शास्त्रीय निर्णय लेल सम्बन्धित मूल पाठक स्वतंत्र तुलना आवश्यक रहत। एहि सीमा स्वीकारबाक निर्णय ग्रन्थक उपलब्धि अछि, ओकर दोष ढाँकबाक साधन नहि।

अध्याय ४–६क समेकित दार्शनिक निर्णय

चारिम अध्याय ज्ञानक सीमा, पाँचम ओकर परीक्षण-पद्धति आ छठम ऐतिहासिक ग्रन्थपर पद्धतिक प्रारम्भिक प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। एहि तिनूक क्रममे एकटा शिक्षणीय अन्तरप्रवाह अछि : विश्वसनीय ज्ञान सीमित अछि → ताहि सीमा बुझेबाक लेल प्रमाण-अनुशासन चाही → इतिहासक प्रश्नसभपर ओहि अनुशासनकेँ लागु करब चाही। शुरुआती तीन अध्यायक प्रश्न–प्रमाण–सत्यक रचनासँ एहि क्रमक तार्किक सम्बन्ध स्पष्ट अछि।

एकटा आलोचनात्मक तनाव रहि जाइत अछि : सममित प्रमाणक माँग आ संस्थागत असमान स्रोत-उपलब्धता सदैव सहज रूपसँ मेल नहि खाइत। ग्रन्थ स्रोतक स्तर आ सामाजिक विषमता दुनू स्वीकारैत अछि, मुदा व्यावहारिक निर्णयक विस्तृत मानदण्ड शेष अछि। दोसर तनाव पद्धतिक आदर्श आ उपलब्ध द्विभाषिक रूपान्तरक वास्तविक अर्थभ्रंशमे अछि। पाँचम अध्याय स्वयं अनुवादकेँ दार्शनिक समस्या कहैत अछि, तेँ अंग्रेजी संस्करणक आगामी समीक्षा मात्र भाषिक सम्पादन नहि, ग्रन्थक अपन दर्शनक कसौटी होयत।

अध्याय ४–६क पुस्तकाधारित ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड १। मूल मैथिली अध्याय ४ ‘‘ज्ञानक सीमा’’, ५ ‘‘समानान्तर दर्शनक पद्धति’’, ६ ‘‘वैदिक चिन्तन आ उपनिषदिक प्रश्न’’; उपलब्ध द्विभाषिक Word संस्करण, समतुल्य अंग्रेजी अध्याय ४–६।

अध्याय 7 : सांख्य

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 7 ‘‘सांख्य’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 7, ‘‘Sāṃkhya’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

सांख्यक समीक्षा केवल तत्त्वगणनाक विवरण नहि रहि सकैत। अध्याय दुःखक त्रिविध अनुभवसँ पुरुष-प्रकृति भेद धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रममे बुद्धि आ अहंकारक मानसिक गतिविधिकेँ प्रकृतिक क्षेत्रमे राखल गेल अछि, पुरुषकेँ अनुभूतिक साक्षी मानल गेल। एहि भेदक दार्शनिक बल ई अछि जे मानसिक घटनाक परिवर्तन आ चेतनाक उपस्थितिकेँ एकहि वस्तु नहि मानैत; मुदा एहि दूनूक सम्बन्ध सिद्ध करब कठिन रहि जाइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(7.1 ‘सांख्य’ आ गणनाक पद्धति) :** “‘सांख्य’ शब्दकेँ प्रायः गणना अथवा तत्त्वसभक संख्या-सूची सँ जोड़ल जाइत अछि। परम्परा कपिलकेँ आद्य आचार्य मानैत अछि, मुदा हुनकर कोनो निर्विवाद मूल ग्रन्थ उपलब्ध नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

सत्कार्यवादक समर्थनमे कारणमे कार्यक सम्भाव्यता आ विशिष्ट क्षमता रखबाक बात उठैत अछि। वैशेषिकक आरम्भवादसँ एकर वास्तविक मतभेद अछि: नूतन कार्यकेँ कारणक रूपान्तरण मानब कि नूतन समष्टि-सत्ताक उदय? अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे पच्चीस तत्त्वक ‘विकास’ जैविक विकासवादक पर्याय नहि। एहि स्पष्टीकरणसँ पाठ कालभ्रमसँ बचैत अछि, यद्यपि गुण-सिद्धान्तक आधुनिक प्रायोगिक प्रमाण स्वतः उपलब्ध नहि होइत।

मूल पाठक साक्ष्य **(7.6 बुद्धि, अहंकार आ मन) :** “सांख्यक अन्तःकरण-विश्लेषण अत्यन्त सूक्ष्म अछि। बुद्धि निर्णयात्मक आ विवेकात्मक क्षमता;

अहंकार ‘हम’ भावक निर्माण; मन इन्द्रिय-सूचनाक समन्वय आ संकल्प-विकल्पक केन्द्र।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पुरुष अनेक मानल जाइत छथि, पर ओ सभ गुणरहित चेतना होइथि तँ हुनकर पारस्परिक संख्यात्मक भेद चिन्हबाक आधार की? अचेतन बुद्धि जँ निर्णय करैत अछि तँ शुद्ध निष्क्रिय साक्षी ओकर अनुभवकर्ता कोना बनैत अछि? अध्याय स्वयं एहि दू अपूर्व कठिनाईकेँ उठबैत अछि। साक्षीकेँ अनिवार्य व्याख्यात्मक शर्त मानलासँ सम्बन्धक स्वरूप स्पष्ट नहि भऽ जाइत। समीक्षामे ओहि अधूरापनकेँ उपलब्धि घोषित नहि कऽ विचारक जटिलता मानब जरूरी अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(7.11 ईश्वरक प्रश्न) :** “शास्त्रीय सांख्यकारिका सृष्टिकर्ता ईश्वरकेँ प्रणालीक आवश्यक तत्त्व नहि बनबैत। एहि कारण सांख्यकेँ प्रायः निरीश्वरवादी कहल जाइत अछि। मुदा ‘निरीश्वरवादी’क आधुनिक अर्थ सावधानीसँ उपयोग करबाक चाही।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सांख्य आ योगक घनिष्ठता रहितहुँ दुनूक अभ्यास-पद्धति अलग अछि: एकटा विवेक-ज्ञानक तत्त्वमीमांसाक क्षेत्र खोलैत अछि, दोसर चित्तक अनुशासन विकसित करैत अछि। समानान्तर दर्शनक उपयोगी हस्तक्षेप शुद्ध चेतनाकेँ आधुनिक तन्त्रिका-विज्ञानक कोनो खोजक समान घोषित करबासँ स्पष्ट दूरी अछि। इतिहाससम्मत असमानताक रक्षा करैत तुलना खोलब एहि अध्यायक वास्तविक पद्धतिगत मूल्य अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 7; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 8 : योग

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 8 ‘‘योग’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 8, ‘‘Yoga’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

योगकेँ शारीरिक आसनधरि सीमित कएलासँ पतञ्जलिक मन, प्रमाण, क्लेश आ कैवल्यक दर्शन ओझर भऽ जाइत अछि। अध्यायक प्रवेश-वाक्य एहि लोकप्रिय संकुचनक प्रतिवाद करैत अछि। चित्तवृत्तिनिरोधक अर्थ पूर्ण संवेदनहीनता नहि; वृत्ति, अभ्यास आ वैराग्यक अनुशासित सम्बन्ध अछि। मूल ग्रन्थ योगसूत्रक इतिहास आ व्याख्याकारक अन्तरकेँ सेहो चिन्हैत अछि, जाहिसँ उत्तरकालीन योगाभ्यासकेँ मूल सूत्रपर बिना परीक्षण आरोपित नहि कएल जा सकैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(8.1 योगसूत्र: पाठ आ परम्परा) :** “योगसूत्र पतञ्जलिक नामसँ सम्बद्ध ग्रन्थ अछि, चारि पादमे व्यवस्थित—समाधि, साधना, विभूति आ कैवल्य। ग्रन्थक रचना-काल आ सम्पादन-इतिहास पर विद्वानसभक मतभेद अछि; अतः निश्चित तिथि पर अनावश्यक दृढ़ता उचित नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

पाँच वृत्ति आ अष्टाङ्ग साधनाक बीच नैतिकता अनिवार्य मध्यस्थ अछि। यम-नियमकेँ ध्यानक अप्रासंगिक प्रस्तावना मानलासँ योगक नैतिक संरचना टूटि जाइत अछि। प्रमाणवृत्ति आ विपर्ययक भेद एहि कारण विशेष ध्यान खींचैत अछि: चित्तक गतिशीलता केवल रोग नहि, सही ज्ञानक माध्यम सेहो हो सकैत अछि। समीक्षा चाहैत अछि जे मानसिक शान्ति आ सत्य-जाँचक सम्बन्धकेँ स्पष्ट रखल जाए।

मूल पाठक साक्ष्य **(8.6 क्लेश: दुःखक मानसिक संरचना) :** “अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष आ अभिनिवेश पाँच क्लेश मानल जाइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

योग आधुनिक मानसिक स्वास्थ्यक चर्चासँ संवाद स्थापित करैत अछि, मुदा उपचारक प्रयोगजन्य प्रभाव, प्राचीन मोक्षदर्शन आ निजी अनुभव तीन अलग साक्ष्य-स्तर छथि। चित्तवृत्तिनिरोधकेँ आधुनिक चिकित्सा-विधिक प्रमाणित सार्वत्रिक उपचार बतायब मूल ग्रन्थक अपेक्षा सँ बाहर होयत। सिद्धि-विभूतिक कथासभक बाबत सेहो ऐतिहासिक पाठ आ सत्यापनयोग्य दावा अलग होयबाक चाही। एहि भेदक कठोरता अध्यायक उपयोगितातेँ बढ़बैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(8.11** सिद्धि आ विभूति**) :** “योगसूत्रक विभूतिपाद ध्यान-संयमसँ उत्पन्न असाधारण क्षमतासभक चर्चा करैत अछि। आधुनिक पाठक लेल ई खण्ड विशेष सावधानी माँगैत अछि। परम्परागत ग्रन्थ स्वयं अनेक सिद्धिकेँ अंतिम मुक्ति नहि मानैत; ओ साधक लेल आसक्तिक कारण बनि सकैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सांख्यक पुरुष–प्रकृति अनुबन्ध योगक पृष्ठभूमि अछि; तथापि पतञ्जलिक ईश्वरप्रणिधान आ साधना-पद्धति सांख्यसँ स्वतन्त्र प्रश्न उठबैत अछि। अध्यायक पलायनवाद-विषयक पूर्वपक्ष प्रासंगिक अछि: जँ साधक मात्र अपन चित्त बदलैत छथि, अन्यायपूर्ण सामाजिक परिस्थिति कोना बदलत? योगक अहिंसा-सत्य अनुशासन उत्तरक सम्भावना दैत अछि, मुदा सामाजिक न्याय लेल संस्थागत काजक आवश्यकता घटैत नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 8; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 9 : न्याय

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 9 ‘‘न्याय’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 9, ‘‘Nyāya’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

न्याय अध्याय प्रमाणक साधन आ यथार्थबोधक लक्ष्यकेँ विवाद-पद्धतिसँ जोड़ैत अछि। सोलह पदार्थक सूची एतय केवल याद करबाक गणना नहि, संशयसँ निर्णयधरि पहुँचबाक ज्ञानात्मक कार्ययोजना बनैत अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक अलग प्रमाणाधार बुझला पर शास्त्रीय न्यायकेँ मात्र आधुनिक औपचारिक तर्कक प्राचीन संस्करण मानबाक भ्रम निवारित होइत अछि। एतय ज्ञान आ मोक्षक सम्बन्ध तर्कविधिक सामाजिक आ अस्तित्वगत अर्थ खोलैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(9.1 न्यायसूत्र आ परम्परा) :** “न्यायसूत्र गौतम अथवा अक्षपाद गौतमक नामसँ सम्बद्ध अछि, मुदा एकर रचना-काल विद्वानसभक बीच विवादित अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

व्याप्तिक प्रश्न अध्यायक केन्द्रमे अछि: धूमसँ अग्निक अनुमान दाबी करबाक लेल सहगमनक सीमित उदाहरण पर्याप्त कि व्यापक अविनाभावक सिद्धि आवश्यक? हेत्वाभासक विवेचन एही कसौटीकेँ दोष-परीक्षामे बदलैत अछि। शब्दप्रमाणक प्रसंगमे आप्तक विश्वसनीयता स्वतः प्रतिष्ठा नहि, कथनक सत्यता, योग्यता आ उद्देश्यक परीक्षण मागैत अछि। एहि बिन्दुपर ग्रन्थक पद्धति आधुनिक सार्वजनिक सूचनाक समस्यासँ संवाद खोलैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(9.6 हेत्वाभास: तर्कक भ्रम) :** “न्याय केवल वैध तर्क नहि, गलत तर्कक संरचना सेहो विश्लेषित करैत अछि। हेतु जँ साध्य सिद्ध

करबाक योग्य नहि, विरोधी परिणाम दैत अछि, अनिश्चित अछि वा अन्य दोष रखैत अछि तँ हेत्वाभास उत्पन्न होइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

वाद, जल्प आ वितण्डाक भेद केवल विद्यालयीय संज्ञा नहि। प्रतिपक्षक कथनकेँ बलिष्ठ रूपमे प्रस्तुत करब, निष्पक्ष प्रमाणभार मानब आ विजयक इच्छाकेँ सत्यजिज्ञासासँ अलग करब—ई पुस्तकक आरम्भिक कार्यपद्धतिसँ जुड़ैत अछि। मुदा न्यायीय शब्दप्रमाणक भरोसा सामाजिक प्रतिष्ठासँ कोना अलग होयत, विशेषतः जखन अधिकारक असमान वितरण अछि, एहि प्रश्नपर अधिक सामाजिक विश्लेषण अपेक्षित अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(9.11 दुःख आ अपवर्ग) :** “न्याय केवल तर्कक विद्यालय नहि; अंतिम लक्ष्य दुःखनिवृत्ति अथवा अपवर्गक प्रश्नसँ जुड़ल अछि। मिथ्याज्ञान दोष, प्रवृत्ति, जन्म आ दुःखक शृंखलासँ सम्बन्धित मानल जाइत अछि; यथार्थ ज्ञान एहि चक्रक निवृत्तिमे सहायक।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

न्यायक परवर्ती नव्य-न्यायमे प्रवेशक संकेत एहि अध्यायक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। नव्य-न्यायक अत्यन्त सूक्ष्म भाषा आरम्भिक न्यायसूत्रक वाक्य-विश्वसँ अलग विकसित भेल, तँ दुनूक एकहि समयक उपलब्धि मानब अनुचित। सांख्यक विवेक, योगक साधना आ न्यायक प्रमाण—तीनू मुक्तिक दाबी करैत छथि मुदा ज्ञानरचना भिन्न। समानान्तर पठन एहन भिन्नताकेँ नष्ट नहि करैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 9; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 10 : वैशेषिक

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 10 ‘‘वैशेषिक’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 10, ‘‘Vaiśeṣika’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

वैशेषिक जड़-चेतन आ गुण-कर्मक भिन्नता संसारक वर्गीकरणद्वारा बुझैत अछि। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय आ परवर्ती अभावक सूची एकटा स्थिर आविष्कार नहि, दीर्घ परम्परामे विकसित श्रेणीक्रम अछि। अध्याय कणाद आ प्रशस्तपादक ऐतिहासिक स्तर अलग राखैत अछि। वर्गीकरणक वास्तविक परीक्षा एहि बातमे अछि जे प्रत्येक मानल गेल सत्ता कोन अनुभवगत वा तर्कगत कठिनाई सुलझबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(10.1** कणाद आ वैशेषिकसूत्र**) :** “वैशेषिकसूत्र परम्परागत रूपसँ कणादक नामसँ सम्बद्ध अछि, मुदा ग्रन्थक काल-निर्धारण विवादित अछि। उपलब्ध पाठक दीर्घ सम्पादन-इतिहासक कारण एकर विचारसभकेँ एकहि क्षणक निर्मिति मानब उचित नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

समवाय एकटा असाधारण परीक्षा-क्षेत्र अछि: कपड़ा–तन्तु अथवा द्रव्य–गुणक सम्बन्ध साधारण संयोग किएक नहि? समवाय मानितो ‘समवाय अपन सम्बन्धित वस्तुसँ कोना जुड़ैत अछि’ सवाल उठैत अछि। एतय अनन्त-प्रसङ्गक सम्भावना देखायब शास्त्रक भीतरक बौद्धिक ईमानदारी अछि। अभावक ज्ञानक चर्चा सेहो अनुपस्थितिक प्रमाणक शर्त स्पष्ट करैत अछि: अनुपस्थिति तखन सार्थक जखन उचित खोजमे उपस्थितिक अपेक्षा छल।

मूल पाठक साक्ष्य **(10.5** सामान्य आ विशेष**) :** “सामान्य ओ आधार अछि जाहिसँ अनेक व्यक्तिगत वस्तु एकहि जाति अथवा प्रकारक रूपमे चिन्हल

जाइत अछि। अनेक गायक भीतर ‘गायत्व’, अनेक घटक भीतर ‘घटत्व’ जकाँ उदाहरण परम्परामे देल जाइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

परमाणुवादक तुलना आधुनिक रसायन अथवा भौतिक विज्ञानसँ कएल जा सकैत अछि, मुदा प्रयोगजन्य परमाणु आ अनुमानित शास्त्रीय परमाणु एकहि खोज नहि। अध्याय एहि अतिक्रमणसँ बचैत अछि। दोसर आलोचनात्मक प्रश्न ई अछि जे सात पदार्थकेँ स्वतंत्र मानबाक व्याख्यात्मक आवश्यकता कोना मापी? द्रव्यक गुणसूची स्वयं अनुभवक वर्गीकरण अछि; वर्गक यथार्थता सिद्ध करब वर्गक नाम गिनबासँ पूरा नहि होइत।

मूल पाठक साक्ष्य **(10.9 आत्मा, मन आ ज्ञान) :** “वैशेषिक-न्याय यथार्थवाद बाह्य जगत मात्र नहि, आत्माकेँ सेहो वास्तविक द्रव्य मानैत अछि। मन अत्यन्त सूक्ष्म आ प्रत्येक शरीरक लेल एक मानल जाइत अछि; एक समयमे सीमित मानसिक सम्पर्कक व्याख्या एहि मनद्वारा कएल जाइत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सांख्यक सत्कार्यवाद आ वैशेषिकक आरम्भवादक तुलना अध्याय-दर-अध्याय प्रगतिक सबल सूत्र अछि। न्याय आ वैशेषिक परवर्ती रूपेँ संयुक्त भेला पर सेहो प्रारम्भिक परम्पराक असमान इतिहास रक्षा पबैत अछि। जँ एकहि स्रोत-श्रेणीकेँ वैज्ञानिक सत्य घोषित नहि कएल जाए, तँ वैशेषिक वस्तु-जगतक विश्लेषणक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पद्धति बनैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 10; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 11 : पूर्वमीमांसा

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 11 ‘‘पूर्वमीमांसा’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 11, ‘‘Pūrvamīmāṃsā’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

पूर्वमीमांसाक प्रवेशबिन्दु ‘की अस्तित्वमान अछि’ नहि, ‘कर्तव्यक वैध ज्ञान कोना बनैत अछि’ अछि। धर्म, विधि, निषेध, अर्थवाद आ वाक्यार्थक विचार एकरे प्रमाणित करैत अछि। जँ वैदिक वाक्यसभक परस्पर संघर्ष हो, तखन प्रसंग, प्रयोजन आ भाषिक व्याकरण मात्र पूजनीय पाठक रक्षण नहि, न्यायसंगत निर्णयक उपकरण बनैत अछि। अध्याय एहि अर्थमे भाषा-दर्शन आ क्रियाक नैतिक आधार जोड़ैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(11.1 मीमांसा: जिज्ञासा आ व्याख्या) :** ““मीमांसा”क मूल भाव जाँच, विचार अथवा विवेचन अछि। पूर्वमीमांसाक ऐतिहासिक केन्द्र वैदिक कर्मकाण्डक उचित अर्थ आ अनुप्रयोग रहल, मुदा एहि व्याख्यात्मक कार्यसँ अत्यन्त सूक्ष्म दार्शनिक प्रश्न जन्म लेल।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्वत:प्रामाण्यक समस्या अनुभवक वैधता-अवैधताक स्रोतपर केन्द्रित अछि। कुमारिलक भट्ट-परम्परा आ प्रभाकरक मतक अन्तर रखब आवश्यक अछि, कारण दुनूकेँ एक प्रकारक प्रमाण-मान्यता मानला पर न्यायसँ असल विवाद ढँकि जाइत अछि। अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक विमर्श ज्ञानक ऐसे प्रसंग खोलैत अछि जतय सीधा प्रत्यक्ष अथवा सामान्य अनुमानक सीमा परीक्षण होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(11.3 वेदक अपौरुषेयता) :** “मीमांसक वेदकेँ कोनो मानवीय लेखक अथवा ईश्वरक रचना मानि ओकर अधिकार स्थापित नहि

करैत छथि। परम्परागत मीमांसा वेदकेँ अपौरुषेय मानैत अछि—अर्थात् ओकर प्रामाण्य कोनो ऐतिहासिक व्यक्तिक विश्वसनीयतापर निर्भर नहि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

अपौरुषेय वेदक दाबीकेँ जँ केवल इतिहासातीत घोषणा मानि ली तँ ओ दार्शनिक तर्क-परीक्षासँ बाँचि जाएत; जँ एकरा सामाजिक इतिहासक तथ्य मानि ली तँ अलग प्रकारक त्रुटि होयत। अध्यायक दार्शनिक न्याय यैह अछि जे मूल पक्षक तर्क-संरचना पहिने अपन बलिष्ठ रूपमे प्रस्तुत हो। मुदा अधिकार-आधारित पाठक व्याख्या आधुनिक बहुल समाजमे ककर लेल सार्वजनिक कारण देत, ई प्रश्न खुला अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(11.6** अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि**) :** “अर्थापत्ति एहन स्थिति बुझबैत अछि जतय ज्ञात तथ्यसभक संगति लेल कोनो अतिरिक्त तथ्य मानब आवश्यक बुझाइत अछि। पारम्परिक उदाहरणमे दिनमे नहि खायवला मुदा स्थूल व्यक्तिक स्थिति बुझबाक लेल रातिमे भोजनक कल्पना कएल जाइत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

न्यायक शब्दप्रमाण आ पूर्वमीमांसाक शाब्दिक अधिकारक अन्तर एकटा अत्यन्त उपयोगी अन्तराध्यायिक सूत्र अछि। पहिल प्रमाणक विश्वसनीय वक्ता आ ज्ञानात्मक परिस्थिति पूछैत अछि; दोसर विधिक भाषिक औचित्य आ अपौरुषेयतापर केन्द्रित अछि। समानान्तर दर्शनक दृष्टिसँ व्याख्याक अनुशासन ग्रहण योग्य, मुदा धार्मिक प्रामाण्यक सर्वमान्य दावा अतिरिक्त स्वतन्त्र प्रमाण माँगैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 11; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 12 : वेदान्त

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 12 ‘‘वेदान्त’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 12, ‘‘Vedānta’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

वेदान्तकेँ केवल अद्वैतक पर्याय मानब मूल ऐतिहासिक विवादकेँ नष्ट करब होयत। शंकर, रामानुज आ द्वैत परम्परा ब्रह्म, जीव, जगत आ मुक्तिक सम्बन्धपर परस्पर भिन्न समाधान प्रस्तुत करैत छथि। प्रस्थानत्रयीक एकहि आधारग्रन्थकेँ अनेक पाठ सम्पादित करैत अछि, ताहिसँ व्याख्याक स्वतन्त्रता आ सिद्धान्तक अनुशासन दुनू एकसाथ देखाइत अछि। अध्यायक सबलता विवादक बहुलता सुरक्षित रखब अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(12.1 प्रस्थानत्रयी आ व्याख्याक प्रश्न) :** “वेदान्तीय परम्परासभ उपनिषद, ब्रह्मसूत्र आ भगवद्गीताकेँ विशेष आधारग्रन्थ मानैत छथि। मुदा एकहि पाठसमूहसँ भिन्न दर्शन कोना निकलैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर व्याख्यामे अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अध्यास, अविद्या आ जगतक मिथ्यात्वक चर्चा दू अलग स्तर पर अछि: अनुभूतिक भूल-निर्णय आ अन्तिम तत्त्वमीमांसक अस्तित्व-दावा। मिथ्या शब्दकेँ ‘बिलकुल अस्तित्वहीन’क समान पढ़लासँ अद्वैतक वास्तविक स्थापना ओझर होइत अछि। रामानुजक सम्बन्धात्मक दृष्टि जीव-जगतक वास्तविकता छोड़े बिना परम वास्तविकताक एकता बुझबैत अछि; एही बिन्दुपर अलग निर्णय-परम्पराक न्याय आवश्यक अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (12.5 अविद्या आ बन्धन) : “यदि अन्तिम सत्य एक अछि, तँ भेदक अनुभव किएक? अद्वैतमे अविद्या अथवा अज्ञान एहि समस्याक केन्द्र अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष पूछैत अछि जे जँ जगत मिथ्या, नैतिक दायित्वक आधार कियैक? व्यावहारिक आ पारमार्थिक सत्यमात्रक उल्लेख बिना ओकर सामाजिक प्रयोजन स्पष्ट केने पर्याप्त नहि। जीवन्मुक्तिक व्यवहार, अन्यक दुःखक स्वीकार आ असमान सत्ता-सम्बन्धसँ व्यवहारिक निष्कर्ष कतेक निकलैत अछि से समीक्षाक आवश्यक कसौटी अछि। ग्रन्थ एहि प्रश्नकेँ उठबैत अछि; अन्तिम समाधान स्वतः सिद्ध नहि।

मूल पाठक साक्ष्य (12.9 द्वैत आ भेदक वास्तविकता) : “मध्वक द्वैत ईश्वर, जीव आ जगतक वास्तविक भेदपर बल दैत अछि। एतय मुक्ति अभेदमे विलय नहि, ईश्वरसँ उचित सम्बन्धमे अछि। ई दृष्टि वेदान्त भीतर तत्त्वमीमांसात्मक बहुलताक स्पष्ट प्रमाण अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

पूर्वमीमांसाक कर्मप्रधान विधि आ वेदान्तक आत्मबोधक लक्ष्यक सम्बन्ध इतिहासमे बहुत जटिल अछि। हुनका ‘कर्म बनाम ज्ञान’क सरल वैर बनाबयक बदला शास्त्रार्थक विस्तृत पृष्ठभूमिमे राखब चाही। बादमे भामतीक मूल अनुवाद पढ़ैत समय एहि अध्यायक अध्यास-चर्चा उपयोगी तुलना देत, मुदा समानान्तर दर्शनक संक्षिप्त प्रस्तुति मूल टीकाक स्थान नहि लऽ सकैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 12; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 13 : बौद्ध दर्शन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 13 ‘‘बौद्ध दर्शन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 13, ‘‘Buddhist Philosophy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

बौद्ध अध्याय दुःख, अनित्यता, अनात्म आ प्रतीत्यसमुत्पादकेँ एक साझा समस्या-क्षेत्रमे रखैत अछि, मुदा थेरवाद, मध्यमक, योगाचार आ प्रमाणमीमांसाक अलग परम्परा एकहि सिद्धान्त नहि। शून्यताकेँ सर्वनाशवाद बनायब आ अनात्मकेँ नैतिक उत्तरदायित्वक निषेध मानब दुनू सरलीकरण छथि। लेखकक भिन्न धारा चिन्हबाक आग्रह एहि अध्यायक मूल शास्त्रीय सावधानी अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(13.1 दुःखसँ दर्शनक आरम्भ) :** “बौद्ध चिन्तनक एक विशिष्टता ई अछि जे दर्शन अस्तित्वगत समस्यासँ जुड़ल अछि। दुःख केवल अमूर्त पहेली नहि; जन्म, जरा, रोग, मृत्यु, वियोग, असन्तोष आ आसक्तिक अनुभवसँ दर्शन आरम्भ होइत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रतीत्यसमुत्पादक सम्बन्धवादक भाषा आ मध्यमकक स्वभाव-सिद्धान्तक आलोचना बीच अन्तर देखब आवश्यक अछि। द्विसत्यक प्रयोगमे व्यवहारगत कथन आ परम विश्लेषणक स्तर अलग रहैत अछि। दिङ्नाग–धर्मकीर्तिक प्रत्यक्ष-अनुमान चर्चासँ स्पष्ट होइत अछि जे बौद्ध दर्शन केवल करुणाक नैतिक उपदेश नहि; सूक्ष्म ज्ञानमीमांसक परम्परा सेहो अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(13.5 मध्यमक आ शून्यता) :** “नागार्जुनसँ सम्बद्ध मध्यमक परम्परा स्वभाव—स्वतन्त्र, स्वयंस्थित अन्तर्निहित प्रकृति—पर कठोर आलोचना करैत अछि। शून्यता “किछु नहि अछि”क नास्तिक्यवादी घोषणा नहि; वस्तुसभ स्वभावतः स्वतन्त्र नहि, सम्बन्ध आ निर्भरतामे अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

अनात्मक आपत्ति अत्यन्त गम्भीर अछि: स्थायी आत्मा बिना स्मृति, कर्मफल, नैतिक कर्ता आ मुक्ति कोन आधारपर जुड़त? अध्याय सम्भावित उत्तर रूपेँ कारणात्मक सततता पर विचार करैत अछि, मुदा एहि सततताक नैतिक पर्याप्तता अधिक विवेचन चाहैत अछि। तुलनामे न्यायीय आत्मद्रव्य आ सांख्यक शुद्ध पुरुष दुनू सँ मतभेद रहि जाइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(13.9 करुणा आ प्रज्ञा) :** “विशेषत: महायान परम्परामे करुणा आ प्रज्ञाक संयुक्त आदर्श विकसित होइत अछि। केवल भावुक करुणा गलत उपाय चुनि सकैत अछि; केवल विश्लेषणात्मक प्रज्ञा मानवीय दु:खसँ कटि सकैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

एहि ग्रन्थक समानान्तर पद्धति बौद्ध मतकेँ ‘भारतीय दर्शनक अपवाद’ नहि, भारतीय विवादक पूर्ण सह-निर्माता मानैत अछि। वेदान्त आ न्यायसँ वास्तविक प्रतिपक्ष बाँचि रहिते बौद्ध तर्कक स्वतन्त्र प्रामाण्य आ पद्धति प्रस्तुत होइत अछि। एहि प्रकार धार्मिक नामावलीक बदला ज्ञानमीमांसक तर्करेखापर तुलनाक अवसर बनैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 13; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरश: लेल गेल अछि।

अध्याय 14 : जैन दर्शन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 14 ‘‘जैन दर्शन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 14, ‘‘Jain Philosophy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

जैन दर्शनक अनेकान्तवादकेँ ‘सभ मत समान सत्य’क सुविधाजनक नारा बनायब अध्यायक अनुसार भ्रामक अछि। जीव–अजीव, कर्मबन्धन, अहिंसा, नयवाद आ स्याद्वाद अलग काम करैत छथि। नय एकटा वस्तुक आंशिक विवेचनक स्तर बतबैत अछि; सप्तभङ्गी शर्तसापेक्ष विधानक रूप-विन्यास दैत अछि। एकर महत्त्व दृष्टिकोणक शर्त खुलासा करब अछि, मनमाना निर्णय वैध करब नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(14.1 जीव आ अजीव) :** “जैन तत्त्वमीमांसामे जीव चेतन तत्त्व अछि आ अजीव गैर-चेतन तत्त्वसभक क्षेत्र। जीव मूलतः ज्ञान आ चेतनाक क्षमता रखैत अछि, मुदा कर्मक बन्धन ओकर अभिव्यक्तिकेँ सीमित करैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अहिंसाक सम्बन्ध केवल प्राणिहत्याक परिहार नहि, ज्ञानात्मक विनम्रतासँ सेहो स्थापित कएल गेल अछि। जे अपन वाक्यकेँ पूर्ण, निरपेक्ष, एकमात्र सत्य मानैत अछि, से प्रतिपक्षपर वैचारिक हिंसा करबाक जोखिम बढ़बैत अछि। तथापि नैतिक अहिंसा आ तर्कगत अनिश्चितताक बीच आवश्यक सम्बन्ध अलग सिद्धि माँगैत अछि; जे सत्य अत्यन्त स्पष्ट हो, ओकर समर्थन स्वतः हिंसा नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(14.5 नयवाद) :** ““नय” वस्तुकेँ देखबाक आंशिक दृष्टि अथवा विश्लेषण-पद्धति अछि। प्रत्येक नय किछु पक्ष उजागर करैत अछि,

किछु छोड़ैत अछि। समस्या तखन होइत अछि जखन आंशिक दृष्टि अपनाकेँ सम्पूर्ण घोषित करैत अछि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष अनेकान्तवादकेँ आत्मसन्दर्भक कसौटीपर राखैत अछि: 'सभ दाबी सापेक्ष' स्वयं कतेक सापेक्ष अछि? जँ प्रत्येक कथन बिना शर्त अंशतः सत्य मानल जाए, तँ प्रत्यक्ष विरोध, असत्य आ अन्यायपर निर्णय कोना सम्भव? स्याद्वादक शर्त-विधान यैह कठिनाई सुलझाबय चाहैत अछि; ओकरा केवल सहिष्णुताक नारा मानला पर दार्शनिक परिश्रम अदृश्य भऽ जाएत।

मूल पाठक साक्ष्य **(14.9** जीव आ अजीवक सम्बन्ध**) :** "जैन तत्त्वमीमांसा जीवकेँ चेतन द्रव्य आ अजीवकेँ अन्य द्रव्य-श्रेणी रूपमे भेद करैत अछि। कर्म केवल नैतिक अभिलेख नहि, जीवसँ बन्हनिहार सूक्ष्म पदार्थ रूपमे व्याख्यायित होइत अछि। एकरा साधारण रूपक मानब शास्त्रीय मत बदलि देत।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

बौद्ध अनात्म आ जैन जीवक तत्त्वमीमांसा भिन्न रहितहुँ नैतिक संयम आ दुःख घटेबाक लक्ष्यक तुलनीय क्षेत्र देखाइत अछि। समानान्तर दर्शन एहि आंशिक समानताकेँ सिद्धान्तगत समरूपता नहि बनबैत। प्रतिपक्षक तर्क-जालकेँ सुनबाक आग्रह एतय शास्त्रार्थक सार्वजनिक नीति बनि सकैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 14; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 15 : लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 15 ‘‘लोकायत आ भौतिकवादी प्रश्न’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 15, ‘‘Lokāyata and Materialist Questions’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

लोकायतक समीक्षामे पहिल समस्या ओकर शास्त्रीय मत नहि, स्रोतक अनुपस्थिति अछि। जे मत मुख्यतः विरोधी ग्रन्थक उद्धरणसँ परिचित होइत अछि, ओकरा स्वयं प्रमाणित मौलिक वचन मानि नहि लेबाक चाही। अध्याय एहि स्रोत-संकटकेँ केन्द्रीय दार्शनिक प्रश्न बनबैत अछि। भारतीय बौद्धिक इतिहासमे प्रत्यक्ष, देह आ इहलौकिक सुखक विचारक उपस्थिति स्वीकारब सम्भव अछि, मुदा निर्दिष्ट श्लोकक प्रामाणिकता समान प्रमाणित नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(15.1 स्रोतक समस्या) :** “जखन कोनो परम्पराक अपन मूल साहित्य नष्ट वा अनुपलब्ध हो आ ओकर विचार मुख्यतः विरोधीक उद्धरणसँ ज्ञात हो, तखन इतिहासकारक जिम्मेवारी बढ़ि जाइत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रत्यक्षक प्रधानता अनुमानक पूर्ण निराकरण करैत अछि की केवल अदृश्य सत्ता-विषयक अनुमानपर प्रश्न उठबैत अछि—एहि भेदक परीक्षा जरूरी अछि। लोकायत सम्बन्धी परवर्ती आरोप अनेक बेर अतिरंजित सुखवाद प्रस्तुत करैत छथि। भोगक नैतिक मूल्यकेँ शरीरक अस्तित्व-स्वीकारसँ स्वतः निकालब अनुचित; व्यक्तिगत सुख, दीर्घकालीन हित आ अन्यक पीड़ाक प्रश्न अलग अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(15.5 सुखवादक प्रश्न) :** “चार्वाकक लोकप्रिय चित्रण “ऋण कऽ घी पिउ” प्रकारक उक्ति द्वारा असंयमित सुखवादक रूपमे कएल

जाइत अछि। एहि प्रकारक उद्धरणक ऐतिहासिक स्थिति आ प्रतिनिधित्व सावधानीसँ जाँचबाक चाही।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष जे लोकायत सम्भवतः प्रतिपक्षक कल्पित पात्र अछि, तकर उत्तरकेँ आन स्रोतक प्रमाण चाही। ‘हाशियापर पड़ल’ थिक एहि कारण हर कथन प्रामाणिक मानल जाए—एहन नूतन पक्षपात ग्रन्थक अपन सिद्धान्तकेँ विफल करत। लेखकक स्रोतविहीन रिक्तता कल्पनासँ नहि भरबाक सावधानी एहि खण्डक अत्यन्त मूल्यवान सैद्धान्तिक उपलब्धि अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(15.9 प्रत्यक्षवादक शक्ति) :** “लोकायतसँ सम्बद्ध प्रत्यक्ष-प्राधान्य अनुमान, शास्त्रीय गवाही आ अदृश्य लोकक दाबीपर कठोर प्रश्न उठबैत अछि। जे देखल नहि गेल ओकरा मानबाक कारण स्पष्ट हो—ई माँग बौद्धिक सत्ता चुनौती दैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

न्यायीय अनुमान, मीमांसाक शब्दाधिकार आ लोकायतक प्रत्यक्ष-मुखी आलोचना एक-दोसरक बौद्धिक प्रतिपक्ष बनैत अछि। एहि त्रिकोणसँ भारतीय दर्शनक वास्तविक बहुवचनता बनैत अछि। समानान्तर इतिहासक अर्थ हाशियाक महिमा-घोषणा नहि, मुख्य प्रतिपक्षसँ तुलनाक सममित कठोरता अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 15; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 16 : भाषा, शब्द आ अर्थ

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 16 ‘‘भाषा, शब्द आ अर्थ’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 16, ‘‘Language, Word, and Meaning’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

भाषा-दर्शनक मूल प्रतिज्ञा ई नहि जे शब्द सोचक बाहरी पोशाक अछि; शब्दार्थ, वाक्यार्थ आ सामाजिक मान्यता स्वयं ज्ञानक निर्मितिमे भाग लैत छथि। अभिहितान्वय आ अन्विताभिधानक विवाद शब्द-अर्थक जोड़ मात्र नहि, सम्पूर्ण वाक्यक अर्थग्रहणक क्रमपर आधारित अछि। अध्याय भारतीय व्याकरण, मीमांसा, न्याय आ बौद्ध मतक विविधता रखैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(16.1** वाक् सँ दार्शनिक भाषा धरि**) :** “वैदिक साहित्यमे वाक् केवल साधारण बोलचाल नहि, एक गम्भीर सांस्कृतिक-दार्शनिक शक्ति रूपमे उपस्थित अछि। परवर्ती व्याकरण, मीमांसा, न्याय, बौद्ध दर्शन आ काव्यशास्त्र भाषा सम्बन्धी प्रश्नकेँ अलग-अलग लक्ष्यसँ विकसित करैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्फोट-सिद्धान्त आ बौद्ध अपोहवादक बीच तात्त्विक अन्तर परिशुद्ध रीतिसँ देखब आवश्यक अछि। पहिल भाषिक एकताक स्तर उठबैत अछि; दोसर वर्ग-अर्थक निषेधात्मक निर्माण विश्लेषित करैत अछि। वाक्यार्थक अपेक्षा, योग्यता आ आसत्तिक जाँच केवल शास्त्रीय स्मृति नहि, अनुवादक व्यवहारिक कसौटी सेहो बनैत अछि। शब्दप्रमाणमे वक्ताक विश्वसनीयता आ प्रसंग भाषा-सत्ताक विमर्शसँ जुड़ैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(16.5 शब्द-प्रमाण आ विश्वसनीयता) :** “मनुष्यक अधिकांश ज्ञान भाषिक साक्ष्यसँ अबैत अछि। हम सभ वैज्ञानिक प्रयोग स्वयं नहि करैत छी, सभ ऐतिहासिक अभिलेख नहि पढ़ैत छी, सभ स्थान नहि देखैत छी। तँ शाब्दिक ज्ञानक औचित्य दार्शनिक प्रश्न अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

अध्याय ‘अनुवाद स्वयं दर्शन’ प्रतिपादित करैत अछि। यैह दाबी उपलब्ध द्विभाषिक मूल संस्करणक सूक्ष्म परीक्षण आमन्त्रित करैत अछि: प्रमाण, धर्म, आत्मन् आ सत्ता-जकाँ शब्द एकहि अंग्रेजी प्रतिशब्दसँ सभ प्रसंगमे कतेक सुरक्षित रहत? पहिल छओ अध्यायक पूर्वपरीक्षण अर्थभ्रंशक उदाहरण चिन्हने अछि; एहि सिद्धान्तक आधारपर शेष अनुवाद स्वतन्त्र सम्पादकीय परीक्षण चाहैत अछि, स्वयंसिद्ध समतुल्यता नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(16.10 डिजिटल भाषा आ कृत्रिम पुनरुत्पादन) :** “डिजिटल युगमे भाषिक कथनक उत्पादन अत्यन्त सहज भेल अछि। एकहि कथन हजार बेर प्रतिलिपि भऽ सकैत अछि; मशीन-सृजित पाठ मनुष्यक लेखन-जकाँ देखाइत अछि; उद्धरण स्रोतसँ काटि प्रसारित होइत अछि। एतय “बहुत जगह लिखल अछि” स्वतंत्र प्रमाण नहि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

डिजिटल भाषा आ कृत्रिम पुनरुत्पादनक प्रश्न एहि अध्यायकेँ वर्तमान ज्ञान-व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। मुदा भाषिक व्यवहार बदलितो यथार्थक साक्ष्य-प्रश्न लुप्त नहि होइत। न्यायीय शब्दप्रमाण, जैन सापेक्ष विधान, बौद्ध अपोह आ मैथिलीक देशज अर्थ-संसार एक संग पढ़लासँ भाषा केवल व्याकरण नहि, सार्वजनिक ज्ञान-अधिकारक क्षेत्र सिद्ध होइत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 16; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 7-16 : तुलनात्मक निष्कर्ष

एहि दश अध्यायमे सांख्यक पुरुष-प्रकृति भेदसँ आरम्भ कऽ योगक चित्त-अनुशासन, न्यायक प्रमाण-विमर्श, वैशेषिकक सत्ता-वर्गीकरण, मीमांसाक विधि, वेदान्तक ब्रह्म-जगत सम्बन्ध, बौद्धक अनात्म, जैनक अनेकान्त, लोकायतक स्रोत-संकट आ भाषा-दर्शनक अर्थ-समीक्षा धरि क्रमशः दृष्टि बढ़ैत अछि। एहि समूहमध्ये सर्वाधिक विचारणीय प्रतिवाद ई अछि जे शास्त्रक आन्तरिक संकल्पना आधुनिक विज्ञानक शब्दसँ सिद्ध भऽ गेल मानि नहि लेल जाए। उपखण्डसभ स्रोत-विशिष्ट रूपसँ ई सावधानी अनेक स्थानपर दोहरबैत छथि।

अध्याय 17 : विदेह: प्रश्नक भूगोल

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 17 ‘‘विदेह: प्रश्नक भूगोल’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 17, ‘‘Videha: A Geography of Questioning’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

‘विदेह’, ‘मिथिला’ आ आधुनिक बिहार–नेपालक प्रशासनिक क्षेत्र एकहि ऐतिहासिक वस्तुक तीन नाम नहि। अध्याय भूगोलकेँ पाठ-स्मृति, राजनीतिक नियन्त्रण आ सांस्कृतिक प्रवाहक अलग स्तरमे पढ़ैत अछि। प्राचीन जनक-विषयक उपनिषदिक प्रसंग आधुनिक भाषिक भूगोलक प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि। ताहि भेदक स्वीकार सँ क्षेत्रीय विमर्श अनावश्यक गौरवक आख्यानसँ बचैत अछि; स्थानीय इतिहासक वास्तविक बौद्धिक महत्त्व घटैत नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(17.1** विदेहक पाठ-स्मृति**) :** “बृहदारण्यक उपनिषदमे विदेहक जनकक दरबार ब्रह्मविद्या, वाद-विवाद आ प्रश्नोत्तरक स्थल रूपमे प्रसिद्ध अछि। याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी तथा अन्य विद्वान पात्रसभक संवाद एहि साहित्यिक-दर्शनिक संसारक केन्द्र छथि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

‘प्रश्नक भूगोल’ एकटा इतिहासलेखनक रूपक अछि: प्रश्न ककरा पूछबाक अधिकार छल, संस्थागत संरक्षण के पेलक आ कोन विवाद स्मृतिमे बचल, एहि आधारपर भूगोल बनैत अछि। अध्याय विदेहक राजकीय-सांस्कृतिक सन्दर्भ आ परवर्ती मिथिलाक न्याय-परम्पराक बीच सम्बन्ध खोजैत अछि। मुदा सन्दर्भक समानता ऐतिहासिक अनवरत संस्थागत परम्परा स्वत: सिद्ध नहि करैत; मध्यवर्ती स्रोतसँ सेतु बनय चाही।

मूल पाठक साक्ष्य (17.5 मिथिला आ न्यायपरम्परा) : “परवर्ती कालमे मिथिला न्याय, मीमांसा आ विशेषत: नव्य-न्यायक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनल। गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि नव्य-न्यायक नूतन भाषिक-तार्किक चरणक प्रस्थानबिन्दु मानल जाइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

जनक उपाधि छल की व्यक्ति, प्रश्न-सभामे के सभ उपस्थित छलाह, स्त्री आ अनाधिकारिक समूहक पहुँच कतेक छल—एहन कठिन प्रश्न अध्याय स्वयं उठबैत अछि। ‘जनक-सभा’क नाम मात्र सार्वजनिक समता सिद्ध नहि करैत। विदेहक क्षेत्रफल आ राजनीतिक कालक्रमक विषयमे कालभेदक अनुसंधान आवश्यक; सांस्कृतिक स्मृतिमात्र सीमाङ्कनक पूर्ण प्रमाण नहि। एहि सीमा स्वीकारब लेखकक आत्मसमीक्षात्मक शक्ति अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (17.9 विदेहक नाम आ ऐतिहासिक स्तर) : “विदेह वैदिक-उपनिषदिक पाठ, बादक आख्यान आ आधुनिक क्षेत्रीय स्मृतिमे अलग अर्थक संग उपस्थित हो सकैत अछि। एक स्रोतक भूगोल दोसर कालपर सीधा आरोपित नहि कएल जाए।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

पहिल सोलह अध्याय विचार-प्रणालिसभक वैश्विक इतिहास प्रस्तावित करैत छल; सत्रहम अध्याय ओहि पद्धतिक क्षेत्रीय परीक्षा आरम्भ करैत अछि। मैथिलीक बौद्धिक संस्कारक महत्त्व ओतबे सार्थक जखन मिथिला सम्बन्धी दावो ओही प्रमाणभार स्वीकारय जे अन्य इतिहासपर लगाओल जाए। ई सममिति समानान्तर इतिहासकेँ शास्त्रीय मानक दैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 17; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरश: लेल गेल अछि।

अध्याय 18 : याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 18 ‘‘याज्ञवल्क्य, गार्गी आ मैत्रेयी’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 18, ‘‘Yājñavalkya, Gārgī, and Maitreyī’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

याज्ञवल्क्यक प्रसिद्ध वाक्य मात्र उद्धृत करैत गार्गी आ मैत्रेयीकेँ सहायक पात्र मानल जाए तँ बृहदारण्यकक संवादात्मक दर्शन अधूरा रहि जाइत अछि। मैत्रेयीक धन–अमरत्व प्रश्न आ गार्गीक जगतक अन्तिम आधारक प्रश्न संवादक गति निर्धारित करैत अछि। अध्याय एहि अर्थमे वाचक-अधिकारक पुनर्स्थापन करैत अछि; महिला पात्रकेँ प्रशंसात्मक प्रतीक मात्र नहि बनबैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(18.1** संवाद दर्शनक रूप**) :** “सूत्र वा सिद्धान्तक विपरीत संवादमे विचार प्रश्न, उत्तर, आपत्ति, मौन, पुनःप्रश्न आ प्रसंगक माध्यमसँ विकसित होइत अछि। बृहदारण्यकक संवाद दर्शबैत अछि जे दर्शन केवल तैयार उत्तर नहि; प्रश्नक संरचना स्वयं ज्ञानक दिशा बदलि सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मैत्रेयी संवादमे धन आ प्रेमक सम्बन्ध आत्मज्ञानक उद्देश्यसँ जुड़ैत अछि। गार्गीक क्रमिक प्रश्न जगतक निर्भरता आ अक्षरक अन्तिम स्थापनापर पहुँचैत अछि। ‘नेति नेति’क निषेध केवल नकारात्मक मौन नहि, आत्मपर आरोपित सीमित वर्णन हटेबाक विधि बनैत अछि। मुदा यी अर्थ प्राचीन संवादक विभिन्न वाक्य-स्थितिकेँ एकटा निश्चित आधुनिक नारीवादी सिद्धान्तक प्रत्यक्ष पूर्वपीठिका नहि बनबैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(18.5** अक्षरक प्रश्न**) :** “गार्गी-संवादक उत्तर अन्ततः अक्षर—अविनाशी—दिस बढ़ैत अछि। आधुनिक पाठक एहि पदकेँ तुरन्त “ईश्वर” वा “पदार्थ” वा “चेतना”क आधुनिक श्रेणीमे नहि ठेलथि। उपनिषदिक

अक्षर अपन पाठ-सन्दर्भमे अंतिम, अपरिवर्तनशील आधारक दार्शनिक संकेत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

गार्गीक प्रश्नक स्थान स्वीकारला सँ प्राचीन समाज समग्र रूपसँ लैंगिक समानतामूलक छल—एहन निष्कर्ष नहि निकलैत। के उपस्थित छल, के बोलि सकैत छल, सीमाक सङ्केत कोन छल, एहि सभक साक्ष्य अलग चाही। आ ई सेहो जे उपनिषदक संवाद साहित्यिक रूपमे संरक्षित अछि, ताहि कारण प्रत्येक कथनकेँ दरबारक शब्दशः अभिलेख मानब सावधान इतिहास-पद्धतिक विरुद्ध होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(18.10 आधुनिक अर्थ) :** “गार्गी, मैत्रेयी आ याज्ञवल्क्यक संवाद आधुनिक जीवनमे दूहरा उपयोग रखैत अछि। पहिल, प्रश्नक गुणवत्ता उत्तरक गुणवत्ता निर्धारित करैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

छठम अध्यायक उपनिषद-विमर्श आ सत्रहम अध्यायक विदेह-भूगोल आब अठारहम अध्यायमे ठोस पाठद्वारा जोड़ाइत अछि। समानान्तर दर्शनक वास्तविक नूतनता स्थानिक गौरवमे नहि, शास्त्रीय संवादमे उपेक्षित प्रश्नकर्ताक तर्कगत स्वायत्तता जाँचबामे अछि। ग्रन्थक उपयोगी निष्कर्ष इहे जे संवादक अङ्ग बनेनिहार सभकेँ दार्शनिक कर्ता मानबाक कसौटी एकसमान रहय।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 18; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 19 : न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 19 ‘‘न्याय-वैशेषिक आ मिथिलाक तार्किक संस्कार’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 19, ‘‘Nyāya–Vaiśeṣika and Mithila’s Logical Tradition’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

मिथिलाक न्यायीय संस्कारक इतिहास केवल उदयन, वाचस्पति अथवा गङ्गेशक नामक अनुक्रम नहि। दाबी–परिभाषा–प्रतिपक्ष–हेत्वाभास–निर्णयक अभ्यासकेँ सामाजिक बौद्धिक संस्थाक रूपमे चिन्हबाक प्रयास एहि अध्यायमे अछि। न्याय आ वैशेषिकक परवर्ती सम्मिलनक सन्दर्भमे लेखक ई मानैत छथि जे प्रमाण-विश्लेषण आ सत्ता-वर्गीकरणक आदिकालीन बल अलग-अलग छल। अतः संयुक्त परम्पराक प्रसिद्धि पहिनुक भिन्नताकेँ नहि मिटा सकैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(19.1 न्याय-वैशेषिकक संगम) :** “प्रारम्भिक न्यायक केन्द्र प्रमाण, तर्क आ वाद; वैशेषिकक केन्द्र पदार्थ-वर्गीकरण आ तत्त्वमीमांसा। कालक्रमे दुनू परम्पराक घनिष्ठ संगम भेल।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अवच्छेदक, सम्बन्ध, अभाव आ व्याप्तिक निरूपणक कठोरता ज्ञानात्मक जिम्मेवारीक मूल्यवान साधन अछि। मुदा तकनीकी परिभाषाक सार्वभौम उपयोगक दाबी कएल जाए तँ सामान्य जीवनक साक्ष्य, मौखिक गवाही आ लोकज्ञानक विषय कतेक सहजतासँ प्रवेश पबैत अछि? अध्याय संस्थागत प्रतिष्ठा, शास्त्रार्थ आ परीक्षा-परम्पराक उल्लेखद्वारा जटिलताक संकेत दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(19.5 प्रमाणक भार) :** “न्यायीय बहसमे दाबी करयवला पक्षक कारण प्रस्तुत करब आवश्यक। हेतु पक्षमे उपस्थित, अनुकूल उदाहरणमे

संगत आ प्रतिकूल उदाहरणमे अनुपस्थित हो—एहि प्रकारक शर्त तर्कक अनुशासन बनबैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘शास्त्रार्थ’ जँ केवल तर्कक न्यायपूर्ण प्रतियोगिता होइत तँ जाति, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, शिक्षा आ संरक्षणक असमानताक प्रश्न शेष नहि रहित। वास्तविक संस्थागत पहुँचक इतिहास जाँचे बिना तर्कशुद्धताक प्रशंसा सामाजिक समावेशनक प्रमाण नहि। एकर उलट, संस्थागत सीमाक कारण बौद्धिक पद्धतिक प्रामाण्य स्वतः खण्डितो नहि। दुनू प्रश्न अलग प्रमाण माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(19.10** आधुनिक नागरिक प्रयोग**) :** “न्यायीय अनुशासनक आधुनिक रूप पाँच क्षेत्रमा विशेष उपयोगी अछि: न्यायालयमे दाबी-साक्ष्य; पत्रकारितामे स्रोत-पुष्टि; विज्ञानमे कारणात्मक अनुमान; इतिहासमे स्रोत-समीक्षा; लोकतन्त्रमे प्रतिपक्षक सबल रूप प्रस्तुत करब।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

न्यायक अध्याय ९ आ वैशेषिकक अध्याय १० सँ एहि अध्यायक सजीव सम्बद्धता अछि। पहिनुका पाठ सिद्धान्तक परिचय दैत छल, आब मिथिलाक संस्थागत इतिहासमे ओकर प्रसारक प्रश्न उठैत अछि। स्थानीयताकेँ संकीर्ण क्षेत्रीय दावा नहि बनायब—ई पद्धतिक लक्ष्य तबे विश्वसनीय होयत जखन पक्षधरता आ आलोचना दुनू लेल समवर्ती प्रमाण-कसौटी लागू रहय।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 19; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 20 : उदयनाचार्य

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 20 ‘‘उदयनाचार्य’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 20, ‘‘Udayanācārya’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

उदयनाचार्यक समीक्षा आत्मतत्त्वविवेक आ न्यायकुसुमाञ्जलिक दर्शन-सम्बन्धी तर्ककेँ एउटहि प्रश्न नहि बनबैत। आत्माक स्थायित्व, क्षणिकतावादक आलोचना, ईश्वरक हेतु आ कारणता सम्बन्धी विचारमे अलग तर्क-विन्यास अछि। अध्याय एहि भेदकेँ सम्बद्ध रखैत अछि, पर धार्मिक निष्कर्षक पक्षधरता मात्र हुनकर महत्त्वक आधार नहि मानैत। दार्शनिक महत्त्व प्रतिपक्षक बलिष्ठ प्रस्तुति आ तर्कगत उत्तरमे अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(20.1 ऐतिहासिक स्थान) :** “उदयनकेँ सामान्यतः दसम–एगारहम शताब्दीक आसपास राखल जाइत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

क्षणिकवाद-विरोधक केन्द्र स्मृति आ प्रत्यभिज्ञाक सम्भावना अछि। व्यक्ति जँ प्रत्येक क्षण पूर्णतः बदलि जाइत अछि, तँ ‘हम पहिने ओ अनुभव केने छलहुँ’क ज्ञान कोन आधारपर बनैत अछि? विरोधी बौद्ध पक्ष कारणात्मक सततितासँ प्रत्युत्तर दे सकैत अछि। ई बहसकेँ स्थायी आत्माक जीत घोषित करबाक बदला, स्मृतिक ज्ञानगत शर्तक विवाद मानब अधिक न्यायसंगत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(20.6 ईश्वर-सिद्धिः न्यायकुसुमाञ्जलि) :** “न्यायकुसुमाञ्जलिमे उदयन ईश्वरक अस्तित्वक पक्षमे अनेक न्यायीय अनुमान विकसित करैत छथि। कार्य-जगतक कारण, परमाणु आ अदृष्टक संयोजन, भाषिक व्यवस्था, वेदक प्रामाण्य आदि विविध आधारसँ ईश्वर-सिद्धिक प्रयास भेटैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

ईश्वरसिद्धिमे जगतक कार्यता, व्यवस्था, कारणता अथवा वेदक प्रमाणक चर्चा भिन्न-भिन्न अनुमानक रूप अछि। कोनो मानल गेल हेतु सिद्ध करबाक बादो ओकरासँ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वकल्याणकारी ईश्वरक सम्पूर्ण गुणस्वरूप निकलैत अछि की नहि, अलग परीक्षणक विषय अछि। आधुनिक पाठक लेल तर्करचनाक मूल्य आ निष्कर्षक प्रामाण्यक मूल्य एक नहि—एहि दोसर स्तरपर अध्याय विस्तृत मूल पाठक दिशामे संकेत दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(20.11** उदयनसँ गङ्गेश धरि**) :** “गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि नव्य-न्यायक नूतन चरण आरम्भ करैत अछि, मुदा शून्यसँ नहि। उदयन आ पूर्ववर्ती न्यायीय परम्परा द्वारा निर्मित समस्या-संसार—प्रमाण, अनुमान, व्याप्ति, आत्मा, ईश्वर, पदार्थ, सम्बन्ध—गङ्गेशक पृष्ठभूमि अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

एहि परियोजनामे आत्मतत्त्वविवेक आ न्यायकुसुमाञ्जलिक मूल द्विभाषिक DOCX अलग सँ उपलब्ध अछि; तथापि वर्तमान समीक्षा केवल समानान्तर दर्शनक एहि अध्यायकेँ आधार बनबैत अछि। भविष्यक तीक्ष्ण तुलना तखन करब उचित होयत जखन ओ मूल ग्रन्थसभक पृथक अध्ययन शुरू हो। लेखक-आचार्य आ अनुवादक-समीक्षकक भूमिकामे ई भेद ग्रन्थगत विश्वसनीयता बचबैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 20; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 21 : वाचस्पति मिश्र

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 21 ‘‘वाचस्पति मिश्र’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 21, ‘‘Vācaspati Miśra’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

वाचस्पति मिश्रक ‘सर्वतन्त्रस्वतन्त्र’ विशेषणक दार्शनिक अर्थ अध्याय व्याख्याक बहुशास्त्रीय अनुशासनमे खोजैत अछि। सांख्य, योग आ अद्वैत सम्बन्धी भाष्य-परम्परामे काज करब एकर अर्थ नहि जे सभ विद्यालयक मत एक भऽ गेल। उलटे, कोनो अन्य मतक शब्दप्रयोग आ विवादक नियम ठीक बुझि ओकर भीतर काम करबाक क्षमता बहुशास्त्रीयता अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(21.1** बहुशास्त्रीयता: मतान्धताक विरुद्ध पद्धति**) :** “कोनो एक दर्शन-पद्धतिक भीतर रहि कऽ दोसर परम्पराकेँ केवल विरोधी रूपमे देखब सहज अछि। वाचस्पति मिश्रक बौद्धिक संसार एहि सरलताकेँ तोड़ैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

भाष्य आ टीकामे मौलिकता केवल नव मत स्थापनासँ उत्पन्न नहि होइत; पूर्ववर्ती वाक्यक अनिर्णीत सम्बन्ध खोलब, अस्पष्ट आपत्ति स्पष्ट करब आ प्रतिवाद व्यवस्थित करब सेहो रचनात्मक दार्शनिक काज अछि। तत्त्ववैशारदीक योग-सम्बन्ध आ भामतीक अद्वैत-सम्बन्ध एहि भिन्न क्षेत्रक उदाहरण छथि। मुदा ओकरा एकहि अघोषित सार्वत्रिक ‘वाचस्पति-दर्शन’ बनायब अनुचित।

मूल पाठक साक्ष्य **(21.4** समानान्तर दर्शनक शिक्षा**) :** “समानान्तर दर्शन वाचस्पति मिश्रसँ एकटा महत्त्वपूर्ण पद्धति ग्रहण करैत अछि—अपन मतक सत्यता सिद्ध करबाक पहिने आन मतकेँ ओकर सबल रूपमे बुझू।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

परम्पराक अधिकार आ टीकाकारक आलोचनात्मक स्वतन्त्रता बीच तनाव रहल अछि। व्याख्याकार कोनो शास्त्रक व्याकरणक भीतर रहि ओकर कठिनाइ खुलासा करैत छथि, मुदा कतेक दूर धरि मूल मतपर सन्देह व्यक्त कऽ सकैत छथि? एहि प्रश्नक समाधान हरेक ग्रन्थक ठोस पाठ चाहैत अछि।

‘सर्वतन्त्रस्वतन्त्र’ कहल मात्र स्वतन्त्र आलोचना ऐतिहासिक रूपसँ सिद्ध नहि करैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(21.7 भाष्य, टीका आ मौलिकताक सम्बन्ध) :**

“आधुनिक पाठक प्रायः मौलिक ग्रन्थकेँ प्रधान आ टीका-भाष्यकेँ दोसर दर्जाक लेखन मानि लैत अछि। भारतीय शास्त्रीय परम्परामे ई विभाजन अपर्याप्त अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

एहि अध्यायक अन्तर्सम्बन्ध योगक अध्याय ८, सांख्यक अध्याय ७ आ वेदान्तक अध्याय १२ सँ बनैत अछि। मूल भामतीक समाविष्ट अनुवादक अवसर पर वाचस्पतिक तर्कसँ प्रत्यक्ष मिलान आवश्यक रहत। समानान्तर पद्धतिक मूल उपलब्धि ई अछि जे टीका-परम्पराकेँ विचारक जीवित संस्था मानल गेल, ग्रन्थसूचीक केवल व्युत्पन्न सामग्री नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 21; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 22 : गङ्गेश उपाध्याय

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 22 ‘‘गङ्गेश उपाध्याय’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 22, ‘‘Gaṅgeśa Upādhyāya’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिक केन्द्रीय बौद्धिक क्रान्ति प्रमाणक साधनपर अत्यन्त सूक्ष्म प्रश्न उठायब अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक चारि क्षेत्र एहि ग्रन्थमे पनपैत अछि। अध्याय वस्तु-ज्ञान-सम्बन्धक भाषा विकसित करबाक प्रक्रिया नव्य-न्यायक दिशा मानैत अछि। एकरा आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कक पूर्ण समरूप घोषित करब लेखक स्वयं निषिद्ध ठहरबैत छथि।

मूल पाठक साक्ष्य **(22.1 तत्त्वचिन्तामणि: प्रमाणक पुनर्परीक्षण) :** “तत्त्वचिन्तामणि पुरान न्याय-दर्शनक केवल सारांश नहि। गङ्गेश पूर्ववर्ती न्याय परम्परा, विशेषत: उदयन आदि द्वारा विकसित प्रश्नसभकेँ ग्रहण कऽ अनेक मूल अवधारणाक पुनर्परीक्षण करैत छथि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

व्याप्ति एतय केवल अनेक उदाहरणमे धूम-अग्निक सहउपस्थिति नहि; निषेधात्मक उदाहरण, उपाधि आ सम्भावित अपवादक जाँच महत्वपूर्ण अछि। सम्बन्धक सीमा-निर्धारण लेल अवच्छेदक-जकाँ पदक विकास तर्कशुद्धि लेल छल, पाठककेँ कठिन शब्दजालमे फँसाएब लेल नहि। तत्त्वचिन्तामणिक इतिहासक ब्यौरा सँ नव्य न्याय आरम्भिक न्यायपरम्परासँ कोना विकसित भेल, ई प्रश्न मुख्य बनैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (22.4 शब्द आ विश्वसनीयता) : “मनुष्यक अधिकांश ज्ञान भाषिक संप्रेषणसँ अबैत अछि। तँ शब्दप्रमाण केवल धार्मिक ग्रन्थक प्रश्न नहि; सामाजिक ज्ञानक मूल प्रश्न अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

अभाव-ज्ञान आ शब्द-प्रमाणक पुनर्विश्लेषण आधुनिक सूचना-समीक्षासँ संवाद खोलि सकैत अछि, मुदा शास्त्रीय अर्थक संरचना बिना स्पष्ट केने आधुनिक ‘डेटा’ वा ‘लॉजिक’ जकाँ पदक चिपकन अर्थभ्रंश होयत। तुलनामे समस्या-साम्य आवश्यक, इतिहासगत वंशसूत्र अलग प्रमाण माँगैत अछि। अध्याय एहि अन्तरकेँ मानबैत अछि, पर विस्तृत मूल सूत्रोद्धरण यहाँ सीमित अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (22.8 व्याप्ति: पुनरावृत्तिसँ अधिक) : “अनुमानक हृदय व्याप्ति अछि—हेतु आ साध्यक एहन अविनाभाव सम्बन्ध जकर आधारपर ज्ञात चिन्हसँ अज्ञात निष्कर्ष धरि पहुँचल जा सकय। केवल किछु बेर धूम संग आगि देखब पर्याप्त नहि, कारण आकस्मिक सहघटना सार्वत्रिक सम्बन्ध सिद्ध नहि करैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मिथिलाक बौद्धिक भूगोलक आधारपर गङ्गेशक महत्त्व स्वीकारब उचित, पर आधुनिक मैथिली सामुदायिक अस्मिता आ मध्ययुगीन शास्त्रीय व्यक्तित्वक सम्बन्ध पर ऐतिहासिक सावधानी आवश्यक। एही लेल तत्त्वचिन्तामणिक अलग मूल DOCX उपलब्ध होयब भविष्यक समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि; वर्तमान अध्यायक समीक्षा ओकर पूरा विकल्प नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 22; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 23 : नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 23 ‘‘नव्य-न्याय: भाषाक सूक्ष्म अनुशासन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 23, ‘‘Navya-Nyāya: The Subtle Discipline of Language’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

नव्य-न्यायक सूक्ष्म भाषा अवधारणाक सम्बन्ध, सीमा आ निषेधकेँ अनिर्णीत नहि छोड़बाक अभ्यास अछि। ‘अवच्छेदक’, ‘अधिकरण’, ‘प्रतियोगी’ आ परिष्कारक प्रसंग दावीकेँ विशिष्ट परिस्थिति सँ बाँधैत अछि। विश्लेषणक एहि ढंगमे कठिन भाषा कौशलक प्रदर्शन मात्र नहि; सामान्य वाक्यक अस्पष्टतासँ उपजैत तर्क-दोष दूर करबाक साधन बनैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(23.1 कठिन भाषा किएक?) :** “जँ हम कही—‘राम घट देखैत अछि’—सामान्य संप्रेषण लेल वाक्य पर्याप्त अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

परिभाषा पर अपवाद भेटला पर ओकरा संशोधित करब एकटा विशिष्ट विधि अछि। लक्षणक अव्याप्ति, अतिव्याप्ति आ असम्भवता जाँचना बिनु विश्लेषण पूर्ण नहि। ई अनुशासन आधुनिक गणनात्मक भाषा अथवा विधिक परिभाषासँ तुलनात्मक संवादक अवसर दैत अछि। तथापि संस्कृत न्यायीय तत्त्वमीमांसाक ‘सम्बन्ध’ केँ प्रोग्रामिंगक निर्जीव डेटा-सम्बन्धसँ एकरूप कहि देब ऐतिहासिक गलती होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(23.4 नव्य-न्याय आ मिथिला) :** “मिथिला नव्य-न्यायक विकासक प्रमुख केन्द्रसभमे एक रहल। गङ्गेशक बाद न्यायीय अध्ययनक जटिल परम्परा एतय विकसित भेल, बादमे नवद्वीप सहित अन्य केन्द्रसभमे सेहो विस्तार पाओल।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

तकनीकी सूक्ष्मताक लाभक संग संस्थागत बाधा सेहो अछि: एतेक विशिष्ट भाषा ककरा पढ़बाक अवसर देलक, सार्वजनिक विवादमे ओकर अर्थ कोना बुझाओल जाइत छल? ग्रन्थक ‘सूक्ष्मता आ संप्रेषणक तनाव’ एहि आलोचनाकेँ जगह दैत अछि। कठिन पदावली कखनो आवश्यक हो सकैत अछि; मुदा स्पष्टता लेल बनल भाषा यदि अपारदर्शी सत्ता बनि जाए तँ अपन घोषित उद्देश्यक विरुद्ध चलि जाइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (23.8 निषेध, प्रतियोगी आ अधिकरण) : “अभावक कथनमे तीन प्रश्न विशेष महत्त्वपूर्ण होइत अछि: कोन वस्तुक अभाव, कतय अभाव, आ कोन सम्बन्धक दृष्टिसँ अभाव? आँगनमे वृक्ष नहि कहला पर आँगन अधिकरण, वृक्ष प्रतियोगी, आ निर्दिष्ट सम्बन्ध अभावक सीमा बनैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

गङ्गेशक अध्याय २२ कँ एहि अध्यायमे विधिगत परिणति भेटैत अछि। भाषा-दर्शनक अध्याय १६ मे उठल अर्थ-सामर्थ्यक प्रश्न एतय कठोर विश्लेषणक रूप धरैत अछि। समानान्तर पद्धतिक शर्त ई अछि जे सांकेतिक अनुशासन आ सामान्य मैथिलीमे पठनीय प्रस्तुति एक-दोसरक विकल्प नहि, परस्पर जाँचक साधन बनथि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 23; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 24 : लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 24 ‘‘लोक, शास्त्र आ समानान्तर मिथिला’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 24, ‘‘Folk Tradition, Śāstra, and Parallel Mithila’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

लोकगीत, कहबी, कृषिज्ञान, श्रम, नदी–जल–भूमि आ स्त्रीक घरेलू अनुभवकेँ दर्शनक पाठाधार बनायब एहि अध्यायक मूल प्रस्ताव अछि। मुदा शास्त्रक विरोधमे ‘लोक’क एकटा पूर्णतः निर्दोष परम्परा गढ़ल नहि गेल अछि। लोकक भीतर भेदभाव, अन्धविश्वास आ सत्ता-सम्बन्ध सम्भव अछि; शास्त्रक भीतर सेहो विवाद आ सुधारक परम्परा अछि। एहि द्विपक्षीय सतर्कतासँ अध्याय सरल लोकप्रियतावादसँ ऊपर उठैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(24.1 लोकज्ञानक दार्शनिक स्थिति) :** “लोकज्ञान प्रायः लिखित सिद्धान्तक रूपमे नहि अबैत। ओ व्यवहार, गीत, कथा, कहबी वा रीति रूपमे उपस्थित होइत अछि। एहि कारण ओकर दार्शनिक पुनर्निर्माणमे विशेष सावधानी चाही।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मौखिक स्रोतक जाँचमे कथनक समय, कथकक सामाजिक स्थिति, विभिन्न संस्करण, सामाजिक प्रसंग आ बाह्य पुष्टि आवश्यक अछि। सांस्कृतिक अभिव्यक्तिक मूल्यक कारण ओकर तथ्यात्मक सत्य स्वतः सिद्ध नहि। पारम्परिक जलसंचालनक अनुभव व्यावहारिक ज्ञान दे सकैत अछि, मुदा प्रत्येक चिकित्सकीय अथवा प्राकृतिक दावा अलग जाँच माँगैत अछि। प्रमाणक एहि विभाजनसँ लोक-विमर्शक विश्वसनीयता घटैत नहि, बढ़ैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (24.4 शास्त्र बनाम लोक: झूठा द्वन्द्व) : “‘शास्त्र दमनकारी, लोक मुक्तिदायक’ अथवा ‘शास्त्र सत्य, लोक अज्ञान’—दुनू अत्यधिक सरल विभाजन अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

स्त्रीक श्रम आ घरेलू अनुभवकेँ ज्ञानक श्रेणीमे राखबाक प्रयत्न सार्थक अछि; तथापि लोकज्ञानक नामपर पारम्परिक असमान श्रम-विभाजनकेँ आदर्श बनायब जोखिमपूर्ण। कसकर श्रम, ककर निर्णय, के लाभ, के वंचित—ई प्रश्न जनजीवनक दर्शनक भीतर उठय चाही। क्षेत्रीय भाषाक लिखित आ मौखिक सामग्रीक तुलनात्मक सम्पादन एहन परीक्षण सम्भव बनबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (24.8 शास्त्रक भीतरक बहस) : “जकाँ लोक एकरूप नहि, तहिना शास्त्र सेहो एक आवाज नहि। सूत्र, भाष्य, वार्त्तिक, टीका, विरोधी सम्प्रदाय आ व्यवहारिक निबन्ध अलग ऐतिहासिक क्षणक उत्तर छथि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

विदेह-भूगोलक अध्याय १७ सँ आरम्भ भेल शृंखला एहि अध्यायमे लोक-अभिलेखधरि पहुँचैत अछि। उदयन, वाचस्पति, गङ्गेश आ नव्य-न्यायक सघन शास्त्रीयता संग सामान्य अनुभवक संवाद स्थापित होइत अछि। समानान्तर मिथिलाक अर्थ भूगोल नहि, प्रमाणक व्यापकता आ सममित परीक्षण अछि—अध्याय एहि प्रस्तावकेँ ठोस सामाजिक आशय दैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 24; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 17–24 : तुलनात्मक निष्कर्ष

विदेहक ऐतिहासिक संज्ञा, गार्गी–मैत्रेयीक संवादात्मक स्थान, न्याय-वैशेषिकक प्रमाणात्मक शिल्प, उदयनक आत्मा–ईश्वर तर्क, वाचस्पतिक बहुशास्त्रीय व्याख्या, गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि, नव्य-न्यायक सम्बन्ध-विश्लेषण आ लोक-स्रोतक ज्ञानगत मान्यता—ई आठ अध्याय मिथिलाकेँ स्थल-मात्र नहि, स्रोत-परीक्षणक कठिन विधिक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। प्राचीन विदेह आ वर्तमान भाषिक समुदायकेँ एकान्तरित नहि करब एहि खण्डक निर्णायक ऐतिहासिक सावधानी अछि।

अध्याय 25 : यूनानी प्रश्न

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 25 ‘‘यूनानी प्रश्न’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 25, ‘‘Greek Questions’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

प्राचीन यूनानी चिन्तनकेँ मानव विचारक एकमात्र उद्गम मानब अध्यायक दृष्टिमे इतिहासलेखनक त्रुटि अछि। आयोनियाई प्रकृति-प्रश्न, हेराक्लाइटसक परिवर्तन, पार्मेनिदिसक स्थायित्व, पिथागोरीय संख्या-विचार आ सोफिस्टक सार्वजनिक वाद अलग प्रश्नक्षेत्र खोलैत अछि। ‘मिथकसँ तर्क’क सरल क्रममे धार्मिक कथा समाप्त आ शुद्ध तर्क आरम्भ भऽ गेल—एहन एकरेखीय आख्यान लेखक अस्वीकार करैत छथि।

मूल पाठक साक्ष्य **(25.1 मिथकसँ तर्क: सरल कथा सँ बचू) :** “बहुत पाठ्यपुस्तक यूनानी दर्शनक आरम्भकेँ ‘मिथक सँ तर्क’क सीधा संक्रमण कहैत अछि। एहि कथनमे आंशिक सत्य अछि—प्रकृतिक घटनाक कारणक अधिक व्यवस्थित, गैर-वंशावलीय व्याख्या विकसित भेल।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रकृतिक मूल तत्त्व पूछब केवल संसारक सामग्री गिनब नहि; प्रकृतिक कारणक रूपरेखा प्रस्तुत करब अछि। परिवर्तन आ स्थायित्वक मतभेद पाठककेँ सांख्यक परिणामवाद आ वैशेषिकक द्रव्य-गुण प्रश्न स्मरण करबैत अछि। मुदा समस्या-साम्यक कारण ऐतिहासिक सम्पर्क सिद्ध नहि होइत। एही कारण यूनानी परमाणुवाद आ भारतीय वैशेषिक परमाणुवादक समान नाम स्वतः समान विधि अथवा पूर्वस्रोतक दाबी नहि बनैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(25.5 परमाणुवाद आ बहुलता) :** “लेउकिप्पस आ डेमोक्रिटससँ सम्बद्ध प्राचीन परमाणुवाद परिवर्तनशील दृश्य जगतकेँ अविभाज्य कण आ रिक्त स्थानक आधारपर बुझबाक प्रयास करैत अछि।

आधुनिक परमाणु-विज्ञानसँ एहि सिद्धान्तकेँ सीधा जोड़ब अनैतिहासिक होयत।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

सोफिस्टक वाक्पटुता आ कानूनक सामाजिक आधारक विवेचनमे न्याय आ राजनीति प्रवेश करैत अछि। एतय एकटा अनसुलझल अन्तर अछि: सार्वजनिक वादमे प्रभावी कथन सत्यकेँ प्राप्त करैत अछि कि केवल श्रोता जीतैत अछि? ग्रन्थक समानान्तर कसौटी सार्वजनिक तर्कमे प्रतिपक्षक प्रामाण्य सुनबाक माँग करैत अछि। ‘यूनानी प्रश्न’ शीर्षक जँ केवल आचार्य-सूची बनित, तँ ई विवाद ओझर भऽ जाएत।

मूल पाठक साक्ष्य **(25.9 परिवर्तन आ स्थायित्वक विवाद) :** “हेराक्लाइटस परिवर्तनक व्यापकता आ विरोधी तनावपर बल दैत छथि, जखनकि पार्मेनिदेस सत्य अस्तित्वकेँ अजन्मा, अविनाशी आ अपरिवर्तनशील मानबाक तर्क प्रस्तुत करैत छथि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

वैदिक, चीनी, मिस्री आ मेसोपोटामियाई बौद्धिक परम्पराक उल्लेख समानान्तर इतिहासक दिशा बतबैत अछि; मुदा सभकेँ समान संस्थागत रूपक ‘दर्शन’ कहबाक शर्त भिन्न-भिन्न अछि। एहि विवेकसँ पाश्चात्य दर्शनक अध्ययन न अवमूल्यन बनैत अछि न विश्वइतिहासक निरपेक्ष केन्द्र।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 25; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 26 : सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 26 ‘‘सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 26, ‘‘Socrates, Plato, and Aristotle’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

सुकरात, प्लेटो आ अरस्तू एकहि विद्यालयक परस्पर आवृत्ति नहि, प्रश्न, रूप-सिद्धान्त आ व्यवस्थित निरीक्षणक तीन भिन्न दार्शनिक शैली छथि। सुकराती अज्ञान स्वीकार करब आलोचनात्मक प्रश्नक आरम्भ अछि, निष्क्रिय अनिर्णय नहि। प्लेटोक न्यायविमर्श व्यक्तिगत आत्मा आ राज्यक समरूपताक चर्चा दैत अछि, मुदा आदर्श व्यवस्थामे असहमतिक अधिकार प्रश्नांकित होइत अछि। अरस्तू अनुभव, कारणता आ सद्गुणक व्यावहारिक साधनपर बल दैत छथि।

मूल पाठक साक्ष्य **(26.1 सुकरात: प्रश्न पूछबाक नैतिक साहस) :** “सुकरात स्वयं कोनो ग्रन्थ नहि लिखलनि। हुनक विचारक प्रमुख स्रोत प्लेटोक संवाद, जेनोफोनक लेखन आ अरिस्टोफेनीजक व्यंग्यात्मक प्रस्तुति अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

गुफाक रूपक ज्ञानक राजनीतिक परिस्थिति खोलैत अछि: छायाकेँ सत्य मानयब ककरा हितमे अछि, शिक्षाक माध्यमसँ दृष्टि बदलैत समय दायित्व की? अरस्तूक चारि कारणक विश्लेषण आधुनिक भौतिक नियमक चारि नूतन वैज्ञानिक शक्तिक सूची नहि। रूप, पदार्थ, कार्यकारण आ प्रयोजनक सम्बन्धक व्याख्या शास्त्रीय दर्शनक विशिष्ट स्तर अछि; तकर ऐतिहासिकता सुरक्षित रहय।

मूल पाठक साक्ष्य **(26.5** प्लेटोक आदर्श राज्यक सीमा**) :** “प्लेटोक राजनीतिक दर्शनकेँ केवल आदर्शवाद कहि छोड़ब अनुचित। ओ शिक्षा, चरित्र, सत्ता आ संस्थाक सम्बन्धक गम्भीर विश्लेषण करैत छथि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

सद्गुणक अभ्यास आ मध्यमार्गक चर्चा उच्च नैतिक उद्देश्य प्रस्तुत करैत अछि, मुदा कोन समुदायक सदस्य नैतिक नागरिक मानल गेलाह से पूछब आवश्यक। यूनानी सामाजिक संस्थामे दासत्व आ स्त्रीक सीमित राजकीय अधिकारक इतिहासक उल्लेख बिना सार्वभौमिक राजनीति निकालब जोखिमपूर्ण। अध्याय प्लेटोक आदर्श राज्यक सीमा चिन्हैत अछि; ई प्रश्न अरस्तूक नागरिकताक अर्थपर सेहो लागू होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(26.10** सुकराती अज्ञान आ उत्तरदायी प्रश्न**) :** “सुकराती अज्ञानक अर्थ सभ विषयमे किछु नहि जानब नहि। एकर अर्थ अपन दाबीक सीमा पहचानब आ प्रतिष्ठा, बहुमत वा आत्मविश्वासकेँ ज्ञानक प्रमाण नहि मानब अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सांख्य आ न्यायसँ औपचारिक तुलना सम्भव अछि—वर्ग, कारणता, प्रमाण, आत्मा—मुदा पदक प्रत्यक्ष समतुल्यता नहि। समानान्तर दर्शनक विशेष लाभ सुकराती संवादकेँ मिथिलाक वाद-संस्कृतिसँ सम्बद्ध प्रश्न-शैली रूपमे रखब अछि, नहि एहि दूनूक बीच काल्पनिक ऐतिहासिक वंशावली बनायब।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 26; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 27 : मध्ययुगीन दर्शन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 27 ‘‘मध्ययुगीन दर्शन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 27, ‘‘Medieval Philosophy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

‘मध्ययुगीन दर्शन’क इतिहास यूरोपीय काल-विभाजनक सर्वजनीन नक्शा नहि। अध्याय यूरोपीय लैटिन, इस्लामी अरबी, यहूदी आ अन्य बौद्धिक परम्पराक बहुभाषिक सम्पर्क देखबैत अछि। प्राचीन यूनानी ग्रन्थक अनुवाद, टीका आ आलोचनाक प्रक्रिया ज्ञानक उत्तरजीवन थिक। मध्ययुगकेँ ‘अन्धकार’ कहि चिन्हित करब एहि प्रयत्नक ऐतिहासिक वास्तविकता नकारब होयत।

मूल पाठक साक्ष्य (27.1 “अन्धकार युग”क मिथक) : “लोकप्रिय इतिहास कखनो प्राचीन यूनानक बाद एकटा अन्धकार आ फेर Renaissance/Modernity क अचानक प्रकाशक कथा सुनबैत अछि। ई अत्यधिक सरल रेखा अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

विश्वास आ बुद्धिक सम्बन्ध एकटा सीधा विरोध नहि: तर्कविश्वासकेँ सिद्ध करब चाहैत अछि, ओकर सीमा देखबैत अछि वा पाठक अर्थ निर्वचन करैत अछि—विभिन्न प्रवृत्ति संभव अछि। सार्वभौमक समस्या भारतीय सामान्य-विशेषक विवादसँ तुलनीय अछि, मुदा पदावली आ सामाजिक संस्थाक इतिहास अलग। एकर सही तुलना समान समस्या-रचनापर केन्द्रित रहय, शास्त्रीय ग्रन्थक परस्पर प्रत्यक्ष प्रभावक निराधार कथनपर नहि।

मूल पाठक साक्ष्य (27.5 सार्वभौमक समस्या) : ““मनुष्य” जकाँ सामान्य शब्द वास्तविकता मे कोनो स्वतन्त्र सामान्य तत्त्वक संकेत करैत अछि, अथवा

केवल अनेक व्यक्तिक लेल एक नाम? सार्वभौम सम्बन्धी यथार्थवाद, नामवाद आ अवधारणावादक विवाद मध्ययुगीन तर्क आ भाषा-दर्शनक केन्द्रीय प्रश्न”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

अन्सेल्मक अवधारणात्मक ईश्वर-तर्क आ एक्विनासक कारणक मार्गक अन्तर निर्णायक अछि। ‘पूर्णतम सत्ता’क अवधारणासँ वास्तविक अस्तित्व कथन निकलैत अछि की नहि, एहन आपत्ति एक प्रकारक अछि; जगतक कारण-श्रृंखलासँ प्रथम कारणक सिद्धि दोसर प्रकार। दू तर्कक असमानता जानब उदयनाचार्यक न्यायीय ईश्वरानुमानक भविष्य तुलनाक आधार बनि सकैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(27.10 विश्वास आ बुद्धिक अनेक सम्बन्ध) :**

“मध्ययुगीन दर्शनकेँ केवल आस्था द्वारा तर्कक दमन कहब ऐतिहासिक विविधता मिटा दैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

विश्वविद्यालयीय शास्त्रार्थ आ टीका-परम्पराक निर्माणकेँ केवल दार्शनिक निष्कर्षसँ नहि, संस्था, अनुवाद-परिसंचरण आ अधिकारक इतिहाससँ जोडब चाही। मिथिलाक न्यायीय संस्थानसँ तुलनाक सम्भावना अछि, मुदा समान प्रकारक पाठक्रम ओही संस्थागत संरचनाक प्रमाण नहि। अध्याय एहि ऐतिहासिक व्यावधानकेँ उचित रूपसँ रेखाङ्कित करैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 27; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 28 : देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 28 ‘‘देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्स’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 28, ‘‘Descartes, Spinoza, and Leibniz’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

देकार्त, स्पिनोजा आ लाइबनित्सकेँ केवल एक समान ‘बुद्धिवाद’क नाम दैत छोड़ि देला सँ हुनकर मूल विवाद ओझर होइत अछि। देकार्तक पद्धतिगत संशय निश्चितता खोजैत अछि; स्पिनोजाक एक-द्रव्य तत्त्वमीमांसा प्रकृति आ आवश्यकताक सम्बन्ध बदलैत अछि; लाइबनित्स पर्याप्त कारण आ मोनाडक बहुलता द्वारा असाधारण अलग मार्ग विकसित करैत छथि। अध्याय एहि भिन्नता प्रति सतर्क अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(28.1 देकार्तक पद्धतिगत संशय) :** “देकार्त एहन विश्वास खोजैत छथि जे संशयक कठोरतम परीक्षा सहि सकय। इन्द्रिय भ्रमित करैत अछि; स्वप्न अनुभव जागृत अनुभव-जकाँ बुझा सकैत अछि; अतः ओ क्रमशः अपन विश्वास पर संशय करैत छथि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

देकार्तक मन-देह अन्तरक्रिया जँ मानसिक आ भौतिक पदार्थ अलग होय, तँ प्रभावक दिशा कोन माध्यमसँ चलत, एहन कठिनाई उत्पन्न करैत अछि। सांख्यक पुरुष-प्रकृति विवादक संग समस्या-संरचनात्मक तुलना सम्भव अछि; मुदा देकार्तीय आत्मा सक्रिय विचारक होइत अछि, सांख्यक शुद्ध पुरुष निष्क्रिय साक्षी। समानता कहैत भेद छिपायब आलोचनाक उद्देश्य नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(28.5 लाइबनित्स: पर्याप्त कारण) :** “लाइबनित्स पूछैत छथि—किछु अछि किएक, शून्य किएक नहि? पर्याप्त कारणक सिद्धान्त अनुसार कोनो तथ्य वा सत्यक उचित कारण चाही। संगहि ओ

contradiction क सिद्धान्त, सम्भव संसार, मोनाड आ पूर्वस्थापित सामंजस्यक अवधारणा विकसित करैत छथि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

स्पिनोजाक आवश्यकतावादमे स्वतंत्रताकेँ आकस्मिक चुनाव नहि, कारणात्मक आवश्यकताक बोधसँ सम्बद्ध मानल जाए तँ व्यक्तिगत नैतिक उत्तरदायित्वक विश्लेषण बदलैत अछि। लाइबनित्सक पर्याप्त कारणक सिद्धान्त कारण रहबाक माँग करैत अछि, मुदा प्रत्येक घटनाक कारण वास्तविक रूपसँ मनुष्यक उपलब्ध अछि—ई दोसर दाबी अछि। जँ सिद्धान्तकेँ अप्रमाणित सर्वज्ञता बनाओल जाए तँ आलोचना वांछनीय अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (28.9 विधिसम्मत संशयक सीमा) : "देकार्तक संशय जीवनक सभ विश्वास स्थायी रूपसँ त्यागब नहि, निश्चित आधार खोजबाक विधि अछि। इन्द्रिय कखनो भ्रम दैत अछि, स्वप्न अनुभव जागरण-जकाँ लगैत अछि, आ विचारमे व्यवस्थित धोखा सम्भव मानल जा सकैत अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

ई अध्याय आधुनिक यूरोपीय तत्त्वमीमांसामे ज्ञानक निश्चितता आ सत्ताक रचनाक द्वैत सामने आनैत अछि। भारतीय दर्शनक संदर्भ एतय व्याख्यात्मक संवाद खोलबाक साधन अछि; 'स्पिनोजा = वेदान्त' अथवा 'मोनाड = पुरुष' सन निरपेक्ष समानता ग्रन्थक प्रमाण-अनुशासन विरुद्ध होयत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 28; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 29 : लॉक, बर्कली आ ह्यूम

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 29 ‘‘लॉक, बर्कली आ ह्यूम’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 29, ‘‘Locke, Berkeley, and Hume’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

लॉक, बर्कली आ ह्यूमक इतिहासमे अनुभवक महत्त्व साझा अछि, मुदा अनुभवक परिणाम सम्बन्धी दार्शनिक निष्कर्ष विपरीत हो सकैत अछि। लॉक मानसिक सामग्रीक उद्गम आ व्यक्तिक स्मृति-पहिचान पूछैत छथि; बर्कली पदार्थक स्वतन्त्र अवधारणापर प्रश्न उठबैत छथि; ह्यूम प्रभाव, विचार, कारणता आ आत्माक सम्यक् औचित्य खोजैत छथि। अध्याय तिनूक बौद्धिक भिन्नता सुरक्षित रखैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(29.1 लॉक: मनक सामग्री कतयसँ?) :** “Locke अपन Essay Concerning Human Understanding मे जन्मजात विचारक कठोर रूपपर प्रश्न करैत छथि। संवेदना आ आत्म-निरीक्षण अनुभवक मुख्य स्रोत बनैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

लॉकक प्राथमिक आ गौण गुणक भेद इन्द्रिय-प्रतीति आ वस्तु-स्वरूपक सम्बन्ध पर प्रश्न उठबैत अछि। बर्कलीक ‘अनुभवातीत पदार्थ’ विरोधकेँ साधारण ‘बाह्य जगत नहि’क भोथर नारा बनायब अनुचित। ह्यूम आगमनमे भविष्यक घटनासँ भूतपूर्व नियमितताक सन्दर्भ निकालबाक तर्कगत छलाँग चिन्हैत छथि; प्रचलित आदत तार्किक अनिवार्यता सिद्ध नहि करैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(29.6 कारणता) :** “हम एक घटना बाद दोसर घटना बारम्बार देखैत छी—आगि बाद ताप, धक्का बाद गति। मुदा “आवश्यक

सम्बन्ध” स्वयं प्रत्यक्ष देखैत छी की? ह्यूमक अनुसार अनुभव नियमित अनुक्रम दैत अछि; मन आदतक कारण अपेक्षा बनबैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

ह्यूमक आत्मा-बन्धक विश्लेषण बौद्ध अनात्मविमर्शसँ तुलनीय हो सकैत अछि। तथापि हुनकर ऐतिहासिक स्रोत, अनुभूतिक प्रकार आ कर्मसम्बन्धी प्रतिज्ञा अलग छथि। न्यायीय व्याप्ति आ ह्यूमक आगमन दूनू ज्ञात घटनासँ व्यापक नियम पर पहुँचबाक औचित्य प्रश्न करैत छथि; मुदा व्याप्तिक उपाधि-चर्चा आ ह्यूमक आवृत्ति-विमर्श एकहि तर्क-संरचना नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(29.11 सरल विचार आ अनुभवक संरचना) :** “लॉक अनुभवकेँ ज्ञानक स्रोत मानैत छथि, मुदा मन निष्क्रिय भण्डार मात्र नहि। संवेदन बाहरी वस्तुसँ सामग्री दैत अछि, आत्मपर्यवेक्षण मनक अपन क्रियाक बोध दैत अछि, आ मन तुलना, संयोजन तथा अमूर्तनसँ जटिल विचार बनबैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

ग्रन्थक मूल शैक्षिक मूल्य पाठककेँ प्रत्यक्षप्रमाणक महत्त्व मानैतहुँ अनुभवसँ निःशर्त निश्चितताक असम्भवता बुझबैत अछि। एहि सन्देहक उत्तर केवल ‘अनुभव भरोसायोग्य’ कहि नहि; आगमनक व्यावहारिक सफलता आ दार्शनिक औचित्यक प्रश्न अलग राखब पड़त।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 29; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 30 : कान्ट

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 30 ‘‘कान्ट’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 30, ‘‘Kant’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

कान्टक ‘कोपरनिकीय’ परिवर्तने ज्ञाताक सक्रिय संरचनाकेँ अनुभवक सम्भावनाक शर्त बनबैत अछि। लेखक अनुभवपूर्व-अनुभवोत्तर आ विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक भेदक चर्चा द्वारा कान्टकेँ बुद्धिवाद आ अनुभववादक द्विपक्षीय विकल्पसँ बाहर आनैत छथि। ज्ञानक सीमा मानलासँ ज्ञानक प्रामाण्य नष्ट नहि; ज्ञान किन शर्तपर सम्भव अछि ई प्रश्न तीक्ष्ण होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(30.1 ‘कोपरनिकीय’ परिवर्तन) :** “कान्ट प्रस्ताव करैत छथि जे ज्ञानमे मन केवल बाहरसँ आबयवला सामग्रीक निष्क्रिय पात्र नहि। अनुभूतिक संरचना मे ज्ञाताक योगदान अछि। स्थान आ समय अनुभूतिक रूप, आ बुद्धिक श्रेणी अनुभवकेँ व्यवस्थित करैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्थान-कालक संवेदनरूप आ बुद्धिक कोटिक चर्चा एहन अनुभवक निर्माणक संकेत दैत अछि जतय वस्तु अपन-आप नहि, ज्ञाताक विधिसँ निर्धारित अनुभव बनैत अछि। तथापि प्रतीयमान आ वस्तु-स्वरूपक भेदकेँ ‘दू अलग संसार’क सरल भौगोलिक चित्र नहि बनाओल जाए। ज्ञानकी सीमा आ जगतकी स्वतन्त्रता बीच तनाव समझबाक लेल कान्टीय व्याख्याक अनेक स्तर चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(30.6** सार्वभौमिकता आ समानता**) :** “कान्टक नैतिक सार्वभौमिकता शक्तिशाली अछि कारण ओ नैतिक विशेषाधिकारकेँ चुनौती दऽ सकैत अछि। जँ नियम सभ विवेकशील व्यक्ति लेल समान, तँ जन्म, पद अथवा निजी लाभक आधारपर अलग नैतिक नियम कठिन होइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

नैतिक स्वायत्तता आ सार्वभौम गरिमाक सूत्र आधुनिक अधिकार-विचार लेल प्रभावशाली अछि। मुदा ऐतिहासिक कान्टक लिखनमे मानववर्ग, नस्ल आ लिंग सम्बन्धी असमान कथनक तथ्यक जाँच बिना ‘सार्वभौम मनुष्य’क दाबी निरपेक्ष मानब पर्याप्त नहि। अध्याय एहि ऐतिहासिक सीमाक प्रश्न उठबैत अछि; सिद्धान्तक नैतिक सार्वभौमिकता आ लेखकक व्यक्तिगत विरोधाभासकेँ अलग-अलग प्रमाणसँ जाँचब उचित।

मूल पाठक साक्ष्य **(30.11** भारतीय दर्शनसँ तुलनात्मक संवाद**) :** “कान्टक ज्ञाता-सक्रियता, ज्ञानक सीमा आ अनुभवक शर्तक प्रश्न भारतीय दर्शनक अनेक परम्परासँ संवाद खोलि सकैत अछि—न्यायक वस्तुगत ज्ञान, बौद्ध ज्ञप्ति-विमर्श, वेदान्तक ज्ञाता-ज्ञेय प्रश्न आदि। मुदा प्रत्यक्ष समतुल्यता बनायब उचित नहि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

भारतीय ज्ञानमीमांसासँ तुलना करैत समय कान्टक अनुभवपूर्व संरचना केँ नव्य-न्यायक अवच्छेदक वा न्यायप्रमाणक तत्सम प्रतिशब्द मानब गलत होयत। यथोचित संवाद ‘ज्ञान कोना सम्भव’ प्रश्नपर आधारित हो सकैत अछि, पर ऐतिहासिक उत्तरक स्वतन्त्रता सुरक्षित रहबाक चाही।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 30; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 31 : हेगेल आ द्वन्द्व

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 31 ‘‘हेगेल आ द्वन्द्व’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 31, ‘‘Hegel and Dialectic’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

हेगेलक द्वन्द्व जीवन, संस्था आ इतिहासकेँ स्थिर पदार्थक सूची नहि, विकासमान सम्बन्धक क्षेत्रमे पढ़ैत अछि। ‘थीसिस–एण्टीथीसिस–सिन्थेसिस’क लोकप्रिय त्रिककेँ हुनकर समस्त तर्कक यान्त्रिक सूत्र बना देब अनुचित; ग्रन्थ निषेध आ संरक्षणक जटिलतापर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। द्वन्द्वमे पूर्व स्थिति पूर्णतः विलीन नहि; ओकर सीमा उजागर भऽ परिवर्तित सम्बन्धमे सम्मिलित भऽ सकैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(31.1 स्थिर वस्तुसँ प्रक्रिया दिस) :** “दैनिक बुद्धि वस्तुसभकेँ पृथक, तैयार आ स्थिर मानबाक प्रवृत्ति रखैत अछि। मुदा सामाजिक संस्था, नैतिक मूल्य, राजनीतिक व्यवस्था अथवा आत्मचेतना वास्तवमे स्थिर वस्तु नहि। ई इतिहासक भीतर बदलैत सम्बन्धसभक परिणाम अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्वामी–दास सम्बन्धकेँ मनुष्यक मान्यता, निर्भरता आ श्रमक प्रश्न रूपमे पढ़ल गेल अछि। एहि पाठमे सामाजिक प्रभुत्वक आलोचना सम्भव अछि, मुदा ‘दास’क रूपककेँ सभ वास्तविक दासता-व्यवस्थाक ऐतिहासिक विवरण मानब उचित नहि। आत्मचेतनाक मान्यता आ वैधानिक अधिकारक सुदृढ संस्था बीच सम्बन्ध स्पष्ट कएने बिना स्वतंत्रताक रूपक अधूरा रहत।

मूल पाठक साक्ष्य **(31.5 इतिहासक दिशा) :** “हेगेल इतिहासमे स्वतंत्रताक चेतनाक विस्तार देखबैत छथि। एहि विचारक प्रेरक पक्ष ई जे इतिहास अर्थहीन

घटनाक ढेर नहि; संस्थागत परिवर्तन नैतिक अर्थ रखि सकैत अछि। मुदा इतिहासकेँ एकरेखीय प्रगतिक कथामे बदललासँ समस्या उत्पन्न होइत अछि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

इतिहासमे स्वतंत्रताक प्रगतिशील विस्तारक दाबी अत्यन्त आकर्षक अछि, पर ई इतिहासक निश्चित अंतिम परिणाम सिद्ध नहि करैत। युद्ध, दमन आ नागरिक पतनक अनुभव भविष्यक अनिवार्य स्वतन्त्रता-वृद्धिक विरुद्ध गम्भीर परीक्षा अछि। अध्याय इतिहासक पूर्वनिर्धारित दिशा स्वीकारबाक सीमा चिन्हैत अछि; यैह आत्मसीमा ओकर दार्शनिक विश्वसनीयता दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(31.9** स्वामी-दास सम्बन्ध आ मान्यता**) :** "आत्मचेतना स्वयंकेँ केवल एकान्त निरीक्षणसँ पूर्ण नहि पबैत; ओकरा दोसर आत्मचेतनाक मान्यता चाही। प्रभुत्वक संघर्षमे स्वामी दासक मान्यता चाहैत अछि, मुदा जबरदस्ती प्राप्त मान्यता स्वतंत्र स्रोतक नहि रहैत।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

भारतीय शास्त्रार्थक पूर्वपक्ष–उत्तरपक्ष आ हेगेलक द्वन्द्व दुनू विवादक गतिशीलता देखबैत अछि, मुदा तिनकर उद्देश्य, विधि आ तत्त्वमीमांसक आधार एक नहि। समानान्तर इतिहास एहि भेदकेँ स्पष्ट राखि विरोधसँ विचार विकसित करबाक व्यापक सम्भावना ग्रहण करैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 31; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 32 : मार्क्स

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 32 ‘‘मार्क्स’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 32, ‘‘Marx’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

मार्क्स दर्शनकेँ श्रम, उत्पादन, सम्पत्ति आ वर्गीय सत्ताक वास्तविक संसारसँ जोड़ैत छथि। ऐतिहासिक भौतिक दृष्टि विचारधाराकेँ सामाजिक परिस्थितिसँ काटि नहि देखैत, मुदा यैह विचार जब पूर्ण आर्थिक नियतिवाद बनि जाए तँ संस्कृति, जाति, लिंग आ भाषाक स्वतन्त्र ऐतिहासिक शक्ति अदृश्य भऽ जाएत। अध्याय एहि अतिसरलीकरणक विरुद्ध बहुस्तरीय सामाजिक विश्लेषण अपनबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(32.1 ऐतिहासिक भौतिक दृष्टि) :** “मार्क्स इतिहासकेँ केवल महान विचार वा महान व्यक्तिक कथा नहि मानैत छथि। उत्पादनक साधन, श्रमक संगठन, सम्पत्ति सम्बन्ध आ वर्ग-संरचना समाजक रूपरेखा गढ़ैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

विमुख श्रमक विचार मनुष्यक काज आ ओकर उत्पादक बीच विभाजन मात्र नहि, श्रमगत निर्णयक नियन्त्रण आ सामाजिक सम्बन्धक संकट चिन्हैत अछि। वस्तुपूजाक विमर्श बाजारक वस्तु-पक्षमे छिपल मानवसम्बन्धकेँ उजागर करैत अछि। ई सभ अवधारणा आधुनिक डिजिटल श्रमक अध्ययनमे संवाद खोलि सकैत अछि; मुदा विशिष्ट आर्थिक आँकड़ा बिना वर्तमान डिजिटल मंचक प्रत्येक व्यवहार पर प्रत्यक्ष सिद्धान्त-प्रयोग सावधान रहय।

मूल पाठक साक्ष्य **(32.5 विचारधारा) :** “विचारधाराक प्रश्न ई नहि जे ‘सभ विचार झूठ अछि’। प्रश्न ई जे कोन सामाजिक व्यवस्था अपन विशेष हितकेँ सार्वभौम सत्यक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

आर्थिक संरचनाक आलोचना अधिकारपूर्ण अछि, पर मार्क्सक बादक राजनीतिक इतिहासक सभ घटना हुनकर मूल विचारक अनिवार्य परिणाम मानब स्रोततः अशुद्ध होयत। सामाजिक न्याय लेल क्रान्ति आ सुधारक प्रभावक मूल्याङ्कन स्वतन्त्र अनुभवजन्य साक्ष्य माँगैत अछि। वैचारिक पक्षधरता स्वतः नीति-परिणामक प्रमाण नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(32.9 विमुख श्रम) :** “विमुखताक विश्लेषणमे श्रमिक अपन उत्पाद, श्रम-क्रिया, मानवीय सृजनशीलता आ दोसर मनुष्यसँ अलगाव अनुभव करैत अछि। श्रम जीवनक आत्मप्रकाश होयबाक बदला जीविका लेल बाहरी बाध्यता बनि सकैत अछि; बनाओल वस्तु पर श्रमिकक नियन्त्रण नहि रहैत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मिथिलाक भूमि, श्रम, जाति, प्रवासन आ स्त्रीक अवैतनिक श्रमक प्रश्न मार्क्सवादी वर्गविमर्शकेँ स्थानीय जटिलता दे सकैत अछि। मुदा ‘वर्ग’ आ ‘जाति’ एक-दोसरक पर्याय नहि। समानान्तर दर्शन श्रमक आलोचनाकेँ ग्रहण करैतहुँ मनुष्यक गरिमा आ सांस्कृतिक असमानताकेँ अलग विश्लेषणक महत्त्व दैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 32; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 33 : कीर्केगार्द आ नीत्शे

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 33 ‘‘कीर्केगार्द आ नीत्शे’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 33, ‘‘Kierkegaard and Nietzsche’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

कीर्केगार्द आ नीत्शे दुनू विशाल दार्शनिक तन्त्रक बीच व्यक्तिक जीवन आ मूल्यक संकट पूछैत छथि, मुदा एकर अर्थ दूनूक एकसमान उत्तर नहि। कीर्केगार्दक अस्तित्वगत चिन्ता, निर्णय आ आस्थाक छलाँग प्रश्नक एक दिशा अछि; नीत्शेक मूल्य-वृत्तान्त आ वंशावली आलोचनाक दोसर दिशा। लेखक दूनूकेँ व्यक्तिवादक अस्पष्ट नाममे समेटबाक बदला हुनकर अलग सामाजिक आ धार्मिक आधार चिन्हैत छथि।

मूल पाठक साक्ष्य **(33.1 व्यक्ति बनाम तन्त्र) :** “जँ दार्शनिक तन्त्र सम्पूर्ण इतिहासक व्याख्या करय, मुदा वास्तविक व्यक्ति कष्ट, भय, प्रेम, मृत्यु आ चुनावक क्षणमे अकेले पड़ि जाए, तँ दर्शन अधूरा अछि। कीर्केगार्दक मूल आग्रह एतय अछि—‘व्यक्ति’ केवल विशाल अवधारणाक उदाहरण नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

‘ईश्वर मरि गेल’ नीत्शेक कथनकेँ जीववैज्ञानिक मृत्यु वा सरल नास्तिक नारा कहब भूल अछि। प्रश्न सांस्कृतिक वैधता, नैतिक मूल्यक आधार आ यूरोपीय आत्मबोधक संकट सम्बन्धी अछि। वंशावली-विधि मूल्यक ऐतिहासिक उत्पत्ति पर प्रश्न करैत अछि, पर किछुक इतिहास जानला सँ ओकर वर्तमान नैतिक मूल्य स्वतः शून्य नहि भऽ जाइत। मूल पाठ एहि सरलीकरणसँ बचबाक संकेत दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(33.5 वंशावलीक सीमा) :** “ककरो मूल्यक इतिहास सत्ता-संघर्षसँ जुड़ल भेटलासँ ओ मूल्य स्वतः झूठ नहि भऽ जाइत अछि।

मानवाधिकारक इतिहास राजनीतिक संघर्षसँ भरल अछि; ताहिसँ मानवाधिकार असत्य नहि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

कीर्केगार्दक व्यक्तिक चयन महत्वपूर्ण अछि; मुदा व्यक्तिक नैतिक साहस आ सार्वजनिक प्रमाणक बीच भेद जरूरी। विशिष्ट निजी आस्था जीवननिर्णय लेल सार्थक हो सकैत अछि, पर ओकरा सभकेँ बाध्य करबाक सामाजिक अधिकार अलग प्रश्न अछि। नीत्शेक शक्ति-भाषाक आलोचनामे सेहो महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि: आत्मनिर्माणक स्वाधीनता अन्य व्यक्तिक समान गरिमा पर कोन सीमा स्वीकारैत अछि?

मूल पाठक साक्ष्य **(33.9 कीर्केगार्दक अस्तित्वगत चयन) :** “व्यक्ति केवल सार्वभौम सिद्धान्तक उदाहरण नहि; ओकरा एहन निर्णय लेब पड़ैत अछि जेकर पूर्ण वस्तुगत गारंटी नहि। कीर्केगार्दक लेखन सौन्दर्यपरक, नैतिक आ धार्मिक जीवन-दृष्टिक तनाव देखबैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

हेगेलक ऐतिहासिक तन्त्रसँ विमर्शक बाद व्यक्तिक चिन्ता आ मूल्यक अस्थिरता पर फेरब अध्यायक्रमक बौद्धिक प्रगति अछि। समानान्तर दर्शन निजी सत्यक अस्तित्वगत मूल्य मानैतो सार्वजनिक न्यायकेँ मात्र व्यक्तिगत शक्ति अथवा आस्था पर नहि छोड़ैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 33; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 34 : प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 34 ‘‘प्रघटनावाद आ अस्तित्ववाद’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 34, ‘‘Phenomenology and Existentialism’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

प्रघटनावाद अनुभवक प्रकट होयबाक संरचना जाँचैत अछि, अस्तित्ववाद एहि अनुभवमे निर्णय, मृत्यु, देह आ जिम्मेवारीक प्रश्न उठबैत अछि। हुस्सर्लक आशयिता केवल मनक आन्तरिक दृश्य नहि: चेतना सदैव किछु सम्बन्धी चेतना अछि। ‘जीवन-जगत’क परिप्रेक्ष्य वैज्ञानिक अमूर्तिकरणक पहिले उपस्थित अनुभूत संसारक अर्थ पूछैत अछि। अध्याय एहि भेदकेँ सरल मनोवैज्ञानिक आत्मनिरीक्षणमे सिमटायबासँ बचैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(34.1** अनुभव दिस फेरब**) :** “हुसर्लक प्रसिद्ध आग्रह ‘वस्तुसभ दिस फेरू’क अर्थ सामान्य अनुभवकेँ बिना परीक्षण स्वीकारब नहि; बल्कि सिद्धान्तक पूर्वधारणाकेँ कोष्ठकमे राखि अनुभव कोना प्रकट होइत अछि से वर्णन करब।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

हाइडेगरक संसारमे-होयब आ सार्त्रक स्वतन्त्रता दूनू मनुष्यक अस्तित्वक अलग दर्शन प्रस्तुत करैत अछि। सार्त्रक दुर्निष्ठा-चर्चामे मनुष्य अपन चुनावसँ पलायन करबाक नैतिक समस्या उठैत अछि; मुदा निर्धनता, लिंगगत हिंसा वा जातिगत नियन्त्रणक स्थिति मे ‘चुनावक स्वाधीनता’ एक समान नहि। अध्याय देह आ सामाजिक स्थितिक चर्चा द्वारा एहि असमानता पर ध्यान दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(34.5** देह आ अनुभव**) :** “प्रघटनावादी परम्पराक बादक विकास, विशेषत: मर्लो-पोन्ती, देहकेँ केवल वस्तु नहि बल्कि संसार अनुभव

करबाक माध्यम मानैत अछि। हम 'देह रखैत' मात्र नहि; हम देहधारी अस्तित्व छी।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

कोष्ठकीकरणक विधि अपन पूर्वानुमानकेँ अस्थायी रूपसँ रोकबाक प्रयत्न अछि; ई निष्कर्ष निकालबाक सम्पूर्ण निषेध नहि। अनुभूतिक सजीव वर्णन असमान सत्ता-सम्बन्धक ऐतिहासिक कारण स्वतः खोजि नहि दैत। अनुभवक विश्वसनीयता आ ऐतिहासिक व्याख्याक प्रमाणभार अलग अछि। एहि दोसर कार्य लेल न्याय, समाजशास्त्र आ इतिहासक साधन आवश्यक।

मूल पाठक साक्ष्य **(34.9 आशयिता: चेतना सदैव किछुक चेतना) :**

"प्रघटनावादक मूल सूत्र अनुसार चेतना खाली पात्र नहि; देखब, स्मरण, चाहब, डरब वा कल्पना करब सदैव किछु दिस उन्मुख अछि। वस्तु चेतनामे एकहि बेर पूर्ण नहि भेटैत; दृष्टिकोण, स्मृति आ सम्भावित अगिला अनुभवसँ ओकर अर्थ बनैत अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मिथिला-आधारित श्रम, भाषा आ स्त्रीक अनुभवकेँ प्रघटनावादी प्रश्नद्वारा सुनब उपयोगी अभ्यास हो सकैत अछि, मुदा एहन अनुप्रयोग विशेष व्यक्तिक कथन आ सामाजिक साक्ष्य बिना मनगढ़न्त नहि कएल जाए। एहि कारण समानान्तर दार्शनिक तुलना विधिक सम्भावना अछि, बनल-बनाओल अनुभवजन्य निष्कर्ष नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 34; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 35 : विश्लेषणात्मक दर्शन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 35 ‘‘विश्लेषणात्मक दर्शन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 35, ‘‘Analytic Philosophy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

विश्लेषणात्मक दर्शन भाषा, तार्किक रूप, ज्ञान आ मनक समस्याक परिशुद्ध विश्लेषणपर बल दैत अछि। मुदा फ्रेगे, रसेल, मूर आ आरम्भिक–उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइनक मत एकरूप नहि। अध्यायक सूत्र अछि जे दार्शनिक विवादक बहुत हिस्सा प्रश्नक अर्थ, वाक्यक तर्कीय रूप वा सामान्य उपयोगक अस्पष्टतासँ उत्पन्न होइत अछि; तकर अर्थ प्रत्येक अस्तित्वगत अथवा राजनीतिक प्रश्न केवल भाषिक भूल नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(35.1** भाषा आ तर्कक नूतन मोड़**) :** “फ्रेगे आधुनिक तर्कमे कथनक संरचना, फलन, परिमाणक आ अर्थ–सन्दर्भक भेद विकसित कएलनि। रसेल वर्णनक विश्लेषण द्वारा देखेलनि जे व्याकरणिक रूप आ तार्किक रूप अलग भऽ सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

रसेलक वर्णन-सिद्धान्त आ विट्गेन्स्टाइनक प्रारम्भिक तार्किक चित्रात्मकता अलग प्रश्न रचैत अछि। उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइनक भाषा-प्रयोग आ निजी भाषाक प्रश्न भाषा समुदायमे अर्थ-निर्धारणक भूमिका देखबैत अछि। ‘समस्या विलीन’ बनाम ‘समस्या हल’क भेद जरूरी: एकटा अवधारणात्मक छाया हटला पर प्रश्न अदृश्य भऽ सकैत अछि, मुदा सामाजिक वास्तविकताक तथ्यात्मक संकट बाँचि सकैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (35.5 तर्क आ नैतिकता) : “विश्लेषणात्मक दर्शन केवल भाषा-क्रीड़ा नहि। आधुनिक नैतिकता, राजनीतिक दर्शन, मन-दर्शन, विज्ञान-दर्शन आ ज्ञानमीमांसाक बहुत भाग एहि परम्पराक भीतर विकसित भेल।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

सर्वोच्च गुण रूपमे स्पष्टता स्थापित कएल जाए तँ नैतिक पीड़ा, सौन्दर्यगत अनुभव अथवा अन्यायगत आक्रोशकेँ आंशिक रूपेँ ही व्यक्त कऽ सकब। एतय विश्लेषणात्मक पद्धतिक आवश्यकता कम नहि होइत; एकर क्षेत्र सीमित रूपसँ निर्धारित होइत अछि। दार्शनिक तर्कको विद्युत् प्रयोग सन मापनीय निष्कर्ष मानब श्रेणीदोष होयत।

मूल पाठक साक्ष्य (35.10 तर्कीय रूप आ साधारण भाषा) :

“विश्लेषणात्मक दर्शनक एक धारा साधारण वाक्यक पाछाँ तर्कीय रूप खोजैत अछि। व्याकरणिक सतह कखनो अस्तित्व वा सम्बन्धक विषयमे भ्रम उत्पन्न करैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

नव्य-न्याय आ विश्लेषणात्मक दर्शनक सूक्ष्म सम्बन्ध-विभाजन तुलनीय अछि, मुदा विद्यालय, ऐतिहासिक पदावली आ प्रमाण-पद्धतिमे व्यापक भिन्नता रहल अछि। अध्याय २३ सँ एतय महत्वपूर्ण संवाद स्थापित होइत अछि। समानान्तर दृष्टि दुनू परम्परासँ स्पष्टता ग्रहण करैत अछि, कुनूकेँ दोसरक पूर्वज अथवा प्रतिलिपि घोषित नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 35; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 36 : व्यवहारवाद

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 36 ‘‘व्यवहारवाद’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 36, ‘‘Pragmatism’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

व्यवहारवादक प्रमुख प्रश्न ‘विचारक व्यावहारिक अर्थ कोना चिन्हब’ अछि। पियर्स, जेम्स आ डचूई अलग-अलग सन्दर्भमे संशय, विश्वास, सत्य, शिक्षा आ लोकतान्त्रिक अन्वेषणक चर्चा करैत छथि। ग्रन्थ ‘जे तुरन्त लाभ दे से सत्य’क गलत लोकप्रिय व्याख्या नकारैत अछि। परिणामक महत्त्व वास्तविक अन्वेषण आ परीक्षणक कड़ी मे अछि, सुविधा-साधनक नाममे नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(36.1** अर्थ आ व्यावहारिक परिणाम**) :** “पियर्सक प्राग्मैटिक सूत्रक मूल भावना ई अछि जे कोनो अवधारणाक अर्थ बुझबाक लेल देखू जे व्यावहारिक भेद ओ अवधारणा सम्भव अनुभव अथवा क्रियामे उत्पन्न करैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

पियर्सक अर्थ-स्पष्टता अवधारणाक संभावित व्यवहारिक परिणाम चिन्हबैत अछि। डचूई ज्ञानकेँ समाजमे समस्या सुलझेबाक सार्वजनिक प्रक्रिया मानैत छथि। सामाजिक प्रयोगक आवृत्ति, विरोधी साक्ष्यक स्वीकृति आ संशोधनक सम्भावना बिना व्यवहारवाद मात्र उपयोगितावादक अस्पष्ट प्रशंसा बनि जाएत। अध्याय एहि अनुशासनक संकल्पनाकेँ राजनीतिक शिक्षासँ जोड़ैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(36.4** व्यवहारवाद आ नैतिकता**) :** “कोनो नीति सिद्धान्ततः न्यायपूर्ण कहल गेल, मुदा व्यवहारमे निरन्तर किछु समूहकेँ अपमानित, बहिष्कृत अथवा असहाय बनबैत अछि, तँ नीति पुनः परीक्षण योग्य अछि। परिणाम नैतिक तर्कक एक महत्त्वपूर्ण भाग अछि। मुदा परिणाम एकमात्र कसौटी नहि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

नैतिक निर्णयमे परिणामक गणना महत्वपूर्ण होइतहुँ अधिकार आ गरिमाक सीमा नष्ट नहि भऽ सकैत। जँ कोनो अल्पसंख्यकक शोषणसँ बहुसंख्यककेँ लाभ भेटय, तखन सुविधा-आधारित तर्क उचितता सिद्ध नहि करैत। व्यवहारिक फल आ न्यायसंगत फलक भेद सार्वजनीन नैतिकता लेल अत्यन्त आवश्यक अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(36.7 प्राग्मैटिक अर्थ-स्पष्टता) :** “कोनो अवधारणाक व्यावहारिक परिणाम की हो सकैत अछि से सोचला पर ओकर अर्थ स्पष्ट होइत अछि। ‘वस्तु कठोर अछि’क अर्थ सम्भावित स्पर्श, दबाव आ व्यवहारमे खुलैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

भारतीय न्यायीय व्यावहारिक सफलताक चर्चा अथवा मीमांसाक विधिप्रयोगसँ तुलना सम्भव अछि, मुदा पियर्सक संशय-चक्र संग तादात्म्य सिद्ध नहि। समानान्तर दर्शन एहि अध्यायसँ बुद्धिगत विनम्रता आ जीवनगत परिणामक समीक्षा ग्रहण करैत अछि। सैद्धान्तिक उचितताक व्यावहारिक परख कएल जाउ, मुदा परिणामक अर्थ नैतिक कसौटी के बिना तय नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 36; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 37 : विज्ञान-दर्शन

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 37 ‘‘विज्ञान-दर्शन’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 37, ‘‘Philosophy of Science’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

विज्ञान-दर्शनक अध्याय विज्ञानकेँ तथ्यक बन्द सूची नहि, मापन, सिद्धान्त, परीक्षण, आलोचना आ पुनरुत्पादनक सार्वजनिक विधि मानैत अछि। अवलोकन सिद्धान्तनिरपेक्ष शुद्ध आँखि नहि; उपकरणक अंशांकन, अवधारणा आ व्याख्याक मध्यस्थता सदैव रहि सकैत अछि। मुदा एहिसँ तथ्य मनमाना नहि भऽ जाइत। अवलोकनक शर्त स्पष्ट करब वैज्ञानिक विश्वसनीयताक आवश्यकता अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(37.1 विज्ञानक विशेषता की?) :** “दार्शनिक प्रश्न अछि —विज्ञानकेँ गैर-विज्ञानसँ अलग करयवला कसौटी की? केवल प्रयोग? खगोलविज्ञानक बहुत निष्कर्ष प्रत्यक्ष नियंत्रित प्रयोग बिना बनैत अछि। केवल गणित? जीवविज्ञानक अनेक क्षेत्र गणितीय होइतहुँ अवलोकन-प्रधान अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

खण्डनीयता आ कूनक प्रतिमान-विचार शोधपरम्पराक परिवर्तनक अलग आयाम बतबैत अछि। एकटा सिद्धान्तक कठिन परीक्षण चाही, मुदा एकटा प्रतिकूल निरीक्षण मात्रसँ सम्पूर्ण अनुसंधान परम्परा सदा तुरन्त खण्डित नहि होइत। प्रयोग, सांख्यिकी, तर्क, सहायक परिकल्पना आ समुदायगत निर्णयक जटिल सम्बन्ध अछि। विज्ञानमे परिवर्तनक सम्भावना सत्यक नकार नहि, स्वयं संशोध्य ज्ञानक शक्ति अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(37.5 कारणता, आगमन आ अनिश्चितता) :** “विज्ञान केवल सहसम्बन्ध नहि, कारणात्मक व्याख्या खोजैत अछि। नियंत्रित प्रयोग,

प्राकृतिक प्रयोग, सांख्यिकीय मॉडल, यान्त्रिक व्याख्या आ विविध विधिसँ कारणता जाँचल जाइत अछि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

वैज्ञानिक यथार्थवाद आ उपकरणवादक भेद एहन प्रश्न उठबैत अछि जे अनुपलब्ध सूक्ष्म संस्थाक वर्णन वास्तविक सत्ता-वस्तुक होइत अछि कि सफल पूर्वानुमानक साधन? वैज्ञानिकतावाद हर नैतिक प्रश्नकेँ वैज्ञानिक सिद्धान्तसँ निकालबाक प्रयत्न करैत अछि; विज्ञानविरोध उपलब्ध प्रामाणिक साक्ष्यकेँ अस्वीकार करैत अछि। ग्रन्थ दुनूसँ सावधान रहैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(37.9 सिद्धान्त-निर्भर अवलोकन) :** "वैज्ञानिक जे देखैत छथि ओ उपकरण, प्रशिक्षण आ अवधारणासँ प्रभावित होइत अछि। दूरबीनक छवि, सूक्ष्मदर्शी नमूना वा आँकड़ा-पट्टिका साधारण नयन-दर्शन नहि; संकेत पढ़बाक सिद्धान्त चाही। एहि कारण 'निर्मल तथ्य'क धारणा सरल नहि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सांख्यक गुण, वैशेषिकक परमाणु, योगक स्वास्थ्य-प्रयोग आ लोकज्ञानक प्राकृतिक दावाक सावधान तुलना लेल एहि अध्यायक वैज्ञानिक पद्धति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। शास्त्रीय तत्त्वमीमांसाक गम्भीरता सम्माननीय होइतहुँ ओकर प्रत्येक पद आधुनिक प्रयोगजन्य तत्त्व स्वतः नहि। समानान्तर दर्शनक प्रमाण-कसौटी एतय कठोर व्यवहारिक परीक्षण पबैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 37; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 25-37 : तुलनात्मक निष्कर्ष

प्राचीन यूनानी बहुलतासँ आधुनिक यूरोपीय ज्ञानमीमांसा, इतिहास-दर्शन, श्रम-दर्शन, अस्तित्वगत निर्णय, भाषा-विश्लेषण आ विज्ञान-दर्शन धरि अध्याय २५–३७क यात्रा विचारक ऐतिहासिक छलाँग नहि, समस्या-संरचनाक अनुशासन माँगैत अछि। विशेषतः भारतीय नव्य-न्याय आ यूरोपीय परम्पराक तुलनामे समान अर्थक पदक इतिहासगत भिन्नता सुरक्षित रहबाक चाही।

अध्याय 38 : व्यक्ति आ समाज

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 38 ‘‘व्यक्ति आ समाज’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 38, ‘‘The Individual and Society’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

व्यक्ति जन्मतहि सामाजिक सम्बन्धक भीतर प्रवेश करैत अछि, पर एकरा समाजक यन्त्रवत् उत्पाद मानब तर्कसंगत नहि। भाषा, मान्यता, शिक्षा, पारिवारिक सम्बन्ध आ अवसर व्यक्ति केँ आकार दैत अछि; व्यक्तिक प्रतिप्रश्न आ असहमति पुनः समाज बदलैत अछि। अध्याय सामाजिक निर्माण आ व्यक्तिक नैतिक स्वायत्तता दुनूकेँ स्वीकारैत अछि। एहि सन्तुलन बिना समाजशास्त्रीय विवरण नियतिवाद बनि सकैत अछि आ व्यक्तिवादी दावा सामाजिक अनुभवसँ कटि जाइत।

मूल पाठक साक्ष्य **(38.1 सामाजिक रूपसँ निर्मित व्यक्ति) :** “जन्मक बाद बच्चा कोनो तैयार “स्वतंत्र आत्म” रूपमे सामाजिक अर्थ बिना नहि रहैत। भाषा सिखैत, सम्बन्ध बनबैत, नियम बुझैत, अपन देह आ पहिचानक सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत व्यक्ति बनैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

समुदायक सदस्यतामे आश्रय, विश्वास आ अर्थ भेटैत अछि, मुदा समुदाय अपन सदस्यक सम्मान आ निजताक अतिक्रमण सेहो कऽ सकैत अछि। सामाजिक भूमिकाक भेद आत्मपहिचानक एकमात्र आधार नहि; परिवार, पेशा, जाति आ लिंगक भूमिका व्यक्ति स्वयं आलोचित कऽ सकैत अछि। डिजिटल समाजक उदाहरण सामाजिक मान्यता आ निजी अवकाशक नूतन परिस्थिति दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(38.6 डिजिटल समाज) :** “डिजिटल माध्यम व्यक्तिक सामाजिकता नूतन रूप देलक। नेटवर्क समुदाय, एल्गोरिथ्मिक दृश्यता, समूह-

पहिचान, ऑनलाइन अपमान, सामूहिक स्मृति आ दुष्प्रचार व्यक्ति-समाज सम्बन्धकेँ बदलैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष पुछैत अछि जे व्यक्ति पूर्ण सामाजिक रूपसँ निर्मित होथि तँ हुनकर दोषक उत्तरदायित्व ककर? सामाजिक कारणक विश्लेषण नैतिक दायित्वक सम्पूर्ण निरसन नहि। व्यक्ति कखन विकल्प पबैत छथि, कखन बलपूर्वक बाध्य छथि, आ निर्णयक संस्थागत लागत की अछि—एहि अन्तरकेँ अलग प्रमाणसँ जाँचब आवश्यक। एहि कारण समानान्तर दर्शन सामाजिक संवेदनशीलतासँ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत।

मूल पाठक साक्ष्य (38.7 सामाजिक व्यक्तिक निर्माण) : “व्यक्ति जन्मसँ तैयार आत्मनिर्भर एकक नहि। भाषा, देखभाल, परिवार, विद्यालय, श्रम आ सार्वजनिक मान्यता ओकर क्षमता बनबैत अछि। एहि सामाजिक निर्माणक अर्थ व्यक्ति भ्रम अछि नहि; बल्कि व्यक्तित्व सम्बन्धक माध्यमसँ वास्तविक बनैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

अस्तित्ववादक स्वतन्त्र चुनाव आ मार्क्सक सामाजिक स्थिति बीच एहि अध्यायमे उपयोगी संवाद अछि। ‘गरिमा’क प्रत्यय व्यक्ति कँ समुदाय मे सम्मान दैत अछि, मुदा समुदायकेँ सर्वोच्च नैतिक अधिकार नहि बनबैत। एहि दृष्टिसँ सामाजिक दर्शनक बाकी अध्यायसभ राज्य, अधिकार, अवसर आ न्यायक संस्थागत शर्त बुझबैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 38; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 39 : राज्यक औचित्य

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 39 ‘‘राज्यक औचित्य’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 39, ‘‘The Justification of the State’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

राज्य दण्ड, कर, कानून आ वैध बलक अधिकार रखैत अछि; एतेक शक्ति लेल उचित सार्वजनिक कारण चाही। हॉब्सक सुरक्षाक प्रश्न, लॉकक अधिकारक दिशा आ रूसोक स्वशासनक आदर्श अलग औचित्य प्रस्तुत करैत छथि। अध्याय एहि विभेदकेँ एकहि ‘सामाजिक अनुबन्ध’क अस्पष्ट सहमतिमे नहि मिलबैत। वैधानिक आदेश आ नैतिक वैधताक भेद राज्यक आलोचनात्मक परीक्षणक आरम्भ अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(39.1 सुरक्षा: हॉब्सक प्रश्न) :** “हॉब्स असुरक्षित अवस्थाक भय देखबैत मजबूत सार्वभौम सत्ताक औचित्य खोजैत छथि। सुरक्षा निश्चय राजनीतिक जीवनक आधारभूत आवश्यकता अछि। मुदा केवल सुरक्षा पर्याप्त नहि। जेल सेहो अत्यन्त सुरक्षित भऽ सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र समाज नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

सहमति कहब सहज अछि, मुदा जन्मजात नागरिकता, अपर्याप्त विकल्प आ राज्यक सीमासँ बाहर प्रवासनक अवस्थामे सहमतिक तथ्यात्मक स्थिति जटिल होइत अछि। कानूनक शासन शक्ति सीमित कऽ सकैत अछि; ताहि कारण कानून स्वयं पर्याप्त नैतिक औचित्य नहि। करक पारस्परिक दायित्व, न्यायिक पहुँच आ कल्याणकारी जिम्मेदारी नागरिकता सँ जुड़ैत अछि। स्थानीयता आ संघीय व्यवस्थाक चर्चा सत्ता-विकेन्द्रणक सम्भावना खोलैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(39.6 न्यूनतम राज्य कि कल्याणकारी राज्य?) :** “एक मत कहैत अछि राज्य मुख्यत: सुरक्षा, अनुबन्ध आ अधिकार-सुरक्षा धरि

सीमित रहय। दोसर मत कहैत अछि वास्तविक स्वतंत्रता लेल शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा आ न्यूनतम आर्थिक अवसर आवश्यक, तँ राज्यक सकारात्मक भूमिका चाही।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘सुरक्षा लेल असीम सत्ता आवश्यक’क पूर्वपक्ष इतिहासगत भयक आधार पर प्रभावी लगि सकैत अछि। मुदा असीम सत्ता सुरक्षा-दाता स्वयं भयक स्रोत बनि सकैत अछि; ताहि लेल सार्वजनिक जाँच, अधिकारक संरक्षण आ विरोधक वैधता जरूरी अछि। विशेषज्ञ राज्य नागरिकक स्थानपर नैतिक निर्णय सम्पूर्ण रूपसँ नहि करि सकैत। सूचनाक अपूर्णता स्वीकार करब प्रशासनक कमजोड़ी नहि, वैध शासनक उचित आत्मसीमा अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(39.16 पूर्वपक्ष: सुरक्षा लेल असीम सत्ता चाही) :** “संकटमे त्वरित निर्णयक आवश्यकता देखाकऽ कहल जाइत अछि जे कार्यपालिका कैं व्यापक, लगभग असीम शक्ति देल जाए। विलम्ब हानि बढ़ा सकैत अछि; सामान्य प्रक्रिया हर स्थिति लेल पर्याप्त नहि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

व्यक्ति–समाजक अध्याय ३८ सँ राज्यक संस्थागत रूप धरि सन्धि एतय बनैत अछि। समानान्तर दर्शन राज्यकैं न शत्रु न स्वामी मानैत अछि; सार्वजनिक औचित्यक अधीन उत्तरदायी संस्था। बादक लोकतन्त्र-अध्याय एहि दाबीक प्रक्रियागत जाँच करेगा।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 39; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 40 : स्वतंत्रता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 40 ‘‘स्वतंत्रता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 40, ‘‘Freedom’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

स्वतन्त्रता केवल कानूनद्वारा निषेधक अभाव नहि। भूख, ऋण, जातिगत डर, संसाधनक अभाव आ लैंगिक असुरक्षा औपचारिक अधिकार रहितहुँ व्यवहारिक विकल्प संकुचित करैत अछि। अध्याय नकारात्मक आ सकारात्मक स्वतन्त्रता, स्वायत्तता आ प्रभुत्वसँ मुक्ति अलग रखैत अछि। एहि वर्गीकरणक महत्त्व वास्तविक बाधाक मापन योग्य बनायब अछि, ‘स्वतन्त्रता’क भावुक प्रशंसा नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(40.1** नकारात्मक स्वतंत्रता**) :** “नकारात्मक स्वतंत्रताक मूल प्रश्न—कौन हमरा रोकि रहल अछि? अनावश्यक दमन, सेंसरशिप, मनमाना गिरफ्तारी, धार्मिक बाध्यता, आवागमन-निषेध, विवाह-चयन पर बल —ई सभ स्वतंत्रताक प्रत्यक्ष बाधा अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मिलक हानि-सिद्धान्त व्यक्तिगत काजमे हस्तक्षेपक सीमा पूछैत अछि, मुदा ‘हानि’क अर्थ समाजमे सर्वसम्मत नहि होइत। अभिव्यक्ति, निजता, संघ बनायब आ संघ छोड़बक अधिकारक बीच टकराव सम्भव। डिजिटल निगरानी अथवा ऋणग्रस्त श्रमिकक निकासक प्रश्न आधुनिक रूपमे प्रभुत्वक अनुभव दैत अछि। विकल्पक संख्या अनेक रहि कऽ हुनकर वास्तविक गुणवत्ता न्यून भऽ सकैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(40.6** मिलक हानि-सिद्धान्त**) :** “जॉन स्टुअर्ट मिलक प्रसिद्ध दिशा ई अछि जे सभ्य समाजमे व्यक्तिपर बलपूर्वक रोक मुख्यतः दोसराकेँ हानि सँ बचाबय लेल उचित ठहरि सकैत अछि। ई सिद्धान्त

अभिव्यक्ति, जीवन-शैली आ व्यक्तित्वक विविधताक शक्तिशाली रक्षा करैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष स्वतन्त्रताकेँ केवल संवैधानिक कानूनी विषय मानैत अछि। मुदा जातिगत बहिष्कार अथवा घरेलू नियन्त्रण राजकीय प्रतिबन्ध बिना सेहो वास्तविक अनुशासन बनि सकैत अछि। विपरीत पक्षमे प्रत्येक सामाजिक अप्रीतिकेँ स्वतन्त्रताक कानून-विरुद्ध हनन मानब भ्रमित करत। न्यायसंगत समीक्षा वास्तविक बाधा, कर्ता, लागत आ वैकल्पिक उपाय अलग चिन्हैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(40.17 पूर्वपक्ष: स्वतंत्रता केवल कानूनक विषय अछि) :** “आपत्ति अछि जे राज्यक काज हस्तक्षेप रोकब; गरीबी, सामाजिक भय वा पारिवारिक दबावकेँ स्वतंत्रताक प्रश्न बनाओलासँ राज्य सभ जीवनमे प्रवेश करत। सीमा अस्पष्ट भऽ जायत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्यक औचित्यक अध्याय ३९ सँ स्वतन्त्रताक सम्बन्ध घनिष्ठ अछि। शासन नागरिकक सुरक्षा करय, मुदा सुरक्षा नामपर सर्वव्यापी नियन्त्रण उचित नहि। समानान्तर दर्शन दोसर व्यक्तिक समान गरिमा केँ स्वतन्त्रताक सीमा मानैत अछि; एहि कारण अधिकार परस्पर संवादमे स्थापित होइत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 40; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 41 : समानता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 41 ‘‘समानता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 41, ‘‘Equality’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

समानता आ एकरूपता अलग दार्शनिक अवधारणा छथि। समान नैतिक दर्जाक स्वीकारसँ प्रत्येक मनुष्यकेँ एकहि क्षमता, इच्छा वा जीवन-योजना अपनबाक आदेश नहि निकलैत। औपचारिक समान अवसर आ सामाजिक संसाधनसँ निर्मित वास्तविक अवसरक अन्तर अध्यायक मूल समाजदर्शी प्रतिज्ञा अछि। अवसर खुलल घोषित करब पर्याप्त नहि, जँ प्रवेश-पथकेँ ऐतिहासिक वंचना, विद्यालयीय असमानता आ सामाजिक भय रोकैत हो।

मूल पाठक साक्ष्य **(41.1 समानता आ एकरूपताक भेद) :** “दू व्यक्तिक प्रतिभा, रुचि, देह, भाषा, पारिवारिक परिस्थिति आ जीवन-योजना भिन्न भऽ सकैत अछि। समानता एहि भिन्नताकेँ मिटाबय नहि चाहैत। एकर लक्ष्य ई हो जे भिन्नता अपमान, नागरिक हीनता वा जन्मगत अधीनताक आधार नहि बनय।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

संसाधनवितरण, क्षमता आ सम्बन्धात्मक सम्मान समानता केँ अलग स्तर पर समझबैत अछि। आँगनक दरवाजा सभ लेल खुलल हो, मुदा किछु व्यक्ति प्रवेशधरि पहुँचि नहि सकथि—एहन स्थिति कानूनी समताक सीमा सूचित करैत अछि। आरक्षण आ प्रतिकारक औचित्यक विश्लेषण एहि पृष्ठभूमिमे कएल गेल अछि, जे जन्मसँ बनल बाधाक इतिहासकेँ सार्वजनिक प्रमाणसँ जाँचब चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(41.5 सम्बन्धात्मक समानता) :** “समानता वितरणक प्रश्न मात्र नहि; सम्बन्धक प्रश्न सेहो अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘समानता उत्कृष्टता घटबैत अछि’क आपत्ति पर उचित उत्तर ई नहि जे क्षमता आ उपलब्धि एक समान अछि। प्रश्न अछि प्रतिभाक विकासक आरम्भिक शर्त, मूल्याङ्कनक निष्पक्षता आ पूर्ववर्ती असमानताक प्रभाव की अछि। उत्कृष्टता आ समान सम्मानक संयुक्त सम्भावना उचित सामाजिक नीति माँगैत अछि। नीतिगत परिणामक जाँच अलग आँकड़ा चाहैत अछि; दार्शनिक घोषणा मात्र प्रभावक सिद्धि नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(41.6** औपचारिक आ वास्तविक समानता**) :** “एकहि नियम सभपर लागू होयब औपचारिक समानता अछि। मुदा जँ आरम्भिक संसाधन, सामाजिक जोखिम आ पहुँच बहुत भिन्न हो, तँ समान नियम असमान परिणाम स्थिर करि सकैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

स्वतन्त्रताक अध्याय ४० सँ समानताक सम्बन्ध स्पर्धा मात्र नहि। वास्तविक विकल्पक अनुपस्थिति स्वतन्त्रता आ समानता दुनू घटबैत अछि। समानान्तर दर्शन जन्मकेँ नैतिक पात्रता नहि मानैत; एहि सूत्रक कठोर सामाजिक परीक्षा आगामी जाति-विमर्शमे सामने आएत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 41; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 42 : न्याय

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 42 ‘‘न्याय’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 42, ‘‘Justice’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

न्यायक दायरा वितरणसँ विस्तृत अछि: अधिकार, मान्यता, प्रतिनिधित्व, उचित प्रक्रिया, ऐतिहासिक सुधार आ दण्डविधान सभकेँ एक संग देखबाक आवश्यकता अछि। रॉल्सक निष्पक्षताक तर्क व्यक्तिक आकस्मिक सामाजिक स्थानसँ परे नियम चुनबाक अनुशासन दैत अछि, मुदा अज्ञान-आवरण वास्तविक इतिहासक पूर्ण विकल्प नहि। अध्याय एहि सिद्धान्तक उपादेयता संग ओकर अंशिकता स्वीकारैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(42.1 न्याय: व्यक्ति सँ संस्था धरि) :** “व्यक्ति न्यायपूर्ण वा अन्यायी व्यवहार कऽ सकैत अछि; कानून आ संस्था सेहो। आधुनिक समाजमे कर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, पुलिस, न्यायालय, चुनाव, श्रम-बाजार आ परिवारक नियम जीवन-अवसर गढ़ैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

न्यायमे ककर वस्तु बाँटल जाए—धन, अवसर, शिक्षा, सम्मान वा निर्णयक स्वर—एहि प्रश्नक अलग परिणाम अछि। क्षमता-दृष्टि न्यूनतम संसाधनक प्राप्तिकेँ वास्तविक जीवनगत स्वतन्त्रतासँ जोड़ैत अछि। प्रक्रियात्मक न्याय उचित सुनवाइ चाहैत अछि, पर सही प्रक्रिया स्वयं न्यायपूर्ण परिणामक गारंटी नहि। दण्डात्मक आ पुनर्स्थापनात्मक न्यायक भिन्न उद्देश्यमे हानि, उत्तरदायित्व आ सामाजिक पुनर्निर्माणक प्रश्न पृथक् अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(42.6 सुधारात्मक आ ऐतिहासिक न्याय) :** “अतीतक अन्याय वर्तमान संरचना बनि कऽ जीवित रहि सकैत अछि। भूमि-वंचना,

दासता, जाति-बहिष्कार, शिक्षा-निषेध, स्त्रीक सम्पत्ति-वंचना—एहि इतिहासक प्रभाव पीढ़ी पार जा सकैत अछि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

'निष्पक्ष नियम' सभपर समान लागू भेला मात्र न्याय पूर्ण नहि होइत, जँ नियमक मूल निर्माण विशेष समूहक लाभ लेल भेल हो। इतिहासक अपमान आ प्रतिनिधित्वहीनता प्रक्रियाक विश्वसनीयता प्रभावित करैत अछि। मुदा ऐतिहासिक सुधारक नामपर वर्तमान व्यक्तिपर असीम सामूहिक दोष आरोपित करबो न्यायसंगत नहि। प्रत्येक उपाय उद्देश्य, प्रमाण, अनुपात आ परिणामक कसौटी माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(42.7 वितरणक वस्तु की?) :** "न्याय केवल धन बाँटबाक प्रश्न नहि। अधिकार, अवसर, सम्मान, समय, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य आ राजनीतिक आवाज सेहो वितरित होइत अछि। समान आयवला दू व्यक्तिक वास्तविक स्वतंत्रता देह, देखभालक बोझ वा सामाजिक भेदभाव कारण अलग भऽ सकैत अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्य, स्वतन्त्रता आ समानताक तीन पूर्व अध्याय न्याय-विवेचनमे एकत्र होइत अछि। समानान्तर दर्शन गरिमा आ सार्वजनिक औचित्यक संयुक्त सिद्धान्त प्रस्तावित करैत अछि। एहि सिद्धान्तकेँ जाति, वर्ग, स्त्रीक श्रम आ क्षेत्रीय भाषाक वस्तुगत अनुभव पर जाँचना तकर अगिला आवश्यकता बनैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 42; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 43 : जाति आ सामाजिक पदानुक्रम

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 43 ‘‘जाति आ सामाजिक पदानुक्रम’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 43, ‘‘Caste and Social Hierarchy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

जातिक अध्ययन व्यक्तिगत घृणाक निन्दा भरि नहि, विवाह, श्रम, शिक्षा, निवास आ ज्ञानक संस्थागत क्रमक विश्लेषण अछि। जन्म सामाजिक दर्जा निर्धारित करैत अछि—ई मूलभूत रूपसँ समान गरिमाक विरोधी विचार अछि। अध्याय अम्बेडकरक ‘श्रमक विभाजन’ आ ‘श्रमिकक विभाजन’क प्रश्न चिन्हैत अछि, जाहिसँ जाति आर्थिक कार्य-विभाजनक सहज नाम नहि रहैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(43.1 जन्म आ नैतिक योग्यता) :** “समानान्तर दर्शनक उत्तर स्पष्ट अछि—जन्म नैतिक योग्यता नहि। कोनो परम्परा मनुष्यक समान गरिमाकेँ नकारैत हो तँ परम्पराक आलोचना नैतिक रूपसँ उचित अछि। परम्परा पुरान होयब ओकर ऐतिहासिक महत्त्व सिद्ध करैत अछि; नैतिक उचितता नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अस्पृश्यता देह, स्थान आ सम्पर्कक अधिकारपर कार्य करैत अछि। जातिक माध्यमसँ शास्त्रीय अध्ययन अथवा लोकवृत्तान्तमे ककर आवाज सुरक्षित रहल, ई ज्ञानमीमांसक प्रश्न सेहो उठैत अछि। रोजमर्रा भेदभावक दाबी साक्ष्यद्वारा अध्ययनयोग्य अछि; बिना संदर्भक मनगढ़न्त घटना जोडब गंभीर अनुचित होयत। अध्याय ऐतिहासिक संरचना वर्णन करैत अछि, व्यक्तिगत उदाहरणक पूर्ण क्षेत्र-सर्वेक्षण नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(43.5 कानून आ सामाजिक परिवर्तन) :** “कानून आवश्यक अछि—भेदभाव निषिद्ध करब, अधिकार देब, प्रतिनिधित्व सुनिश्चित

करब। मुदा सामाजिक आदत, विवाह-नेटवर्क, आर्थिक निर्भरता, भाषिक अपमान आ सांस्कृतिक प्रतिष्ठा केवल कानूनसँ तुरन्त नहि बदलैत।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘आधुनिकीकरणसँ जाति स्वतः समाप्त होयत’क पूर्वपक्ष सामाजिक सम्बन्धक पुनरुत्पादनक समस्या अनदेखी करैत अछि। कानून आवश्यक अछि, मुदा अन्तर्विवाह, आवासीय पृथक्करण आ संस्थागत प्रतिष्ठा तात्कालिक रूपेँ समाप्त नहि भऽ सकैत। कखन कानून सफल भेल, कखन सीमित, से प्रमाणक विषय अछि। समान गरिमाक नैतिक दाबी सुदृढ़ अछि; ओकर लागू नीतिक मूल्याङ्कन अलग साक्ष्य माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(43.6** जातिक परिभाषामे सावधानी**) :** “जातिकेँ केवल पेशा, केवल वर्ण, केवल विवाह-समूह वा केवल धार्मिक धारणा कहब अधूरा अछि। स्थानीय समुदाय, अन्तर्विवाह, श्रम-विभाजन, शुद्धि-अशुद्धि, दर्जा, भूमि आ राजनीतिक शक्ति भिन्न प्रसंगमे अलग भूमिका रखैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

समानताक अध्याय ४१ आ न्याय अध्याय ४२ एहि अध्यायक कसौटी बनैत छथि। समानान्तर दर्शनक नीति जन्मक आधार पर अधिकार अथवा अपमानक औचित्य अस्वीकार करैत अछि। अध्याय ४९क आम्बेडकर विमर्श एही सिद्धान्तकेँ ऐतिहासिक लेखन आ संविधानसम्मत प्रश्नमे विस्तृत करैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 43; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 44 : वर्ग आ आर्थिक सत्ता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 44 ‘‘वर्ग आ आर्थिक सत्ता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 44, ‘‘Class and Economic Power’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

सम्पत्ति आ उत्पादनक साधनपर नियन्त्रण सामाजिक निर्णयक सामर्थ्य बनबैत अछि। वर्गक व्याख्या केवल आयक सारिणी नहि; श्रमिकक सौदाक शक्ति, ऋण-निर्भरता, जमीन, सामाजिक सुरक्षा आ निर्णयमे सहभागिताक प्रश्न अछि। अध्याय गरीबीकेँ केवल रकमक अभाव नहि, जीवन-क्षमता आ सामाजिक जोखिमक बहुपक्षीय रूपमे देखैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(44.1 वर्गक दार्शनिक अर्थ) :** “मार्क्सवादी परम्परामे वर्ग उत्पादन-साधनसँ सम्बन्ध द्वारा बुझल जाइत अछि। मालिक आ श्रमिकक सम्बन्ध केवल आय-अन्तर नहि; निर्णय, जोखिम, श्रमक नियन्त्रण आ अधिशेषक स्वामित्वक प्रश्न अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अवैतनिक घरेलू श्रम आ देखभालक काजक मूल्यांकन करब आर्थिक सत्ता-विमर्शक जरूरी विस्तार अछि। डिजिटल मंचक असुरक्षित श्रमक चर्चा पूँजी, सूचना आ निगरानीक नव सम्बन्ध चिन्हैत अछि। मुदा प्रत्येक मंच-श्रमिकक अवस्थाक एकहि निर्णय नहि; नियोजन, अनुबन्ध आ विकल्पक वास्तविक साक्ष्य अलग चाही। श्रमक समान सम्मान आ वास्तविक मजदूरीक न्याय बीच सेहो भेद अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(44.5 वर्ग आ अन्य पहचान) :** “वर्ग विश्लेषण आवश्यक अछि, पर्याप्त नहि। जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र आ धर्म आर्थिक अवसरक वितरण प्रभावित करैत अछि। एकहि आयक दू व्यक्ति सामाजिक

सुरक्षा, विरासत, नेटवर्क वा भेदभाव कारण अलग वास्तविक स्थिति रखि सकैत छथि।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पूर्वपक्ष वर्ग-विमर्शकेँ 'ईर्ष्याक राजनीति' कहैत अछि। ककरा प्रति भावनात्मक असन्तोष अछि, एहि प्रश्नसँ सम्पत्ति-अधिकारक नियम, श्रमक उत्पादन आ अवसरक संरचना स्वतः उचित नहि भऽ जाइत। एकरे उलट धनक असमानता अपनेआप प्रत्येक अनुबन्ध शोषणपूर्ण अछि—एहन निष्कर्ष सेहो पर्याप्त नहि। प्रमाण आधारित आलोचना संसाधनक स्रोत, राजनीतिक प्रभाव आ निकासक लागतक परीक्षा करैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(44.6 श्रम आ स्वामित्व) :** "उत्पादनमे श्रम, पूँजी, भूमि, ज्ञान आ संगठन सभ योगदान दैत अछि। प्रश्न ई जे स्वामित्वक अधिकार निर्णय आ लाभपर कतेक नियन्त्रण दे, आ श्रमिकक योगदान कतेक मान्यता पाबय।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मार्क्सक अध्याय ३२ सँ ई विमर्श जुड़ैत अछि, मुदा वर्ग, जाति आ लिंगक वास्तविक अन्तर्सम्बन्धकेँ एकमात्र आर्थिक कारणमे नहि समेटल गेल अछि। गरिमा-केंद्रित समानान्तर दृष्टि संपत्ति-अधिकारक संग सामाजिक उत्तरदायित्वक संतुलन माँगैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 44; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 45 : स्त्री, लिंग आ सत्ता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 45 ‘‘स्त्री, लिंग आ सत्ता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 45, ‘‘Women, Gender, and Power’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

स्त्रीवादी दर्शन ‘मनुष्य’क सार्वभौमिक दाबीक इतिहासमे ककर अनुभव केन्द्रीय बनल छल से पूछैत अछि। निजी–सार्वजनिक सीमा, शारीरिक स्वायत्तता, अवैतनिक देखभालक श्रम, सहमतिक परिस्थिति आ राजनीतिक प्रतिनिधित्व अलग नहि, परस्पर जुड़ल सत्ता-विमर्श छथि। अध्याय स्त्रीक अनुभवकेँ दर्शनक परिशिष्ट नहि, मनुष्यक सामान्य सिद्धान्तक आत्मपरीक्षा मानैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(45.1** निजी आ सार्वजनिकक सीमा**) :** “परम्परागत राजनीतिक दर्शन राज्य आ बाजारपर केन्द्रित रहैत परिवारकेँ “निजी” क्षेत्र मानि कऽ छोड़ि देलक। मुदा परिवारमे सम्पत्ति, देखभाल, हिंसा, विवाह, प्रजनन, शिक्षा आ अवसरक वितरण होइत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

देखभालक श्रमक सामाजिक आवश्यकता मानब आ देखभाल केवल स्त्रीक नैतिक कर्तव्य ठहरायब अलग निष्कर्ष छथि। ‘सहमति’ शब्द सेहो शक्तिसम्बन्ध, आर्थिक निर्भरता आ सामाजिक भयक सन्दर्भसँ अलग पढ़ल नहि जा सकैत। ज्ञानात्मक अन्यायमे ककर गवाही कम विश्वसनीय मानल जाइत अछि, से सामाजिक संरचनाक दर्पण होयत। अन्तरविभागीयता जाति, वर्ग, लिंग आ क्षेत्रीयता संयुक्त रूपेँ अनुभव बदलैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(45.6** प्रतिनिधित्व आ ज्ञान**) :** “स्त्रीक अनुपस्थितिमे बनल सिद्धान्त किछु अनुभव अदृश्य छोड़ि सकैत अछि। एहि कारण

प्रतिनिधित्व केवल राजनीतिक सीटक प्रश्न नहि; ज्ञानक प्रश्न सेहो। ककर अनुभव “सामान्य मनुष्य”क अनुभव मानल गेल, ई दर्शनक आत्मसमीक्षाक विषय अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘समान कानूनी अधिकार भेटल, आब समस्या समाप्त’क पूर्वपक्ष औपचारिक स्वीकृति आ व्यवहारिक पहुँचक अन्तर अनदेखी करैत अछि। तथापि प्रत्येक लिंग-असमान परिणामक एकमात्र कारण जानबाक दावा बिना क्षेत्रीय साक्ष्यक नहि कएल जाए। आदर्श न्यायमूलक सिद्धान्तकेँ प्रशासनिक नीति, शिक्षा, स्वास्थ्य आ कार्यस्थलक वास्तविक परिणामसँ जाँचब जरूरी अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(45.7 जैविक भेद आ सामाजिक अर्थ) :** “देहगत भेद वास्तविक भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरासँ सामाजिक भूमिका, बुद्धि, अधिकार वा भाग्य स्वतः नहि निकलैत। समाज चुनैत अछि जे कोन भेद महत्त्वपूर्ण, कोना वर्गीकृत, आ ककरा संसाधन वा दण्डसँ जोड़ल जाए।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मैत्रेयी–गार्गीक अध्याय १८ सँ वर्तमान स्त्रीवादी विमर्शक सम्बन्ध ज्ञानक अधिकारक स्तरपर अछि; प्राचीन एकटा संवादक आधारपर सार्वत्रिक ऐतिहासिक लैंगिक समानता प्रमाणित नहि। समकालीन गरिमा-दृष्टिक जड़ विद्यमान अनुभव आ समान अधिकारक सार्वजनिक कारणमे अछि, केवल गौरवपूर्ण पुराख्यानमे नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 45; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 46 : भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 46 ‘‘भाषा, क्षेत्र आ अस्मिता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 46, ‘‘Language, Region, and Identity’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

भाषा सांस्कृतिक स्मृति आ आत्म-पहिचानक आधार छी, मुदा भाषिक अधिकारक अर्थ अन्य भाषाक अवमूल्यन नहि। मातृभाषामे शिक्षा आ प्रशासनिक पहुँचक प्रश्न समान अवसरक प्रश्न बनैत अछि। अध्याय भाषिक बाजार, मानकीकरण, लिपि, जनगणना आ डिजिटल संसाधनक असमान वितरण पर विचार करैत अछि। भाषाक शुद्धताक आग्रह जीवित भाषाक विविध व्यवहार नकारय नहि चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(46.1** भाषा आ पहिचान**) :** “व्यक्ति अनेक पहिचान एक संग धारण करैत अछि—भाषिक, क्षेत्रीय, धार्मिक, पेशागत, जातीय, लैंगिक, राष्ट्रीय। भाषिक पहिचान एहि सभमे एक महत्त्वपूर्ण आयाम अछि, मुदा कोनो एक पहिचान सम्पूर्ण व्यक्तिक पर्याय नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मानकीकरण सामान्य पाठ्यक्रम आ प्रकाशनक सुविधा दैत अछि, मुदा प्रदेशगत उपभाषा अथवा लोकभाषा के ‘अशुद्ध’ ठहरायब सामाजिक वंचनाक उपाय बनि सकैत अछि। लिपिक डिजिटल प्रयोग आ अभिलेखक उपलब्धता भाषा-उत्तरजीवनकेँ प्रभावित करैत अछि। अनुवाद ज्ञानक एकाधिकार कम करैत अछि, पर पारिभाषिक अर्थक गलत हस्तान्तरण नूतन विस्मृति उत्पन्न करैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(46.6** डिजिटल युग आ भाषिक असमानता**) :** “डिजिटल साधन छोट भाषाकेँ प्रकाशन, ध्वनि-संग्रह, शब्दकोश, ई-पत्रिका,

शिक्षा आ अभिलेखनक नूतन अवसर दैत अछि। संगहि खोज-इंजन, कृत्रिम बुद्धि आ मानकीकृत डेटा बहुल स्रोतवला भाषाकेँ अधिक लाभ देइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

एकहि राष्ट्रिय भाषा बिना एकता असम्भव—एहन पूर्वपक्ष भाषिक बहुल समाजक राजनीतिक अनुभवक जटिलता कम करैत अछि। तथापि सार्वजनिक सम्पर्क लेल साझा भाषाक सुविधा वास्तविक अछि; ओकरा वर्चस्व अथवा निषेधक कठोर द्वैत नहि बनाओल जाए। प्रश्न साझा सम्पर्कक लागत ककरा पड़ैत अछि, मातृभाषाक शिक्षण-अधिकार सुरक्षित अछि की नहि, आ अनुवादक संस्था कतय उपलब्ध अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(46.7** मातृभाषा आ सार्वजनिक क्षमता**) :** “मातृभाषा केवल भावनात्मक घर नहि; आरम्भिक शिक्षा, प्रश्न करबाक साहस आ जटिल अनुभव व्यक्त करबाक साधन अछि। बच्चा जँ ज्ञानक भाषा बुझए बिना रटैत अछि, तँ औपचारिक प्रवेश भेटितो बौद्धिक भागीदारी सीमित रहैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

समानान्तर दर्शनक मैथिली मूल आ अंग्रेजी रूपान्तर स्वयं एहि अध्यायक प्रत्यक्ष परीक्षण-भूमि अछि। शास्त्रीय तत्त्वविचारकेँ मातृभाषामे उपस्थापित करब बौद्धिक प्रवेश बढ़ा सकैत अछि; किन्तु अंग्रेजी रूपान्तरमे ज्ञान, सत्ता आ प्रमाणक अर्थबदल सेतुकेँ दुर्बल कऽ सकैत। द्विभाषिकता घोषणासँ नहि, संशुद्ध अनुवादसँ सार्थक होइत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 46; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 47 : लोकतन्त्र

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 47 ‘‘लोकतन्त्र’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 47, ‘‘Democracy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

लोकतन्त्रकेँ केवल आवधिक मतगणना मानब अधिकार, संस्था आ वैध असहमतिक भूमिकाकेँ बिसरब होयत। बहुमत निर्णयक प्राविधिक उपाय अछि, प्रत्येक बहुमत-दाबी पूर्ण नैतिक औचित्य नहि। अध्याय प्रतिनिधित्व, सूचना, संवैधानिक सीमा, सामाजिक लोकतन्त्र आ विरोधी पक्षक वैधताकेँ लोकतान्त्रिक प्रणालीक आन्तरिक शर्त मानैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(47.1 जनसत्ता आ सीमित सत्ता) :** “लोकतन्त्रक पहिल अर्थ अछि जे राजकीय सत्ता नागरिकसँ वैधता प्राप्त करैत अछि। मुदा “जनता” स्वयं एकरूप नहि। बहुमत सत्ता प्राप्त कऽ सकैत अछि, पर संविधानक मूल अधिकार एहि सत्ता पर सीमा लगबैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

विचारशील लोकतन्त्र सार्वजनिक कारण देबाक अनुशासन माँगैत अछि। गलत सूचना, धनक असमान पहुँच आ दलगत दबाव नागरिक निर्णयक वास्तविक स्वतन्त्रता बदलि सकैत अछि। चुनावक समयिक निर्णय आ सार्वजनिक नीतिक दीर्घकालिक समीक्षा अलग प्रक्रिया छथि। संस्थाक उत्तरदायित्वक अर्थ शासक बदलि सकबाक वैधानिक सम्भावना संग नागरिकक सतत भागीदारी राखब अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(47.6 सूचना आ लोकतन्त्र) :** “भ्रामक सूचना, प्रचार, कृत्रिम सामग्री आ एल्गोरिद्मिक ध्रुवीकरण लोकतान्त्रिक निर्णयकेँ प्रभावित करैत अछि। समाधान सेंसरशिप मात्र नहि; स्रोत-जाँच, मीडिया-साक्षरता, पारदर्शिता, स्वतंत्र तथ्य-परीक्षण आ नागरिक विवेक आवश्यक अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘विशेषज्ञ शासन लोकतन्त्रसँ श्रेष्ठ’क पूर्वपक्ष जटिल तथ्य-निर्णयक वास्तविक समस्या उठबैत अछि। विशेषज्ञ स्वास्थ्य, पर्यावरण वा गणनाक प्रमाण दे सकैत छथि, मुदा ककर हित प्राथमिक, लागत के वहन करय आ राजनीतिक अधिकार के राखय—एहि प्रश्नकेँ मात्र विशिष्टता हल नहि करैत। लोकतान्त्रिक विवेक विशेषज्ञ प्रमाणक उपयोग करैत अछि, ओकरा सार्वजनिक औचित्यक विकल्प नहि बनबैत।

मूल पाठक साक्ष्य (47.7 प्रतिनिधित्वक अनेक रूप) : “प्रतिनिधि क्षेत्रक लोकक समान देखाइत छथि, ओकर हित आगे बढ़बैत छथि, वा सार्वजनिक विचार-विमर्शमे उत्तरदायी छथि—प्रतिनिधित्वक ई अलग अर्थ छथि। केवल चुनाव जीतब सभ अर्थ पूरा नहि करैत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्यक औचित्य, समानता, न्याय आ भाषा अधिकारक पूर्व अध्यायसभ एहि अध्यायक संस्थागत पृष्ठभूमि बनैत अछि। प्रतिपक्षक वैधता मानब आधुनिक नागरिक शास्त्रमे न्यायक वाद-पद्धतिक पुनराविष्कार रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा शास्त्रार्थक इतिहास आ संवैधानिक संस्थाक इतिहास स्पष्ट अलग छथि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 47; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 48 : गांधी

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 48 ‘‘गांधी’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 48, ‘‘Gandhi’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

गांधीक सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज आ साधन–साध्य सम्बन्ध एकटा आन्तरिक नैतिक अनुशासन बनबैत अछि। सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतीक्षा नहि, सार्वजनिक अन्यायक विरुद्ध संयमित प्रतिरोधक दावा अछि। ग्रामस्वराज आ रचनात्मक कार्यक्रम राजनीतिक स्वाधीनताकेँ दैनिक सामाजिक जीवनसँ जोड़ैत अछि। मुदा यैह कार्यक्रम सामाजिक विभाजनक सीमासँ मुक्त अछि, से अलग परीक्षा माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(48.1 सत्य) :** “गांधी लेल सत्य केवल तथ्यात्मक शुद्धता नहि, नैतिक साधना सेहो अछि। व्यक्ति सत्यक पूर्ण स्वामी नहि; ओ सत्यक खोजी अछि। एहि कारण आत्मसमीक्षा आ प्रयोगक भाषा हुनक लेखनमे महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

अहिंसाक नैतिक शक्ति जखन विरोधीपक्ष राजनीतिक संवादक संभावना स्वीकारैत अछि, तखन स्पष्ट होइत अछि; जखन विरोधी कठोर दमन करैत अछि, तखन नैतिक साहसक मूल्य घटैत नहि, मुदा व्यवहारिक साधनक सीमा उठैत अछि। स्वयं पीड़ा सहन करब आ दोसर कमजोर व्यक्ति पर पीड़ा सहन करबाक अपेक्षा आरोपित करब समान कार्य नहि। साधन-साध्यक शुचिता हर परिणामक व्यावहारिक सम्भावना समझबो माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(48.6 जाति आ आलोचना) :** “गांधीक जाति-विषयक विचार समयक संग बदलल, मुदा एहि विषयमे आम्बेडकरक आलोचना बिना

अध्ययन अधूरा रहत। अस्पृश्यताक विरोध पर्याप्त नहि जँ जन्मगत जाति-संरचना स्वयं प्रश्नसँ बाहर रहय।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

गांधीक जाति-विचारक ऐतिहासिक परिवर्तन आ आम्बेडकरक आलोचना दुनूकेँ अध्ययनक केन्द्र बनाबय चाही। महान व्यक्तिक दार्शनिक महत्त्व हुनकर प्रत्येक सामाजिक निर्णयक निर्दोषता सिद्ध नहि करैत। अध्याय स्वयं श्रद्धा आ आलोचनाकेँ साथ रखबाक आग्रह करैत अछि; एहि लेल प्रकाशित मूल कथन आ ऐतिहासिक प्रसंगक प्रत्यक्ष स्रोत जरूरी।

मूल पाठक साक्ष्य **(48.7 सत्य आ राजनीतिक आचरण) :** "गांधीक सत्य स्थिर दाबी मात्र नहि, जीवनभरि परीक्षणक अनुशासन अछि। अपन समझ सीमित मानि विरोधीकेँ पूर्ण दानव नहि बनायब अहिंसाक ज्ञानमीमांसात्मक आधार बनैत अछि। साधन सत्यक खोजकेँ भ्रष्ट वा सुदृढ़ करि सकैत अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

स्वतन्त्रता आ लोकतन्त्रक पूर्व चर्चा गांधीपर सामान्यीकृत होइत अछि, पर सत्याग्रहक विशिष्ट नैतिक प्रक्रियासँ नूतन सवाल उठैत अछि। अहिंसा कोन परिस्थिति मे सार्वत्रिक राजनीतिक नीति बनि सकैत अछि, एहि प्रश्नक मात्र सदिच्छासँ उत्तर नहि होयत। मूल्याङ्कनमे आदर्शक सम्मानक संग सीमाक सूक्ष्मता आवश्यक।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 48; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 49 : आम्बेडकर

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 49 ‘‘आम्बेडकर’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 49, ‘‘Ambedkar’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

आम्बेडकरक सामाजिक लोकतन्त्रक विचार जन्माधारित अपमानकेँ निजी पूर्वग्रह नहि, संस्थागत सत्ता-सम्बन्ध मानैत अछि। ‘स्वतन्त्रता–समानता–बन्धुत्व’क सम्बन्धमे एकटा अधिकार बाकीसँ पृथक् पूर्ण नहि। जाति-उन्मूलनक प्रश्न सामाजिक वर्गीकरणक कारण मात्र नहि, नैतिक मनुष्यता आ सार्वजनिक संस्थाक पुनर्निर्माणक प्रश्न अछि। अध्याय सामाजिक सुधार आ राजनीतिक सुधारक पारस्परिक निर्भरता पर बल दैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(49.1 जाति: श्रम-विभाजन नहि, श्रमिक-विभाजन) :** “*Annihilation of Caste* मे आम्बेडकर जातिक आलोचना केवल आर्थिक पिछड़ापनक आधारपर नहि करैत छथि। जाति जन्मगत श्रेणी, अन्तर्विवाह, सामाजिक दूरी आ दर्जाक संरचना अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

संवैधानिक नैतिकता कानूनी दस्तावेजक शाब्दिक अनुपालनसँ विस्तृत अछि: असहमति, विधिसम्मत सीमित सत्ता आ अन्यक समान नागरिक सम्मान केँ व्यवहार बनायब जरूरी। प्रतिनिधित्व केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति नहि, स्वतंत्र आवाज आ प्रभावी निर्णय-अधिकारक मुद्दा अछि। बौद्ध धर्मक आम्बेडकरक नैतिक पुनर्पाठ धर्मकेँ सामाजिक समता-सम्बन्धी विमर्शक क्षेत्रमे आनैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(49.6 धर्म आ नैतिक समुदाय) :** “आम्बेडकर धर्मकेँ केवल निजी विश्वास नहि, सामाजिक नैतिकतासँ जोड़ि पढ़ैत छथि। जीवनक

अन्तिम चरणमे बौद्ध धर्मक स्वीकृति सामाजिक गरिमा, नैतिक समुदाय आ स्वतंत्रताक प्रश्नसँ जुड़ल छल।"

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

'संविधान अकेले सामाजिक भावना बदलि नहि सकैत'क पूर्वपक्ष उचित सीमा सूचित करैत अछि; मुदा ताहिसँ संवैधानिक संस्था व्यर्थ नहि होइत। कानून सामाजिक संघर्षक परिणाम आ तकर आगाँक सहायक दूनू हो सकैत अछि। नायकपूजाक आलोचना नीति-निर्माणमे विवेकात्मक उत्तरदायित्वक चेतावनी अछि, जे स्वयं आम्बेडकरक अध्याय पढ़ैतहुँ लागू रहबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(49.16 पूर्वपक्ष: संविधान सामाजिक भावना बदलि नहि सकैत) :** "कानून व्यवहार बाध्य करि सकैत, मनक पूर्वाग्रह नहि; तेँ सामाजिक लोकतन्त्रक लेल संविधान अपर्याप्त कहल जाइत अछि। ई आपत्ति आंशिक सत्य अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

गांधी आ आम्बेडकरक ऐतिहासिक संवादकेँ कृत्रिम समरसतामे समाप्त नहि कएल जाए। दुनूक लक्ष्यक किछु नैतिक शब्द साझा भऽ सकैत अछि, मुदा जाति-सुधार, प्रतिनिधित्व आ सामाजिक परिवर्तनक मार्गमे वास्तविक अन्तर अछि। समानान्तर दर्शन ओहि मतभेदकेँ इतिहासक अनिवार्य आलोचनात्मक आधार मानि सकैत अछि, एक विचारककेँ दोसरामे विलीन कए नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 49; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 38-49 : तुलनात्मक निष्कर्ष

व्यक्ति, राज्य, स्वाधीनता, समानता, न्याय आ समाजक असमान सत्ता-सम्बन्धपर सामान्य सिद्धान्त कतय धरि पर्याप्त अछि, आ जाति, वर्ग, लिंग, भाषा, प्रतिनिधित्व आ लोकतन्त्रक असमान अनुभव एहि सिद्धान्तकेँ कोना चुनौती दैत अछि, तकर चर्चा अध्याय ३८-४९मे देखल गेल। गांधी आ आम्बेडकरक अन्तरकेँ केवल सहमतिक आख्यानमे मिलायब अनुचित; जन्माधारित सामाजिक अपमान पर सार्वजनिक विरोधक दार्शनिक साक्ष्य तर्कक केन्द्रीय विषय बनैत अछि।

अध्याय 50 : धर्म की अछि?

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 50 ‘‘धर्म की अछि?’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 50, ‘‘What Is Religion?’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

‘धर्म’क अर्थ विश्वास, अनुष्ठान, समुदाय, पवित्र अनुभव, नैतिक संहिता आ मोक्षक विचारमे एकहि स्थायी अनुपात नहि रखैत। अध्याय परिभाषाक एहि कठिनाईकेँ दोष नहि, तुलनात्मक दर्शनक प्रथम तथ्य मानैत अछि। जँ धर्मकेँ ईश्वरविश्वास मात्र मानि ली तँ निरीश्वर धार्मिक परम्परा गलत ठाम रखल जाएत; जँ केवल सामाजिक संस्था मानि ली तँ व्यक्तिगत आध्यात्मिक अभ्यासक प्रश्न ओझर होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(50.1** परिभाषाक कठिनाई**) :** “पाश्चात्य आधुनिक “religion” शब्दक इतिहास आ भारतीय “धर्म”क अर्थक्षेत्र पूर्णतः समान नहि। धर्म कर्तव्य, नैतिक व्यवस्था, जीवन-पथ, गुण, धार्मिक परम्परा वा सामाजिक नियमक अर्थ लऽ सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

धर्मक अनुभवात्मक, संस्थागत आ नैतिक स्तर अलग पहिचानलासँ धर्मक भीतर सुधार आ अन्तर्विरोध देखब सहज होइत अछि। मिथककेँ ऐतिहासिक घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण मानब अनुचित; तथापि मिथकक सांस्कृतिक अर्थक चर्चा अर्थहीन नहि। अनुष्ठान समूह-स्मृति बनबैत अछि, मुदा वैयक्तिक सहमति आ असमान जिम्मेवारीक परीक्षण सेहो माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(50.6** धर्म आ पहिचान**) :** “धार्मिक पहिचान व्यक्ति आ समुदाय लेल भाषा, स्मृति आ सम्बन्धक स्रोत हो सकैत अछि। मुदा व्यक्ति

अपन परम्पराक भीतर असहमत, सुधारवादी, धर्म-परिवर्तित वा अधार्मिक हो सकैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘धर्म निजी मामला मात्र’क आपत्ति वास्तविक सामाजिक आयाम अनदेखी करैत अछि; धार्मिक समुदाय शिक्षा, सेवा, विवाह, सार्वजनिक उत्सव आ राजनीतिक भाषा प्रभावित करैत अछि। मुदा सार्वजनिक प्रभावक कारण राज्यकेँ धार्मिक विश्वासक सत्य-असत्य पर पक्षधर निर्णायक बनबाक अधिकार स्वतः नहि। एहिपर अध्याय ५६क राज्य-विमर्श अधिक स्पष्ट परीक्षा देत।

मूल पाठक साक्ष्य **(50.16 पूर्वपक्ष: धर्म निजी मामला मात्र अछि) :** “विश्वास अन्तःकरणक विषय अछि; तेँ धर्मकेँ पूर्ण निजी रखबाक प्रस्ताव संघर्ष घटाबय जकाँ लगैत अछि। मुदा पर्व, संस्था, विवाह, शिक्षा आ सेवा सार्वजनिक प्रभाव रखैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

पूर्व अध्यायसभक समानान्तर विधिक लाभ ई अछि जे धार्मिक परम्पराक वर्णन आ ओकर नैतिक मूल्याङ्कन एक बात नहि। प्रत्येक धार्मिक दाबी निज प्रमाणभार अनुसार जाँचय चाही, प्रत्येक सदस्यक मूल गरिमा ओहिसँ स्वतंत्र सुरक्षित रहय।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 50; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 51 : ईश्वरक प्रश्न

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 51 ‘‘ईश्वरक प्रश्न’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 51, ‘‘The Question of God’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

ईश्वरक प्रश्न उठबासँ पहिने ई स्पष्ट करब जरूरी जे ‘ईश्वर’सँ सृष्टिकर्ता, नैतिक शासक, सर्वव्यापक आधार, अवैयक्तिक सत्ता वा कोनो अन्य रूप अभिप्रेत अछि। अध्याय ईश्वरक एकटा सार्वजनिक परिभाषा निरपेक्ष सत्य मानि नहि चलैत। एहि कारण कारणात्मक, प्रयोजनात्मक, नैतिक आ अनुभवाधारित तर्कसभक अर्थ आ सीमा अलग-अलग समीक्षा पबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(51.1 ईश्वर-धारणाक बहुलता) :** “भारतीय दर्शनमे ईश्वर-विषयक मत एकरूप नहि। न्याय-वैशेषिक परम्पराक उत्तरवर्ती आचार्य, विशेषत: उदयन, ईश्वरक अस्तित्वक पक्षमे अनुमानात्मक तर्क विकसित करैत छथि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

‘जगतक कारण अछि’ सँ ‘सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, पूर्ण कल्याणकारी सृष्टिकर्ता अछि’क निष्कर्ष बिना अतिरिक्त प्रतिज्ञा नहि निकलैत। सूक्ष्म व्यवस्था-सिद्धान्त आ प्राकृतिक व्याख्याक टकरावमे प्रमाणक स्तर अलग राखब आवश्यक। धार्मिक अनुभव व्यक्तिक जीवनमे अत्यन्त प्रभावशाली हो सकैत अछि, मुदा ओ अनुभवक निजी सत्य-अनुभूति आ सभी पर बाध्यकारी सार्वजनिक तत्त्वमीमांसक सिद्धि एक नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(51.6 ईश्वरक विरुद्ध तर्क) :** “ईश्वर-विरोधी पक्षक प्रमुख आधारसभमे अशुभक समस्या, दिव्य गुप्तता, धार्मिक असहमति, प्राकृतिक पर्याप्तता आ अवधारणात्मक कठिनाई शामिल अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

नास्तिकता सेहो अनेक अर्थ रखैत अछि: कोनो ईश्वर-धारणाक निषेध, पर्याप्त प्रमाणक अभावक निर्णय, धार्मिक संस्थाक आलोचना वा व्यापक तत्त्वमीमांसा। ‘निर्णयातीत’ आपत्ति प्रश्नक कठिनाईक संकेत अछि, मुदा सर्वदावाकेँ एक समान अप्रमाण्य घोषित कऽ देब समाधान नहि। आपत्ति आ उत्तर दूनू अपन प्रमाण तथा तार्किक संगति अनुसार जाँचल जाउ।

मूल पाठक साक्ष्य **(51.7 अवधारणा स्पष्ट किए बिना प्रमाण नहि) :**

“‘ईश्वर अछि’ दावी जाँचबाक पहिने ईश्वरक अर्थ स्पष्ट हो: व्यक्तिपरक स्रष्टा, आवश्यक सत्ता, विश्वक आधार, नैतिक विधाता, सर्वव्यापी चेतना, अथवा उपास्य देवता? भिन्न अवधारणापर एकहि तर्क लागू नहि होइत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

उदयनाचार्यक अध्याय २०क ईश्वरसिद्धिक पारम्परिक तर्क आ आधुनिक धर्म-दर्शनक बहुधर्मी अवधारणासभ एकर तुलना-सन्दर्भ छथि। दार्शनिक निष्पक्षता धार्मिक निष्कर्षक प्रति उदासीनता नहि, प्रतिपक्षक सबलतम तर्कक समान परीक्षा अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 51; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 52 : आस्था आ तर्क

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 52 ‘‘आस्था आ तर्क’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 52, ‘‘Faith and Reason’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

आस्था आ तर्कक सम्बन्धकेँ पूर्वनिर्धारित युद्ध मानब दुन्नूक क्षेत्रक इतिहास घटा दैत अछि। विश्वास, भरोसा, जीवनगत आशा, धर्मग्रन्थक गवाही आ सार्वजनिक प्रमाण एकहि अवधारणा नहि। अध्याय अनुभवक प्रामाणिकता आ ज्ञानात्मक औचित्यक सम्बन्ध पूछैत अछि। जँ व्यक्तिगत निष्ठाक अर्थ बाहरी तथ्यसम्बन्धी सभ दाबी आलोचनासँ मुक्त करब हो, तँ आस्था विचारक विकल्प बनि जाएत।

मूल पाठक साक्ष्य **(52.1 आस्था की?) :** “आस्था केवल “बिना प्रमाण विश्वास” नहि। आस्था विश्वास, भरोसा, निष्ठा, अभ्यास, सामुदायिक सदस्यता, आध्यात्मिक अपेक्षा आ जीवन-दिशाक मिश्रण भऽ सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

साक्ष्यवादी आपत्ति प्रत्येक अनुभवजन्य दावी लेल पर्याप्त प्रमाण माँगैत अछि; धार्मिक समुदाय आ परम्पराक गवाही कखन विश्वसनीय, कखन अपुष्ट, एहि परीक्षा मे निष्ठावान व्यक्तिक जीवनानुभवक महत्त्व घटैत नहि। विश्वासक निजी कारण सार्वजनिक coercion लेल स्वतः उचित आधार नहि। ‘प्रमाण नहि भेटल’ आ ‘वस्तु अनुपस्थित अछि तकर प्रमाण भेटल’क मूल अन्तर अध्याय स्पष्ट करैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(52.6 निजी कारण आ सार्वजनिक कारण) :** “लोकतान्त्रिक समाजमे व्यक्ति अपन धार्मिक कारणपर जीवन जी सकैत

अछि। उपवास, पूजा, प्रार्थना, वस्त्र, आहार—जाबत आनक अधिकार नहि टूटय, निजी धार्मिक कारण पर्याप्त भऽ सकैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

तर्कवादक अहंकारक आलोचनाक अर्थ विज्ञान अथवा सामान्य आलोचनाक अनुशासन कमजोर करब नहि। जीवनक आशा, क्षमा आ आध्यात्मिक अभ्यासक अर्थ मापनसँ पूरा समाप्त नहि होइत, मुदा विशेष ऐतिहासिक घटना वा औषधीय चमत्कारक दावा सार्वजनिक जाँच माँगैत अछि। आस्था बदलबाक आ आस्था नहि रखबाक स्वतंत्रता सेहो अन्तःकरणक सम्मानक भाग अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(52.17 पूर्वपक्ष: तर्क आस्था नष्ट करैत अछि) :** “किछु लोक मानैत छथि जे प्रश्न करलासँ भरोसा टूटैत; धार्मिक जीवनक मूल्य तर्कातीत समर्पणमे अछि। वस्तुतः प्रेम आ निष्ठाक सभ रूप औपचारिक प्रमाणपर नहि टिकैत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

कान्टक ज्ञानसीमा, कीर्केगार्दक अस्तित्वगत चुनाव आ धर्मबहुलताक आगामी अध्यायक न्यायिक प्रश्न एतय भेटैत अछि। समानान्तर दर्शन नागरिक गरिमा रक्षा करैत प्रत्येक विश्वासकेँ आलोचनासँ निरपेक्ष मुक्त नहि करैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 52; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 53 : दुःख आ अशुभक समस्या

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 53 ‘‘दुःख आ अशुभक समस्या’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 53, ‘‘The Problem of Suffering and Evil’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

अशुभक समस्या सर्वशक्तिमान–सर्वज्ञ–सर्वमंगल ईश्वरक अवधारणासँ निरपराध पीड़ाक सम्बन्ध पूछैत अछि। तार्किक असंगति आ पीड़ाक प्रचुर प्रमाणपर आधारित प्रतिवाद अलग छथि। अध्याय रोग, युद्ध, प्राकृतिक संकट आ हिंसाकेँ केवल सूक्तिपरक उदाहरण नहि, मानवीय गरिमासँ जुड़ल पीड़ा मानैत अछि। एहि कारण दर्शनक उत्तरक नैतिक भाषा स्वयं आलोचनाक विषय बनैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(53.1** तार्किक आ प्रमाणात्मक समस्या**) :** “तार्किक रूप प्रश्न अछि—सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, पूर्ण शुभ ईश्वर आ अशुभक अस्तित्व परस्पर विरोधी छथि की? आधुनिक विमर्शमे अनेक दार्शनिक मानैत छथि जे केवल तार्किक विरोध सिद्ध करब कठिन, कारण सम्भव अछि ईश्वरक किछु नैतिक रूपसँ पर्याप्”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्वतन्त्र इच्छा-प्रतिरक्षा मनुष्यमूलक अनिष्टक व्याख्या करबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा प्राकृतिक आपदा वा बालरोगक प्रश्न ओहि उत्तरसँ नहि सुलझैत। आत्म-विकासक सिद्धान्त प्रत्येक पीड़ाकेँ साधकक लाभक साधन बना दियए, तँ अन्याय-सहन कैँ नैतिक कर्तव्य बनबाक खतरा अछि। कर्मक आधारपर पीड़ितक दोषारोपण तर्कगत प्रमाणक अभाव आ नैतिक अपमान दुनू उत्पन्न करैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(53.6 विरोध, विलाप आ मौन) :** “धार्मिक परम्परासभमे पीड़ाक उत्तर केवल सिद्धान्त नहि; विलाप, प्रार्थना, करुणा, सेवा आ प्रतिरोध सेहो अछि। दर्शन जँ पीड़ितक अनुभवकेँ केवल syllogism बना दे, तँ नैतिक दूरी उत्पन्न होइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘अशुभ बिना शुभक अर्थ नहि’क पूर्वपक्ष तुलना-सम्भवता आ वास्तविक पीड़ाक अनिवार्यता गड्डमड्ड करैत अछि। दुःखक अर्थ समझब आ ओकर मूल्यवान औचित्य सिद्ध करब अलग अछि। कतेक आ ककर पीड़ा ‘आवश्यक’ कहल जाए, एहि प्रश्नक सार्वजनिक उत्तर बिना तैयार सांत्वना देब उचित नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(53.16 पूर्वपक्ष: अशुभ बिना अच्छाइक अर्थ नहि) :** “कहल जाइत अछि जे साहस लेल भय, करुणा लेल पीड़ा आ क्षमा लेल अपराध चाही; अतः अशुभ अच्छाइक सम्भावना बनबैत अछि। किछु मूल्य वास्तवमे कठिन परिस्थितिमे प्रकट होइत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

बौद्ध दर्शनक दुःख-विमर्श सृष्टिकर्ता बिना पीड़ाक कारण आ निराकरण पूछैत अछि। धर्म-दर्शनक एहि तुलनामे धार्मिक संस्था तथा राज्यक जिम्मेवारी समाप्त नहि होइत; सामाजिक रूपसँ परिवर्तनीय दुःखक विरुद्ध काज न्यायसंगत दायित्व अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 53; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 54 : कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 54 ‘‘कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 54, ‘‘Karma, Rebirth, and Mokṣa’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

कर्म, पुनर्जन्म आ मोक्ष अनेक भारतीय परम्परामे जुड़ल छथि, मुदा कर्ता, फल आ मुक्तिक स्वरूप एक नहि। वेदान्तक आत्मा, जैन जीव आ बौद्ध अनात्मक आधारपर कर्मनिरन्तरताक व्याख्या भिन्न। अध्याय एहि मतभेदकेँ ‘भारतीय दर्शनक साझा सिद्धान्त’ कहि समेटैत नहि। कर्मक नैतिक कारणताकेँ प्रत्येक वर्तमान परिस्थितिक पूर्वकर्मद्वारा तय भेल निरपेक्ष भाग्यवाद मानब गंभीर सरलीकरण अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(54.1 कर्म: नैतिक कारणता) :** “सामान्य रूपमे कर्मक विचार कहैत अछि जे चेतन कर्मक नैतिक परिणाम होइत अछि। मुदा परम्परा अनुसार ई परिणामक तत्त्वमीमांसीय व्याख्या बदलैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

पुनर्जन्मक तथ्यात्मक दावा अनुभवजन्य प्रमाणक प्रश्न उठबैत अछि। स्मृति, व्यक्तित्वक निरन्तरता आ कारणात्मक सम्बन्धक दार्शनिक व्याख्या एक स्तर अछि; विशिष्ट व्यक्तिक वास्तविक पूर्वजन्मक प्रमाणित घटनाक दावा अलग स्तर। सांख्य–न्याय–बौद्ध दृष्टिमे आत्मसम्बन्धी विवाद बुझला पर मूल मान्यताक भेद स्पष्ट होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(54.6 मोक्ष की?) :** “मोक्ष सेहो एकरूप नहि। सांख्यमे पुरुषक प्रकृतिसँ विवेकपूर्ण कैवल्य; योगमे चित्त-वृत्ति आ क्लेशक अतिक्रमणसँ कैवल्य; अद्वैतमे आत्म-ब्रह्म अभेदक ज्ञान; विशिष्टाद्वैत आ द्वैतमे ईश्वर-सम्बन्धक अलग मुक्ति-धारणा; बौद्ध परम्परामे निर्”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

पीड़ितक दुःख कँ 'गतजन्मक उचित फल' कहि दोषारोपण करब स्वयं न्यायपर गम्भीर प्रहार अछि। एहि प्रकारक दाबीक सत्यापित आधार अभावमे सामाजिक सहायता टारब नैतिक अनुचित। मोक्ष व्यक्तिगत अनुभव वा ज्ञानक लक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा अन्यक वर्तमान दुःख नहि देखबाक बहाना नहि बनय।

मूल पाठक साक्ष्य **(54.16 पूर्वपक्ष: मोक्ष जीवन-विरोधी अछि) :** "संसारसँ मुक्ति लक्ष्य हो तखन कला, प्रेम, राजनीति आ सुधार गौण लगि सकैत अछि। आलोचक एहि परम्पराकँ पलायनवादी कहि सकैत अछि।"

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

'मोक्ष जीवन-विरोधी अछि'क पूर्वपक्ष भिन्न मुक्ति-धारासभमे जीवनमुक्ति, करुणा आ सामाजिक सक्रियताक प्रश्न उठबैत अछि। समानान्तर दर्शन आध्यात्मिक लक्ष्यक सम्मान संग सामाजिक गरिमाक असम्बद्धताकँ स्वीकार नहि करैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 54; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 55 : धर्मबहुलता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 55 ‘‘धर्मबहुलता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 55, ‘‘Religious Plurality’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

धर्मबहुलता एक साथ सामाजिक तथ्य आ ज्ञानमीमांसक प्रश्न अछि: अनेक ईमानदार परम्परा परस्पर असंगत सत्य-दाबी करैत छथि। विशिष्टतावाद, समावेशवाद आ बहुलतावाद एहि समस्याक अलग प्रतिक्रिया छथि। अध्याय ‘सभी धर्म समान सत्य’क अनिर्णीत वाक्यक स्थानपर दाबी, प्रमाण आ स्वतंत्रताक विश्लेषण राखैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(55.1 बहुलताक तथ्य) :** “मानव समाजमे धर्म जन्मस्थान, परिवार, भाषा आ इतिहाससँ गहराईसँ जुड़ल रहैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

समान नागरिक गरिमा आ सभी धार्मिक कथनक समान तथ्यात्मक सत्य निरपेक्ष रूपसँ एक नहि। व्यक्तिगत आस्था रखबाक, आस्था बदलबाक आ अनास्थामे रहबाक तीनू अधिकार धर्मस्वतंत्रताक मूल घटक छथि। धार्मिक संस्था भीतर असहमत व्यक्तिक स्वतंत्र आवाजक सम्मान कएल जाए तँ समुदाय आ व्यक्ति दुनूक गरिमा सुरक्षित रहैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(55.7 धर्मक भीतर बहुलता) :** “कोनो धर्म एकरूप नहि। ग्रन्थ, सम्प्रदाय, क्षेत्र, जाति, लिंग, वर्ग, भाषा, सुधार-आन्दोलन आ लोकपरम्परा धर्मक भीतर अनेक आवाज उत्पन्न करैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘बहुलतावाद सभ मत कमजोर करैत अछि’क पूर्वपक्ष तर्कगत प्रश्न उठबैत अछि: जँ परस्पर विरोधी मत सत्य मानल जाए तँ असंगति उत्पन्न होयत।

उचित उत्तर ई होयत जे दूसराक विश्वासक नागरिक अधिकार स्वीकारब तकर तत्त्वमीमांसक निष्कर्ष पर सहमति नहि। एहि विभाजनक कारण आलोचना आ सहअस्तित्व दुनू सम्भव बनैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(55.18 पूर्वपक्ष: बहुलतावाद सभ मतकेँ कमजोर करैत अछि) :** “कहल जाइत अछि जे दोसर मार्गकेँ वैध मानलासँ अपन सत्य-दावी खोखला होइत अछि। प्रतिबद्धता लेल विशिष्टता जरूरी।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

जैन अनेकान्तवादक अध्ययन आ धर्मबहुलता बीच समग्र नैतिक दृष्टिक साम्य अछि, मुदा जैन नयवादक विधान एकर धर्मनिरपेक्ष शासन-संरचनाक प्रत्यक्ष सिद्धि नहि। समानान्तर दर्शन तत्त्वगत मतभेद बचा कऽ बहुल जीवनक संस्थागत औचित्य विकसित करैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 55; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 56 : धर्म आ राज्य

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 56 ‘‘धर्म आ राज्य’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 56, ‘‘Religion and the State’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

बहुधर्मी समाजमे राज्यक वैधता कोनो एक धर्मक सिद्धान्तक प्रति निष्ठासँ नहि, सभ नागरिकक समान राजनीतिक दर्जासँ तय होयत—ई अध्यायक मूल कसौटी अछि। धर्मनिरपेक्षताक विविध ऐतिहासिक नमूना अलग होइतो धर्मस्वतंत्रताक संरक्षण आ राज्यशक्तिक सीमाबन्धनक प्रश्न साझा अछि। धार्मिक व्यक्ति आ धार्मिक संस्था एकहि अधिकार-कर्त्ता नहि; संस्था भीतर व्यक्तिक असहमति सेहो सुरक्षित रहबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(56.1 धर्मक सत्य आ राज्यक अधिकार) :** “कोनो धार्मिक समुदाय अपन शास्त्र, परम्परा, गुरु, पैगम्बर, तत्त्वमीमांसा वा अनुभूतिक आधारपर सत्य-दाबी कऽ सकैत अछि। ई धार्मिक जीवनक स्वाभाविक भाग अछि। मुदा राज्यक दण्डशक्ति सभ नागरिकपर लागू होइत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रतीक, विद्यालय, सार्वजनिक अनुदान, धार्मिक स्थल आ निजी कानूनक प्रश्नमे निरपेक्ष ‘राज्य दूरी बना लियए’ सिद्धान्त सदैव स्पष्ट नीतिगत उत्तर नहि दैत। दूर रहब आ समान संरक्षण दूनू कखनो टकरा सकैत अछि। नीति निर्माणमे प्रत्यक्ष भेदभाव, वास्तविक अवसर आ सार्वजनिक साधनक वितरणक साक्ष्य जरूरी अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(56.5 बहुमत आ धार्मिक राष्ट्रवाद) :** “बहुमत धार्मिक पहचान राज्यक सांस्कृतिक जीवनपर प्रभाव रखि सकैत अछि; इतिहास, भाषा,

पर्व, प्रतीक सभ समाजक भाग अछि। मुदा बहुमत संख्या आध्यात्मिक सत्य वा राजनीतिक विशेषाधिकारक प्रमाण नहि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

धर्मस्वतन्त्रताक अधिकार अन्यक सुरक्षा, बराबरी आ नैतिक स्वायत्ततासँ टकराए तँ कोन सीमा न्यायसंगत, एहि विवाद लेल सार्वजनिक औचित्य चाही। बहुमत धार्मिक पहचान राज्यक सत्यनिर्णयक अनिवार्य आधार नहि। एकरे संग धर्मावलम्बी नागरिकक सार्वजनिक विचार व्यक्त करबाक अधिकार स्वतः निषिद्धो नहि। राज्यक आस्था-सापेक्ष नागरिकताक विशेषाधिकार रोकब मुख्य कसौटी अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(56.6** धर्मनिरपेक्षताक अलग नमूना**) :** “धर्मनिरपेक्षता सर्वत्र एकहि संस्थागत रूप नहि। कखनो राज्य–धर्म पृथक्करण, कखनो सभ धर्मसँ समान दूरी, कखनो अधिकार-सुरक्षा लेल सिद्धान्तगत हस्तक्षेपपर बल देल जाइत अछि। इतिहास आ सामाजिक संरचना अनुसार नमूना बदलैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्यक औचित्यक अध्याय ३९, लोकतन्त्रक अध्याय ४७ आ धर्मबहुलताक अध्याय ५५ एहि विमर्शक सीधा पृष्ठभूमि छथि। समानान्तर दर्शन आस्था-स्वतन्त्रता, संस्थागत संरक्षण आ नागरिक गरिमा कँ एकरूप घोषित नहि, पारस्परिक निगरानीक सिद्धान्त मानैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 56; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 57 : लोकधर्म आ संस्थागत धर्म

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 57 ‘‘लोकधर्म आ संस्थागत धर्म’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 57, ‘‘Folk Religion and Institutional Religion’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

लोकधर्मक संसार पाबनि, गीत, व्रत, स्थानीय देवता, रोग, नदी, ऋतु आ पूर्वज-स्मृतिक माध्यमसँ निर्मित होइत अछि। संस्थागत धर्म शास्त्र, सार्वजनिक संगठन आ अधिकृत विधान विकसित करैत अछि। अध्याय लोककेँ मूलतः निष्पाप आ संस्थाकेँ स्वभावतः दोषपूर्ण मानबाक विपरीत सरलीकरण नकारैत अछि; लोकमे सेहो सत्ता, बहिष्कार आ आर्थिक लेन-देन होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (57.1 लोकधर्मक मिश्रित स्वरूप) : “एकहि ग्राम वा परिवारक धार्मिक व्यवहारमे अनेक परम्पराक तत्व घुलल रहि सकैत अछि। शास्त्रीय सीमा व्यवहारमे अधिक लचीला हो सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्त्रीक धार्मिक श्रम परिवारक आयोजन आ सांस्कृतिक स्मृति टिकबैत अछि, मुदा श्रमक असमान बाँट सामाजिक न्यायक प्रश्न अछि। लोकचिकित्सा अथवा रोग-निवारण सम्बन्धी विश्वासक अर्थ सांस्कृतिक रूपेँ अध्ययनयोग्य हो सकैत अछि, मुदा चिकित्सा-परिणामक अनुभवजन्य मूल्याङ्कन अलग आवश्यकता अछि। पर्यावरण-संग जुड़ल अनुष्ठान प्रकृतिक प्रति सम्बन्ध व्यक्त करैत अछि, पर ओकर वास्तविक पारिस्थितिक प्रभाव स्वतः लाभकारी सिद्ध नहि।

मूल पाठक साक्ष्य (57.5 मिथिला आ लोकधर्मक अध्ययन) : “मिथिलाक पाबनि, स्त्री-गीत, नदी-संस्कार, ग्रामदेवता, कुलपरम्परा, लोककथा आ गृह-अनुष्ठान धार्मिक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण स्रोत भऽ सकैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘लोकधर्म शास्त्रसँ मुक्त स्वाभाविक धर्म अछि’क पूर्वपक्ष सांस्कृतिक सम्पर्कक वास्तविक इतिहास अनदेखी करैत अछि। लोक-आचार, संस्था, बाजार, प्रवासन आ राजकीय व्यवस्था एक-दोसरकेँ बदलैत रहल। क्षेत्र-अध्ययनमे सहभागी लोकक स्वीकृति, सन्दर्भक विश्वसनीयता आ कथनक भिन्न संस्करण जाँचना जरूरी। जँ एहि अधारकेँ छोड़ल जाए तँ क्षेत्रीय शोध लोकसँ अधिक शोधकर्ताक कल्पनाक अभिलेख बनि जाएत।

मूल पाठक साक्ष्य **(57.6 लोकदेवता, स्थान आ स्मृति) :** “लोकधर्मक पवित्रता प्रायः नदी, वृक्ष, चौक, कुल, रोग वा ऐतिहासिक स्मृतिसँ जुड़ल होइत अछि। एहन स्थान समुदायक पर्यावरणीय आ सामाजिक सम्बन्धक अभिलेख बनि सकैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

लोक–शास्त्रक मिथिला-विमर्शक अध्याय २४ सँ एतय विषयगत प्रगति अछि। धार्मिक अनुभवक जीवित सामाजिक रूप अध्ययनक योग्य अछि, मुदा सत्यक प्रमाणक समान कसौटी आ गरिमाक नैतिक मर्यादा दुनू सुरक्षित रहय।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 57; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 58 : आधुनिकता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 58 ‘‘आधुनिकता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 58, ‘‘Modernity’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

आधुनिकता न कोनो एक वर्षसँ आरम्भ होयवाला घटना, न पश्चिमी पोशाकक नाम। विज्ञान, राष्ट्रराज्य, मुद्रण, शहरीकरण, पूँजी, प्रशासकीय तर्कीकरण आ औपनिवेशिक ज्ञान-वर्गीकरण सभ एकर असमान इतिहास छथि। अध्याय आधुनिकताक मुक्तिक सम्भावना संग ओकर नियन्त्रणकारी संस्थागत पक्षो देखैत अछि। एहि दूनूकेँ साथ रखने बिना आधुनिकता अथवा परम्पराक एकतरफा महिमामण्डन होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(58.1 मुक्ति आ नियन्त्रणक द्वैधता) :** “आधुनिक संस्थासभ व्यक्तिक कानूनी दर्जा, शिक्षा, संचार, चिकित्सा, लोकतान्त्रिक भागीदारी आ वैज्ञानिक ज्ञानक अभूतपूर्व विस्तार कएलक।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

नौकरशाही नियमक पूर्वानुमेयता दैत अछि, मुदा मनुष्यकेँ वर्गक भीतर बन्द करबाक तन्त्र सेहो भऽ सकैत अछि। बाजार अवसर खोलैत अछि, पर सामाजिक सम्बन्धक विनिमयी मूल्यांकन बढ़बैत अछि। औपनिवेशिक प्रशासन अनेक भाषाक पहचान, जाति आ क्षेत्रकेँ गणनाक श्रेणीमे बदललक—ई विश्लेषण वर्तमान पहचानक स्थायित्वक दावीपर सावधानी सुझबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(58.5 मिथिला, क्षेत्र आ आधुनिकता) :** “क्षेत्रीय भाषा, प्रवास, शिक्षा, डिजिटल माध्यम, रोजगार आ राज्यीय नीतिक बीच मिथिलाक आधुनिक अनुभव देखबैत अछि जे आधुनिकता केन्द्रसँ हाशिया धरि एके रूपमे नहि पहुँचैत।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘आधुनिकता पश्चिमीकरण मात्र’क पूर्वपक्ष आधुनिक अनुभवक बहुवचनता अनदेखी करैत अछि। मुदा ‘बहु-आधुनिकता’क नामपर विज्ञान अथवा अधिकारक सार्वभौमिक परीक्षण छोड़बो ठीक नहि। विभिन्न समाज अलग गति आ मार्ग अपनबैत छथि; ओहि मार्गक न्यायसंगत परिणाम संसाधन, नागरिक अधिकार आ ऐतिहासिक साक्ष्यद्वारा परीक्षित होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(58.6 तर्कीकरण आ नौकरशाही) :** “आधुनिक संस्था नियम, गणना आ विशेषज्ञतासँ व्यापक काम सम्भव बनबैत अछि। व्यक्तिगत कृपाक बदला नियमित प्रक्रिया नागरिककेँ सुरक्षा दे सकैत अछि। मुदा नियम साध्यसँ कटि जाए तँ मनुष्य फाइल आ संख्या बनि जाइत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मिथिलाक भाषा, प्रवासन आ ग्रामीण-नगरीय परिवर्तनेक उल्लेख सामान्य आधुनिकता-सिद्धान्तकेँ स्थानीय संदर्भ दैत अछि। तथापि भूगोलक नाम भरि साक्ष्य नहि; विशिष्ट इतिहासक आलोचनात्मक अध्ययन आवश्यक। समानान्तर दर्शन आधुनिकताकेँ नकारैत नहि, ओकर अधूरा सामाजिक दाबी जाँचैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 58; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 59 : विज्ञान आ मनुष्य

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 59 ‘‘विज्ञान आ मनुष्य’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 59, ‘‘Science and the Human Being’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

विज्ञानक ज्ञानात्मक शक्ति आधुनिक जीवनक अनेक क्षेत्र बदलि देलक, पर विज्ञानक विवरणात्मक परिणामसँ नैतिक लक्ष्य स्वतः नहि निकलैत। अध्याय तथ्य–मूल्यक भेदक संग विज्ञानक संस्थागत नैतिकता, अनुसंधानमे मनुष्यक अधिकार, द्वि-उपयोगी तकनीक आ सार्वजनिक व्याख्याक प्रश्न उठबैत अछि। एहि कारण विज्ञानप्रति निष्ठा वैज्ञानिकतावाद नहि, प्रमाणक कठोर जाँचक आदर अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(59.1 विज्ञानक ज्ञानात्मक शक्ति) :** “विज्ञानक शक्ति केवल तथ्य-संग्रह नहि; सार्वजनिक परीक्षण, मापन, पुनरावृत्ति, गणितीय प्रतिरूप, परिकल्पना-संशोधन आ आलोचनात्मक समुदायमे अछि। एहि कारण समानान्तर दर्शन विज्ञानकेँ “एक मत” मात्र नहि मानैत।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

पुनरुत्पादनक संकट विज्ञानक कमजोरीक नामे सम्पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति खारिज करबाक कारण नहि, वैज्ञानिक जाँचक आत्मसमीक्षा अछि। कोन मापन चुनल जाए, अनुसंधानक वित्त ककर हितपर आधारित हो, प्रतिभागीक सहमति कोना सुरक्षित रहय—ई सभ नीति आ समाजक निर्णय समेटैत अछि। विशेषज्ञता महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा विशेषज्ञ स्वयं नागरिकक जीवनगत मूल्यक निर्विवाद निर्णायक नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(59.5 वैज्ञानिकतावाद आ विज्ञान-विरोध) :** “वैज्ञानिकतावाद विज्ञानक सफलता देखिकऽ मानि लैत अछि जे सभ सार्थक

प्रश्नक उत्तर विज्ञान अकेले देत। विज्ञान-विरोध उलटा रूपमे वैज्ञानिक प्रमाणकेँ केवल सत्ता-कथा मानि खारिज कऽ सकैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘विज्ञान स्वयं नैतिक दिशा देत’क पूर्वपक्ष ‘की सम्भव’ आ ‘की उचित’क अन्तर मेटबैत अछि। उदाहरणार्थ, कोनो प्राविधिक हस्तक्षेप प्रभावी भऽ सकैत अछि, मुदा अनुमति, निष्पक्षता आ हानिक अनुपातक प्रश्न शेष रहैत अछि। विज्ञान-विरोध तर्कसंगत संशय नहि; विश्वसनीय साक्ष्यक अस्वीकृति अछि। तथापि वैज्ञानिक संस्था आलोचनातीत नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(59.6 विज्ञानक संस्थागत नैतिकता) :** “विज्ञान व्यक्तिक प्रतिभा मात्र नहि; प्रयोगशाला, वित्त, पत्रिका, समीक्षा आ सार्वजनिक विश्वासक संस्था अछि। हित-संघर्ष, चयनात्मक प्रकाशन वा डेटा छिपेबा सँ पद्धति कमजोर होइत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

अध्याय ३७क विज्ञान-दर्शन एहि अध्यायक प्रायोगिक नैतिक पृष्ठभूमि अछि। समानान्तर दर्शन स्थानीय ज्ञानक अध्ययन सम्मानित करैतहुँ प्राकृतिक दावाक परीक्षणमे वैज्ञानिक प्रमाणक स्थान कम नहि करैत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 59; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 60 : भाषा आ सत्ता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 60 ‘‘भाषा आ सत्ता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 60, ‘‘Language and Power’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

भाषाक नामकरण सामाजिक वस्तुकेँ दृश्य वा अदृश्य बना सकैत अछि। प्रशासनिक ‘भाषा’–‘बोली’क श्रेणी, न्यायालयक शब्दावली आ सरकारी अभिलेख ककर आवाज सार्वजनिक मानल जाए ताहिपर प्रभाव करैत अछि। अध्याय फूकोक विमर्शसम्बन्धी दृष्टिसँ संवाद करैत अछि, मुदा वास्तविकता केवल भाषिक खेलक उत्पाद अछि—एहन अतिवादी निष्कर्ष अनिवार्य नहि मानैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(60.1 नामकरण आ राजनीतिक अर्थ) :** ““अपराधी”, “विद्रोही”, “आतंककारी”, “स्वतंत्रता-सैनिक”—एकहि व्यक्तिक लेल अलग सत्ता-सन्दर्भमे अलग शब्द प्रयुक्त भऽ सकैत अछि। शब्द केवल वर्णन नहि; नैतिक भाव आ कानूनी परिणाम सक्रिय कऽ सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मौन करबाक तरीका प्रत्यक्ष निषेध मात्र नहि; एहन भी हो सकैत अछि जे विशिष्ट अनुभवक लेल स्वीकृत पद उपलब्ध नहि हो। शब्दकोश, विद्यालय आ अदालतक संस्थागत अधिकार भाषा-निर्णयक असमान शक्ति बनबैत अछि। व्यंग्य आ हास्य सत्ता आलोचना करैत अछि, पर अपमानक साधन सेहो भऽ सकैत अछि। एहि कारण भाषिक स्वतन्त्रता आ अन्यक गरिमा बीच पारस्परिक विवेक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(60.6 मैथिली आ भाषिक गरिमा) :** “मैथिली जकाँ क्षेत्रीय भाषाक दार्शनिक उपयोग स्वयं ज्ञान-सत्ताक प्रश्न उठबैत अछि। यदि

उच्च शिक्षा वा दर्शन केवल प्रभुत्वशाली भाषामे उपलब्ध हो, तँ ज्ञानक प्रवेश असमान होइत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘शब्द बदललासँ वास्तविकता नहि बदलत’क पूर्वपक्ष आंशिक सत्य अछि: भाषिक सुधार बिना कानून, अर्थव्यवस्था आ संस्थागत व्यवहार न बदलय तँ असमानता जारी रहि सकैत अछि। मुदा गलत नामकरण निरन्तर सार्वजनिक अधिकार बाधित करैत हो, तँ शब्दक संशोधन सेहो वास्तविक परिवर्तनक एक शर्त अछि। शब्द-सत्य आ सामाजिक नीतिक दोहरी जाँच चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(60.7 नामकरण आ प्रशासन) :** “प्रशासन लोककेँ लाभार्थी, प्रवासी, पिछड़ा, अवैध वा विकलांग-जकाँ श्रेणीमे रखैत अछि। श्रेणी नीति सम्भव बनबैत, मुदा व्यक्तिक जटिलता घटबैत आ कलंक उत्पन्न करि सकैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

भाषा-दर्शन अध्याय १६ आ भाषा-अस्मिता अध्याय ४६ सँ ई सत्ता-विमर्श विकसित होइत अछि। मैथिलीमे दर्शनक सृजन एकटा सार्वजनिक पहुँचक उदाहरण अछि, मुदा स्थानीय भाषाक आन्तरिक विविधता दबायब भाषिक न्यायक विरुद्ध होयत।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 60; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 61 : इतिहास आ स्मृति

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 61 ‘‘इतिहास आ स्मृति’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 61, ‘‘History and Memory’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

इतिहास अतीतक यन्त्रवत् प्रतिलिपि नहि; स्रोतक समालोचनात्मक पुनर्निर्माण अछि। स्मृतिमे भावनात्मक सत्य आ घटना-वर्णनक स्तर भिन्न होइत छथि। अभिलेख सेहो प्रशासनिक उद्देश्य, चुनल गेल वर्ग आ संरक्षित सामग्रीक परिणाम अछि। अध्याय मौखिक गवाही आ औपचारिक दस्तावेज दुनूकेँ स्रोत बनबैत अछि, मुदा ककरो आलोचनासँ मुक्त नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(61.1** घटना, स्रोत आ इतिहास**) :** “घटना आ इतिहास एक वस्तु नहि। घटना अतीतमे घटैत अछि; इतिहास वर्तमानमे उपलब्ध प्रमाणक आधारपर ओकर पुनर्निर्माण अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्रोतक घटनासँ निकटता आ विभिन्न स्रोतक परस्पर स्वतन्त्रता इतिहासक परीक्षणमे महत्वपूर्ण अछि। परिवारक पत्र, स्मारक, सरकारी अभिलेख आ मौखिक कथा आपस मे एक-दोसरक त्रुटि जाँचि सकैत अछि, जँ हुनकर परस्पर निर्भरता पूर्वे चिन्हल जाए। ‘अभिलेखक मौन’ नयी खोजक दिशा दैत अछि, मुदा गुम तथ्यक बदला मनगढ़न्त कथा स्थापित करबाक अधिकार नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(61.6** मिथिला आ समानान्तर स्मृति**) :** “मिथिलाक इतिहासमे राजकीय स्रोत, पञ्जी, शास्त्रीय ग्रन्थ, साहित्य, मौखिक परम्परा, स्त्रीगीत, नदी-स्मृति, प्रवासक कथा, स्थानीय देवस्थल आ आधुनिक अभिलेख अलग-अलग प्रकारक प्रमाण दैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘इतिहास केवल विजेताक कथा’क पूर्वपक्ष सत्ता-असमानताक वास्तविक समस्या चिन्हैत अछि, मुदा एकरे कारण सम्पूर्ण तथ्यात्मक पुनर्निर्माण असम्भव नहि। विजेता आ पराजित दुनूक स्रोतमे असत्य, स्मृति-विकृति आ सत्यक मिश्रण भऽ सकैत अछि। प्रमाणक स्तर अनुसार निष्कर्षक विश्वसनीयता बदलैत अछि; ई कमजोरीक स्वीकार वैज्ञानिक इतिहासक नैतिक उपलब्धि अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(61.7 स्रोतक निकटता आ स्वतंत्रता) :** “घटनाक निकट स्रोत मूल्यवान, मुदा निकटता निष्पक्षता नहि। सहभागी अधिक जानि सकैत अछि, संगहि अपन भूमिका बचा सकैत। बादक स्रोत दूरीसँ व्यापक चित्र दे सकैत, मुदा स्मृति आ वर्तमान हितसँ प्रभावित होइत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

विदेह आ मिथिलाक अध्याय १७–२४मे प्रस्तुत क्षेत्रीय दाबी सभ एहि इतिहास-पद्धतिक कसौटीपर पुनः जाँचल जाएबाक चाही। ‘समानान्तर’ नाम स्रोतविहीन इतिहासक छूट नहि, स्रोतभेदक प्रति अधिक जिम्मेदारी दैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 61; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 62 : ज्ञान आ डिजिटल संसार

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 62 ‘‘ज्ञान आ डिजिटल संसार’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 62, ‘‘Knowledge and the Digital World’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

डिजिटल संसारमे सूचना अधिक अछि, मुदा सत्यापित ज्ञानक निर्माण हेतु स्रोत, सन्दर्भ आ आलोचना चाही। एल्गोरिदम ध्यानक वितरण प्रभावित करैत अछि; दृश्य अथवा ध्वनि मानव निर्मित बुझाइतो कृत्रिम संपादित भऽ सकैत अछि। अध्याय प्रत्यक्षक परम्परागत विश्वसनीयताकेँ डिजिटल परिस्थिति मे नूतन जाँचक अधीन रखैत अछि। लोकप्रियताकेँ सत्यक पर्याय मानब गंभीर ज्ञानात्मक भूल अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(62.1 सूचना, विश्वास आ ज्ञान) :** “सूचना उपलब्ध होयब आ ज्ञान प्राप्त होयब अलग बात अछि। खोज-यन्त्र परिणाम दैत अछि; सत्यक गारंटी नहि। सामाजिक माध्यम लोकप्रियता दैत अछि; विश्वसनीयता नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रतिध्वनि-कक्ष आ पुष्टि-पक्षपात नागरिक निर्णय संकुचित करैत अछि। सामग्रीक उत्पत्ति-पथ, मूल अभिलेख, स्वतंत्र स्रोत आ तिथि परीक्षित करबाक आवश्यकता अछि। डिजिटल अभिलेखक स्थायित्व विद्यमान मानल जाए, मुदा मंच बदललासँ सामग्री बिला सकैत अछि। सार्वजनिक संग्रहालय आ व्यक्तिगत निजताक बीच वास्तविक तनाव अछि; हर सार्वजनिक वस्तु केँ अनन्त काल धरि अभिलेखित करब नैतिक रूपेँ निर्विवाद नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(62.6 डिजिटल अभिलेख आ विस्मरण) :** “डिजिटल माध्यम एक दिस विशाल अभिलेख बनबैत अछि, दोसर दिस link-rot,

platform closure, proprietary format आ content deletion कारण स्मृति अस्थिर सेहो बनबैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘डिजिटल माध्यम मात्र तटस्थ साधन’क पूर्वपक्ष उपयोगकर्ताक चुनावकेँ महत्त्व दैत अछि, पर खोजक्रम, अनुशंसा, आर्थिक प्रोत्साहन आ डेटा-संग्रहक संस्थागत शक्ति अनदेखी करैत अछि। तखन फेर ‘एल्गोरिदम सभ किछु नियन्त्रित करैत अछि’ सेहो अतिशयोक्ति होयत। दायित्वक ठोस निर्धारण मंच, संस्था आ नागरिकक स्वतन्त्र क्रियाक आधारपर होयत।

मूल पाठक साक्ष्य **(62.16 पूर्वपक्ष: डिजिटल माध्यम केवल साधन अछि) :**

“कहल जाइत अछि जे दोष उपयोगकर्ताक; मंच तटस्थ पाइप मात्र। मुदा बटन, सूचना-क्रम, पुरस्कार आ विज्ञापन-नमूना व्यवहार आकार दैत अछि। रचना नैतिक रूपसँ प्रासंगिक।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मैथिली अभिलेखक डिजिटल उपलब्धता समानान्तर इतिहासक व्यावहारिक सम्भावना अछि। तथापि नूतन वेबसाइट बनलासँ स्रोतक प्रामाण्य स्वतः नहि बढ़ैत। स्रोत-समीक्षा आ स्थायी अभिलेखीय नामांकन एहि अध्यायक वास्तविक सार्वजनिक शिक्षा अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 62; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 63 : कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 63 ‘‘कृत्रिम बुद्धि आ मनुष्यक उत्तरदायित्व’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 63, ‘‘Artificial Intelligence and Human Responsibility’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

कृत्रिम बुद्धि भाषा, चित्र, निर्णय-सहायता आ संगठित गणनाक नूतन क्षमता प्रस्तुत करैत अछि। अध्याय दक्षता आ नैतिक अभिकर्तृत्वक भेद स्पष्ट करैत अछि: उत्तरोत्पादनक प्राविधिक क्षमता भेलासँ मानवीय संस्थाक जिम्मेदारी मशीनपर स्वतः स्थानान्तरित नहि होइत। ‘ककर डेटा, ककर निर्णय, ककर अपील’ प्रश्न तकनीकी तन्त्रक सामाजिक शक्ति पहिचानैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(63.1** साधन, अभिकर्ता आ उत्तरदायित्व**) :** “कृत्रिम बुद्धि प्रणाली जटिल निर्णय उत्पन्न कऽ सकैत अछि, मुदा कानूनी, संस्थागत आ नैतिक उत्तरदायित्वक संरचना मनुष्य आ संस्थासभ तय करैत अछि। ‘एल्गोरिदम निर्णय लेलक’ कहि कऽ संस्था अपन जिम्मेवारी समाप्त नहि कऽ सकैत।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

स्वचालित वर्गीकरणक पूर्वग्रह प्रशिक्षण सामग्री, मापन, प्रस्तुति आ अनुप्रयोग-परिस्थितिसँ उत्पन्न भऽ सकैत अछि। निर्णयक व्याख्येयता मात्र गणितीय क्रियाक विवरण नहि; प्रभावित व्यक्तिक अपील, त्रुटि-सुधार आ अधिकार-प्राप्तिक व्यवहारिक सुविधा सेहो अछि। मैथिली सन कम-संसाधन भाषाक प्रतिनिधित्वक असमानता ज्ञान-अधिकारक वास्तविक प्रश्न बनि सकैत अछि, मुदा विशिष्ट त्रुटि दरक दावा अलग परीक्षण चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(63.6** सृजनशीलता आ लेखकीय उत्तरदायित्व**) :** “कृत्रिम बुद्धि लेखन, चित्र, संगीत आ अनुवादमे सहयोग देत। मुदा लेखकीय उत्तरदायित्व समाप्त नहि। कृति प्रकाशित करयवला व्यक्ति वा संस्था तथ्य, उद्धरण, अधिकार, सहमति आ परिणाम लेल जिम्मेदार रहत।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘अधिक सक्षम प्रणाली स्वतः उत्तरदायी भऽ जाएत’क पूर्वपक्ष क्षमता आ नैतिक दायित्वक श्रेणी अलग रखबाक माँग करैत अछि। कोन संस्था निर्देश दैत अछि, निष्कर्षक उपयोग के करैत अछि, लाभ ककरा भेटैत अछि आ हानि पर प्रतिकार किएक नहि—ई सभ मानव निर्णयक प्रश्न छथि। मशीनकेँ अतिमानवीय चरित्र देब यथार्थ संस्थागत उत्तरदायित्व ढँकि सकैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(63.17** पूर्वपक्ष**:** अधिक सक्षम प्रणाली स्वयं उत्तरदायी होयत**) :** “जँ प्रणाली योजना, भाषा आ अनुकूलन करैत अछि, तँ ओकरा अभिकर्ता मानि दोष देबाक विचार उठैत अछि। मुदा उत्तरदायित्व दण्ड-बोध, कारण बुझब, नियम मानब आ प्रतिकारक क्षमता माँगैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

ग्रन्थक अपन द्विभाषिक लेखन आ बृहद् दार्शनिक स्रोत-संगठन एहि अध्यायक आत्मसमीक्षा करबाक योग्य अछि। स्रोतविहीन निष्कर्ष, अनुवादक अर्थभ्रंश अथवा मनगढ़न्त उद्धरणक जोखिम तकनीकद्वारा सम्पादकीय काज छिटपट कएलासँ घटैत नहि। समानान्तर दर्शन प्रमाणयुक्त मानव जिम्मेवारीक अनुशासन माँगैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 63; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 64 : पर्यावरण आ भावी पीढ़ी

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 64 ‘‘पर्यावरण आ भावी पीढ़ी’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 64, ‘‘The Environment and Future Generations’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

भावी पीढ़ी एखन वर्तमान निर्णयमे भाग नहि लऽ सकैत छथि, मुदा वर्तमान संसाधन-उपभोग तिनकर जीवनक शर्त बदलि सकैत अछि। अध्याय पर्यावरणक मूल्यकेँ केवल बाजार-मूल्य नहि मानैत; जीव-जगत, नदी, भूमिक सम्बन्ध आ मानवीय गरिमाकेँ पारस्परिक उत्तरदायित्वक क्षेत्रमे रखैत अछि। तथापि मानवेतर जीवक नैतिक दर्जा आ वर्तमान गरीब मनुष्यक जीविका दूनूकेँ एकहि अस्पष्ट संरक्षणवादी नारेमे नहि समेटल जा सकैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(64.1** कालातीत नैतिक उत्तरदायित्व**) :** “भावी पीढ़ी एखन मतदान नहि कऽ सकैत अछि, अनुबन्ध नहि कऽ सकैत अछि, विरोध प्रदर्शन नहि कऽ सकैत अछि। तथापि वर्तमान निर्णय ओकर जल, वायु, भूमि, जलवायु आ जैवविविधता प्रभावित करैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

सावधानी सिद्धान्त प्रमाणक अभावमे असीम भय नहि, महत्त्वपूर्ण अपरिवर्तनीय जोखिमक सामना करबाक विवेकपूर्ण नीति अछि। जोखिमक सम्भावना, लागतक वितरण आ उपाय-अनुपात एक संग जाँचय पड़त। मिथिलाक बाढ़, नदी आ विस्थापनक संदर्भ दार्शनिक अवधारणाकेँ स्थानीय जीवनसँ जोड़ैत अछि; विशिष्ट बाढ़वर्ष अथवा क्षेत्रीय जोखिमक आँकड़ा बिना ठोस परिमाणात्मक दावा नहि कएल जाए।

मूल पाठक साक्ष्य **(64.6** सावधानी सिद्धान्त**) :** “जतय सम्भावित हानि विशाल वा अपरिवर्तनीय हो, पूर्ण निश्चितताक प्रतीक्षा स्वयं जोखिमपूर्ण भऽ

सकैत अछि। मुदा सावधानी सिद्धान्त ‘कोनो जोखिम नहि’क असम्भव माँग सेहो नहि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘गरीब समाज पर्यावरण वहन नहि कऽ सकैत’क पूर्वपक्ष विकासक तात्कालिक आवश्यकताक वास्तविक प्रश्न उठबैत अछि। मुदा पर्यावरणीय हानिक भार प्रायः ओहि लोकपर पड़ि सकैत अछि जिनकर लाभ न्यून अछि। एहि कारण न्यायपूर्ण संक्रमण, साझा संसाधनक शासन आ स्थानीय सहमति जकाँ सिद्धान्त संरक्षण-नीति कैं सामाजिक न्यायसँ जोड़ैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(64.16 पूर्वपक्ष: गरीब समाज पर्यावरण वहन नहि कऽ सकैत) :** “विकास लेल ऊर्जा, सड़क आ उद्योग चाही; पर्यावरणीय मानक गरीबक प्रगति रोकैत—एहन आपत्ति उठैत अछि। ऐतिहासिक उत्सर्जन आ संसाधन-उपयोगक असमानता एहि तर्ककैं बल दैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्य, विज्ञान, सामाजिक गरिमा आ डिजिटल ज्ञानक पहिनुक अध्यायसभ पर्यावरण-विमर्शमे समाहित होइत अछि। समानान्तर दर्शनक नैतिक विस्तार वर्तमान मनुष्यसँ भावी पीढ़ी आ मानवेतर जीवन धरि पहुँचैत अछि; एहि विस्तारक कानूनी-प्रशासनिक निष्कर्ष अलग साक्ष्य, विज्ञान आ सार्वजनिक विमर्श माँगैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 64; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 50-64 : तुलनात्मक निष्कर्ष

धर्म-परिभाषा, ईश्वर, आस्था, अशुभ, कर्म, धर्मबहुलता, धर्म-राज्य, लोकधर्म, आधुनिकता, विज्ञान, भाषा-सत्ता, स्मृति, डिजिटल ज्ञान, कृत्रिम बुद्धि आ पर्यावरण—एहि अध्यायसभमे तथ्यात्मक दाबी आ जीवनगत अर्थक प्रश्नक प्रमाणभार निरन्तर बदलैत अछि। मानवीय गरिमा पर आधारित समानान्तर दृष्टिक शक्ति ओतबे जतेक अन्य मतक बलिष्ठ प्रतिवाद सुनबाक तत्परता अछि।

अध्याय 65 : बहुप्रमाणीय विवेकवाद

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 65 ‘‘बहुप्रमाणीय विवेकवाद’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 65, ‘‘Multi-Pramāṇa Rationalism’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

बहुप्रमाणीय विवेकवादक आरम्भ एहि अस्वीकारसँ होइत अछि जे सत्यक निर्धारण एकमात्र प्रमाण-पद्धतिद्वारा सर्वत्र सम्भव अछि। न्यायीय प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्दप्रमाण, ऐतिहासिक अभिलेख, वैज्ञानिक परीक्षण आ जीवनानुभव अलग प्रश्न लेल अलग प्रकारक कारण दैत अछि। मुदा अनेक प्रमाण मानलासँ ‘सभ विश्वास समान सत्य’ निकलैत नहि। अध्याय एहि भिन्नताकेँ क्षेत्र-सापेक्ष परीक्षणक स्पष्ट अनुशासन बनबैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(65.1 ‘बहुप्रमाणीय’ किएक?) :** “मानवीय प्रश्न एकरूप नहि। औषधिक प्रभाव जानबाक तरीका व्यक्तिगत धार्मिक अनुभूतिसँ अलग; प्राचीन राजवंशक तिथि जानबाक तरीका प्रयोगशाला-परीक्षणसँ अलग; व्यक्तिगत पीड़ाक अनुभव जानबाक तरीका जनगणना-सारणीसँ अलग।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

आधुनिक ज्ञान-व्यवहारमे आप्तक रूप विशेषज्ञ, विश्वसनीय संस्था आ प्रामाणिक साक्ष्य-प्रदाता भऽ सकैत अछि; हुनकर प्रतिष्ठा स्वतः अचूकता नहि। विशेषज्ञसभक असहमति वास्तवमे किस बात पर अछि, ओहि विषयमे प्रमाणक गुणवत्ता, हितसम्बन्ध आ पद्धति समान रूपसँ जाँचल जाय। चारि स्तरक निष्कर्ष-भाषा—मजबूत प्रमाणित, सम्भावित, विवादित आ अज्ञात—लेखकक संशोध्य ज्ञानशास्त्रक व्यावहारिक उपादान अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (65.7 पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा संग संवाद) : “अनुभववाद अनुभवक महत्त्व, बुद्धिवाद तर्कक संरचना, व्यवहारवाद जाँचक परिणाम, सामाजिक ज्ञानमीमांसा testimony आ संस्थाक भूमिका, तथा आधुनिक fallibilism संशोधनशीलताक महत्त्व देखबैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

बहुप्रमाणीयता सापेक्षतावाद बनि सकैत अछि जँ विशिष्ट अनुभवकेँ बाह्य तथ्यक समान ठहराओल जाए वा अवैज्ञानिक दाबीक विरुद्ध प्रमाणक अभावकेँ ‘परम्पराक बराबर अधिकार’ कहि अनदेखी कएल जाए। अध्याय एहि प्रमाण-अराजकता आ झूठा संतुलनक जोखिम चिन्हैत अछि। नैतिक गवाहीक महत्त्व, इतिहासक मौन आ प्रयोगजन्य प्राकृतिक निष्कर्ष एकहि प्रमाणभार नहि रखैत —ई भेद स्पष्ट रहबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य (65.19 आप्तक आधुनिक रूप) : “विश्वसनीय वक्ता केवल ईमानदार व्यक्ति नहि; विषयक क्षमता, प्रत्यक्ष पहुँच, सही संप्रेषण आ हित-संघर्षक अभाव चाही। आधुनिक संस्था सामूहिक आप्त जकाँ काम करि सकैत अछि जँ समीक्षा आ सुधार हो।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

समानान्तर दर्शनक पहिल पाँच अध्यायक ज्ञानात्मक नियम एतय स्पष्ट स्वतन्त्र सिद्धान्त रूपमे उभरैत अछि। तर्कगत एकरूपता तखन स्थापित होयत जखन लेखक अपन प्रिय क्षेत्रीय इतिहास, शास्त्रीय दाबी आ उपलब्ध अनुवादोपर एहि विभेदक कठोरता समान रूपसँ लागू करथि। अपन पाठक प्रतिपरीक्षा लेबाक आग्रह एहि प्रस्तावक सबल पक्ष अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 65; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 66 : सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 66 ‘‘सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 66, ‘‘Coexistential Realism’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद जगतकेँ केवल भाषाक निर्माण मानबाक अतिवाद आ वास्तविकताकेँ परस्पर असम्बद्ध वस्तुक ढेर बनायबाक अतिवाद दूनू नकारैत अछि। वस्तु हमर इच्छासँ स्वतन्त्र प्रतिरोध रखैत अछि, मुदा अनुभव, अर्थ आ समाज सम्बन्धक माध्यमसँ बनैत अछि। एहि अर्थमे व्यक्तिक वास्तविकता कम नहि होइत, बल्कि सम्बन्धक निर्भरता आ स्वायत्तताक जटिलता स्पष्ट होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(66.1** वस्तुगत प्रतिरोध**) :** “आगि हमर मतपर निर्भर नहि जे ओ जरेत की नहि; रोग, बाढ़, गुरुत्व, भूख, शरीरक क्षति, वस्तुक भार—ई सभ वास्तविकता हमर पसन्दसँ बाहर प्रतिरोध करैत अछि। एहि कारण सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद सापेक्षतावाद नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

द्रव्य–गुण, अवयव–अवयवी आ कारणक शास्त्रीय विवादसँ सम्बन्धविषयक सोचक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भेटैत अछि। आधुनिक सामाजिक संस्था बहुल व्यक्तिक क्रियाक स्थायी सम्बन्ध-रचना अछि; किन्तु संस्था व्यक्ति ओहिसँ अलग भिन्न क्रियाशील सत्ता अछि की नहि, तकर दार्शनिक विवेचन सतर्क रहय। ‘समाज वास्तविक’ कहबासँ ‘समाज व्यक्तिक अधिकारकेँ निरस्त करि सकैत अछि’ निष्कर्ष कदापि नहि निकलैत।

मूल पाठक साक्ष्य **(66.6** पूर्वपक्ष: सम्बन्ध मानलासँ वस्तुगत सत्य कमजोर होयत**) :** “आपत्ति ई जे जँ प्रत्येक ज्ञान सामाजिक सम्बन्धमे बनैत अछि, तखन सत्य सत्ता वा दृष्टिकोणक खेल बनि जाएत।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

सम्बन्धपर बल वस्तुगत सत्य कमजोर करैत अछि—एहन आपत्ति यथार्थवादक मूल लक्ष्य पर लागैत अछि। अध्यायक उत्तर उचित अछि जँ सम्बन्ध वस्तुगत जगतमे जाँचल जा सकैत अछि आ प्रतिरोध अनुभवसँ स्वतन्त्र रहि सकैत अछि। मुदा सम्बन्धक वास्तविकता सिद्ध करबाक प्रमाण पद्धति सदा वस्तुक प्रत्यक्षसँ समान नहि। समाजक भिन्न स्तरमे कारण-जालक परीक्षण बिनु अवधारणात्मक सामर्थ्यक दावा अपर्याप्त होयत।

मूल पाठक साक्ष्य (66.7 वस्तु आ सम्बन्धक सह-वास्तविकता) : “वस्तु केवल सम्बन्धक गाँठ नहि, कारण ओकर गुण आ प्रतिरोध सम्बन्ध बदललासँ तुरन्त समाप्त नहि होइत। मुदा वस्तु पूर्ण पृथक सार सेहो नहि; पहचान इतिहास, उपयोग आ अन्य वस्तुसँ सम्बन्धमे खुलैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

अध्याय ३८क समाज-विमर्श आ अध्याय ६४क पर्यावरणीय पारस्परिकता एहि सिद्धान्तक ठोस अनुप्रयोग छथि। सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद व्यक्ति कैं अनन्त निर्भरता मे गलायब नहि, स्वायत्त गरिमा आ संबंधगत जिम्मेदारी संयुक्त करबाक दार्शनिक प्रयास अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 66; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 67 : गरिमा-आधारित नैतिकता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 67 ‘‘गरिमा-आधारित नैतिकता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 67, ‘‘Dignity-Based Ethics’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

गरिमा-आधारित नैतिकतामे जन्म, जाति, सम्पत्ति, क्षमता, धर्म अथवा पद मनुष्यक मूल नैतिक मूल्य तय नहि करैत। ई विचार मात्र भावनात्मक सदिच्छा नहि, प्रत्येक सार्वजनिक नियमक कसौटी अछि। अध्याय स्वायत्तता, सहायता, करुणा, अधिकार आ अपमानक संस्थागत रूप अलग-अलग विश्लेषित करैत अछि। व्यक्ति कैं केवल कामक उपयोगिता अथवा गणनाक संख्या मानब गरिमाक विरोधी।

मूल पाठक साक्ष्य **(67.1 गरिमा आ मूल्य) :** “गरिमा समान मानवीय दर्जाक दावा अछि। ई दावा ई नहि कहैत अछि जे सभ व्यक्तिक गुण, आवश्यकता, उपलब्धि वा जिम्मेवारी समान अछि। ई कहैत अछि जे ककरो मूल मानवीय दर्जा कम नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

कान्टक स्वायत्तता, बौद्ध–जैन करुणा आ आम्बेडकरक सामाजिक समताक आन्तरिक साम्य सुरक्षित राखि स्रोतगत भिन्नता देखब जरूरी। सामाजिक संसाधन न रहला पर औपचारिक स्वायत्तता खाली वाक्य भऽ सकैत अछि। वृद्ध, बालक अथवा निर्भर व्यक्ति समुचित निर्णय-सहायता माँगैत छथि; सहायता स्वतन्त्रता समाप्त करबाक समरूप नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(67.6 कान्ट, बौद्ध-जैन परम्परा आ आम्बेडकरसँ संवाद) :** “कान्टक मनुष्यकैं साधन मात्र नहि मानबाक सिद्धान्त, बौद्ध करुणा, जैन अहिंसा आ आम्बेडकरक समानता–स्वतंत्रता–बन्धुत्वक आग्रह एहि ढाँचासँ संवाद करैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘गरिमा बहुत अमूर्त शब्द अछि’क पूर्वपक्ष वास्तविक चुनौती दैत अछि। गरिमाक संस्थागत परीक्षण—अस्पृश्यता निषेध, हिंसासँ सुरक्षा, न्यायतक पहुँच, स्वास्थ्य-सहायता, न्यायोचित दण्ड—यदि स्पष्ट हो तँ सिद्धान्त कार्यकारी बनैत अछि। मुदा कठिन नीति-संघर्षमे गरिमा अनेक दिशामे प्रयुक्त भऽ सकैत अछि, तँ पक्षकार, हानि, अधिकार आ प्रमाणक अलग विश्लेषण जरूरी।

मूल पाठक साक्ष्य **(67.16 पूर्वपक्ष: गरिमा धार्मिक अवधारणा मात्र) :** “किछु परम्परा गरिमाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानैत; तेँ धर्मनिरपेक्ष समाजमे आधार कमजोर कहल जाइत अछि। मुदा समान दर्जा, पीड़ा, स्वायत्तता आ पारस्परिक मान्यतासँ सार्वजनिक तर्क विकसित भऽ सकैत।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

सामाजिक न्याय अध्याय ३८–४९क विखरायल प्रश्न एतय नैतिक सिद्धान्तमे समेटल जाइत अछि। समानान्तर दर्शन कहैत अछि अपन मानवीय गरिमा मानय वाला व्यक्ति दोसर व्यक्तिक समान गरिमा नकारि सुसंगत नहि रहि सकैत। एहि दाबीक मूल्य व्यक्तिगत सम्मानक संग सार्वजनिक संस्थागत नीतिमे परखे जाने चाही।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 67; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 68 : बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 68 ‘‘बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 68, ‘‘Polycentric Democracy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र निर्णय, ज्ञान, संसाधन आ सत्ताकेँ आवश्यकता अनुसार अनेक स्तरमे वितरित करबाक प्रस्ताव अछि। केन्द्रक दूरी नागरिकक आवाज कमजोर करि सकैत अछि, पर स्थानीय प्रशासन स्वतः अधिक न्यायसंगत नहि होइत। अध्यायक महत्त्वपूर्ण सावधानी ई अछि जे स्थानीय बहुमत स्थानीय अल्पमतक अधिकार दमन करि सकैत अछि; अतः विकेन्द्रणक संग स्पष्ट संवैधानिक सीमा आ उत्तरदायित्व चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(68.1 सत्ता आ दूरी) :** “जे निर्णय लोकजीवनकेँ प्रत्यक्ष प्रभावित करैत अछि, ओकरा यथासम्भव प्रभावित लोकक निकट आनब उत्तरदायित्व बढ़ा सकैत अछि। ग्राम, नगर, क्षेत्र, राज्य, संघ—भिन्न प्रश्न भिन्न स्तरपर समाधान माँगैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

सहायकता सिद्धान्त निर्णय कतेक नीचाँ स्तरपर प्रभावी रूपसँ कएल जा सकैत अछि से पूछैत अछि। वित्तीय संसाधनविहीन स्थानीय अधिकार केवल कागजी विकेन्द्रण भऽ सकैत अछि। पर्यावरणीय संकट, महामारी अथवा नदी-प्रबन्धमे अनेक क्षेत्रक समन्वय चाही; एहन प्रसंगमे स्थानीय स्वायत्तता आ व्यापक समन्वयक स्थिर विरोध बनायब अनुचित अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(68.6 संघवाद, स्थानीय शासन आ अधिकार) :** “संघीय व्यवस्था बहुकेन्द्रिकताक एक रूप हो सकैत अछि, मुदा सिद्धान्त ओकरा सँ व्यापक अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘मजबूत केन्द्र बिना व्यवस्था टूटत’ आ ‘बहुकेन्द्र निर्णय अत्यन्त धीमा’क आपत्ति समय, लागत आ नैतिक संरक्षणक प्रश्न उठबैत अछि। निर्णयक गति मूल्यवान अछि, मुदा नागरिकक सुनवाइ आ अपीलक अवसर बिनु तेजी न्याय नहि। उलट, असीम प्रक्रिया निर्णयहीनता बनि सकैत अछि। विभिन्न स्तरपर जिम्मेदारीक स्पष्ट बाँट एहि तनावक व्यावहारिक समाधान माँगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(68.16 पूर्वपक्ष: बहुकेन्द्र निर्णय बहुत धीमा) :** “अनेक स्तर सहमति माँगिते विलम्ब, दोहराव आ जिम्मेदारीक भ्रम उत्पन्न हो सकैत। संकट वा बुनियादी ढाँचा मे स्पष्ट केन्द्र चाही।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

राज्यक औचित्य अध्याय ३९ आ लोकतन्त्र अध्याय ४७क सामान्य सिद्धान्त एहि अध्यायमे ठोस शासनरूप पबैत अछि। ज्ञानक बहुकेन्द्रिकता मिथिलाक क्षेत्रीय भाषा आ लोकस्रोतक सम्मानसँ जुड़ैत अछि, मुदा विशेषज्ञताक विशेष प्रमाणगत मूल्य यथावत् रहैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 68; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 69 : धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 69 ‘‘धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 69, ‘‘The Rational Plurality of Religion’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता धार्मिक आ गैरधार्मिक जीवन-दृष्टिक समान नागरिक गरिमा मानैत अछि; एहि समानताक अर्थ तिनकर परस्पर विरोधी सत्यदाबी समान प्रमाणित अछि नहि। अध्याय आस्था, परिवर्तन आ अनास्थाक त्रिविध स्वतंत्रता मानैत अछि। निजी विश्वास आ सार्वजनिक संस्थाक व्यवस्था बीच भेद राखब बहुल समाजक तर्कगत आधार अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(69.1 तीन स्वतंत्रता) :** “धार्मिक स्वतंत्रताक कमसँ कम तीन अंग अछि: अपन आस्था मानबाक अधिकार; आस्था बदलबाक अधिकार; कोनो आस्था नहि मानबाक अधिकार। एहि तीनमे सँ एक हटला पर धार्मिक स्वतंत्रता अधूरी रहत।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

धर्मक नैतिक, सांस्कृतिक आ सेवामूलक सार्वजनिक योगदान स्वीकारब सम्भव अछि, मुदा कोनो संस्था अपन सिद्धान्तद्वारा सभ नागरिकक अधिकार नियन्त्रित करबाक विशेषाधिकार नहि पबैत। अन्तरधार्मिक विवाह, धर्मान्तरण आ परिवारक दबावक प्रश्नमे व्यक्तिगत सहमतिक वास्तविक स्वतंत्रता जाँचब जरूरी। सार्वजनिक कारण केवल बहुमतक धार्मिक भाषा नहि बनय; अल्पमतक समझ आ आपत्ति प्रस्तुत करबाक समान मार्ग रहबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(69.6 संवाद आ सत्य-दाबी) :** “बहुलता कहैत नहि जे सभ धार्मिक दाबी समान रूपसँ सत्य। परस्पर विरोधी तत्त्वमीमांसीय दाबी एकहि अर्थमे सभ सत्य नहि भऽ सकैत। बहुलताक राजनीतिक अर्थ सत्य-दाबी

छोड़ब नहि; असहमति बीच हिंसा, दमन वा असमान नागरिकता अस्वीकारब अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

बहुलता सत्यक प्रश्न टारैत अछि—एहन पूर्वपक्षक उत्तर असहमतिक नागरिक संरक्षण अछि, सत्यदावाक निरस्त्रीकरण नहि। ओहि संग सार्वजनिक कारण अपनहि बहुमतक शब्दावली बनि सकैत अछि—ई दोसर आपत्ति सटीक। न्याययुक्त प्रक्रिया हेतु कारणसभ अनुवादित, आलोचनायोग्य आ संबंधित व्यक्तिक प्रवेश लेल पर्याप्त समझ योग्य होयबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(69.16 पूर्वपक्ष: सार्वजनिक कारण स्वयं बहुमतक भाषा)** : “साझा कारण कहला पर प्रमुख धर्म वा धर्मनिरपेक्ष अभिजन अपन भाषा ‘सार्वजनिक’ घोषित करि सकैत अछि। अल्पमतक अवधारणा अनुवादमे क्षीण होइत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

धर्मबहुलता अध्याय ५५ आ धर्म-राज्य अध्याय ५६क तर्क एतय एक स्वतंत्र सिद्धान्त बनैत अछि। कोनो धार्मिक ग्रन्थक मान-हानि आ मनुष्यक गरिमाक हनन एकहि नैतिक घटना नहि; आलोचनाक अधिकार आ नागरिक समानताक सहजीवन चाही।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 69; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 70 : समानान्तर इतिहास-दृष्टि

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 70 ‘‘समानान्तर इतिहास-दृष्टि’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 70, ‘‘A Parallel View of History’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

समानान्तर इतिहास-दृष्टि मुख्य कथा उलटि नया विजेता-आख्यान बनायबाक नाम नहि। सरकारी अभिलेख, लोकस्मृति, पत्र, आर्थिक विवरण, भाषिक साक्ष्य आ मौन—सभक सम्भावित महत्त्व स्रोतगत छननी द्वारा स्पष्ट होइत अछि। ‘केन्द्र पढ़ू, हाशिया पढ़ू, मौन पढ़ू’क अर्थ प्रमाणक स्वतंत्र परीक्षा छोड़ब नहि; असमान संरक्षित सामग्रीक भीतर छिपल प्रश्न चिन्हब अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(70.1** अभिलेखक असमानता**) :** “राज्य, दरबार, संस्था आ शिक्षित वर्ग लिखित अभिलेख अधिक छोड़ैत अछि। गरीब, स्त्री, श्रमिक, ग्रामीण समुदाय, क्षेत्रीय भाषा आ मौखिक परम्पराक अनुभव कम लिखित रहि सकैत अछि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

कालक्रम आ स्मृतिक समयक भेद अनिवार्य अछि। कोनो घटना समूहक स्मृतिमे क्रम बदलिकेँ रूपक भऽ सकैत अछि; तकर सांस्कृतिक महत्त्व रहते तथ्यात्मक क्रम स्वतंत्र सत्यापन माँगैत अछि। स्रोतक निकटता, परस्पर निर्भरता आ उद्देश्यक परीक्षण बिना वैकल्पिक इतिहास स्वयं अनौपचारिक मिथक बनि जाएत। ‘प्रतिहistory’क प्रमाणभार मुख्यधारा-इतिहास जतेक कठोर रहबाक चाही।

मूल पाठक साक्ष्य **(70.6** मिथिला आ क्षेत्रीय इतिहास**) :** “क्षेत्रीय इतिहासक उद्देश्य राष्ट्रीय इतिहाससँ अलग मिथकीय गौरव बनायब नहि। मिथिलाक स्थानीय स्रोत, भाषा, पञ्जी, साहित्य, न्याय-परम्परा, लोकस्मृति

आ सीमा-पार नेपाल–भारत सन्दर्भ व्यापक इतिहासकेँ समृद्ध करि सकैत अछि।”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

‘वस्तुनिष्ठता नष्ट’क आपत्ति तब वैध हो सकैत अछि जँ प्रत्येक दृष्टिकोणक अलग सत्य घोषित हो। लेखक सममित प्रमाण-कसौटी द्वारा एहि जोखिमक विरोध करैत अछि। दोसर आपत्ति क्षेत्रीय इतिहास संकीर्ण अस्मिता बनबैत अछि; एकर उत्तर अछि क्षेत्रीय अध्ययनक सार्वजनिक परीक्षण आ परस्पर बहु-क्षेत्रीय तुलना। क्षेत्रक प्रेम प्रामाणिक स्रोत-निर्माणक विकल्प नहि।

मूल पाठक साक्ष्य **(70.17** पूर्वपक्ष**:** क्षेत्रीय इतिहास संकीर्ण अस्मिता बनबैत अछि**) :** “क्षेत्रीय गौरव चयनात्मक कथा, बाहरीक अवमानना आ मिथकीय प्राचीनता उत्पन्न करि सकैत अछि। ई खतरा वास्तविक।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

मिथिलाक बौद्धिक भूगोल पर प्रारम्भिक अध्याय १७–२४मे जे इतिहासगत सावधानी छल, एतय ओकरा स्पष्ट पद्धतिक आकार भेटैत अछि। डिजिटल संग्रहक उपलब्धता प्रमाणक पहुँच बढ़ाबैत अछि, मुदा तिथि, संशोधन आ प्रतिलिपिक उत्पत्ति जाँचब आवश्यक रहैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 70; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 71 : समानान्तर दर्शनक सूत्र

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 71 ‘‘समानान्तर दर्शनक सूत्र’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 71, ‘‘The Aphorisms of Parallel Philosophy’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

तीस सूत्रमे दीर्घ दर्शन-पाठ समेटबाक काज अत्यन्त कठिन अछि। सूत्र स्मरणयोग्य कसौटी बनि सकैत अछि, मुदा शास्त्रार्थमे उठल अपवाद, अन्तरविरोध आ इतिहासक सन्दर्भ हटि जाए तँ सूत्र नारा बनि जायत। अध्याय सत्य-प्रमाण, परम्परा-नवीनता, गरिमा-न्याय, धर्म-राज्य, विज्ञान-इतिहास आ आत्मसमीक्षाक क्षेत्रमे सूत्र समूहित करैत अछि। एहि समूह-विन्याससँ विचारसभक अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(71.1 सत्य, ज्ञान आ प्रमाण) :** “1. सत्य बहुदृष्टिगत भऽ सकैत अछि, मनमाना नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

प्रत्येक सूत्रक परीक्षणक उचित विधि ई होयत जे ओकरा एकटा विवादित वास्तविक प्रसंगमे लागू कएल जाए। ‘प्रमाण पूछू’ मात्र कहला सँ प्रमाणक श्रेणी चुन्नाइ समाप्त नहि; ‘गरिमा मानू’क अर्थ संसाधन, दण्ड आ संस्थाक संघर्षमे अलग परिणाम दऽ सकैत अछि। सूत्रसभकेँ स्थिर कथनक बदला निर्णयक आरम्भिक कसौटी बनायब लेखकक घोषित उद्देश्यसँ संगत अछि।

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

दार्शनिक पद्धति जँ अपन परीक्षणपर लागू नहि हो, तँ ई अन्तिम सूत्रोक्तिक महत्त्व केवल आलङ्कारिक रहत। धार्मिक अधिकार, क्षेत्रीय इतिहास, वैज्ञानिक दावी आ बहुलताक नीति चारि अलग प्रश्न मे मूल कसौटी समान रूपसँ लागू

होबाक चाही। संशय आ करुणाकेँ विरोधी नहि मानि संयुक्त सार्वजनिक व्यवहार बनायबाक कठिनाई निरन्तर रहैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य (71.5 विज्ञान, तकनीक, भाषा आ इतिहास) : “16. विज्ञान प्रकृतिक प्रश्नमे सर्वोत्तम सार्वजनिक ज्ञान-पद्धतिसभमे एक अछि; नैतिक मूल्यक एकमात्र स्रोत नहि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

अध्याय १क प्रश्न-आधारित आरम्भ आ ७१क सूत्र-निर्माणक लम्बा चक्र एतय मिलैत अछि। यदि सूत्रसभकेँ अचूक अन्तिम सिद्धान्त मानि ली तँ पूर्ववर्ती संशोध्य विवेकवाद खण्डित होयत; यदि अगिला जाँचक उपकरण मानू तँ समग्र ग्रन्थ अपन आरम्भिक प्रतिज्ञा निभबैत अछि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 71; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 72 : उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ

मूल पाठ : समानान्तर दर्शन, खण्ड १, अध्याय 72 ‘‘उपसंहार: समानान्तर रहबाक अर्थ’’; उपलब्ध अंग्रेजी पाठ : Chapter 72, ‘‘Epilogue’’। मूल समीक्षाक आधार अध्यायक क्रमबद्ध उपखण्ड आ समापनिका अछि; साक्ष्यक सूचक नीचे स्रोत-अनुच्छेदक अनुसार।

मुख्य दार्शनिक प्रतिज्ञाक विवेचन

उपसंहार ‘समानान्तर’कैं विरोधी राजनीतिक नारा नहि, स्रोत, प्रमाण, इतिहास, गरिमा आ आत्मपरीक्षाक पद्धति मानैत अछि। मुख्यधाराक विचारक आलोचना कएल जाए, मुदा ओकर बलिष्ठ तर्क सुरक्षित रखल जाए; उपेक्षित स्रोत खोजल जाए, मुदा ओकरा स्वत: सत्य घोषित नहि कएल जाए। एहि दुई संयमक कारण ग्रन्थ अपने घोषित मार्गक कठोर परीक्षा मांगैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(72.1 प्रश्नसँ आरम्भ, प्रश्नपर समाप्ति नहि) :** “एहि ग्रन्थक पहिल अध्याय दर्शनकैं उत्तरक संग्रह नहि, कारण माँगबाक आत्मसचेत क्रिया मानैत छल। अन्तिम अध्यायमे सेहो ई बात बदलैत नहि।”

आन्तरिक तर्कक्रम आ पाठ-साक्ष्य

मिथिलाक प्रश्नपरम्परा पद्धतिक आधार अछि, सर्वदर्शनक अनन्य राजधानीक दावा नहि। भारतीय न्याय, मीमांसा, बौद्ध, जैन, वेदान्त आ लोकायतक आन्तरिक मतभेद संग पाश्चात्य परम्पराक तुलनात्मक सम्बन्ध इतिहासगत दूरी राखैत अछि। समाज, धर्म, राज्य, विज्ञान आ तकनीक एक-दोसरसँ स्वतन्त्र बन्द कक्ष नहि; समस्या-आधारित संवादक आवश्यकता रहैत अछि।

मूल पाठक साक्ष्य **(72.4 पाश्चात्य दर्शन: संवाद, अनुकरण नहि) :** “यूनानी प्रश्न, मध्ययुगीन तर्क, आधुनिक बुद्धिवाद- अनुभववाद, कान्टक आलोचना, हेगेलक इतिहास-दृष्टि, मार्क्सक संरचना-विश्लेषण, अस्तित्ववादक

व्यक्तिगत जिम्मेवारी, विश्लेषणात्मक दर्शनक स्पष्टता, व्यवहारवादक अन्वेषण आ विज्ञान-दर्शनक”

पूर्वपक्ष, सम्भावित आपत्ति आ सीमा

एकटा मूल आलोचनात्मक तनाव बाँचि रहैत अछि: चारि क्षेत्रमे प्रमाणक प्रकार भिन्न होइतहुँ सार्वजनिक निर्णय मे सममित न्याय कतेक निश्चित बनैत अछि? क्षेत्रीय स्मृति आ राज्यकीय अभिलेख, निजी विश्वास आ वैज्ञानिक निष्कर्ष, व्यक्तिगत स्वतंत्रता आ सामूहिक संसाधन—सभमे समान ‘प्रमाण पूछू’ कहब पर्याप्त नहि। अलग क्षेत्रक जाँचविधि लागू करबाक विद्वत् परिश्रम जरूरी।

मूल पाठक साक्ष्य (72.8 पर्यावरण आ समयक विस्तृत नैतिकता) : “पर्यावरणीय प्रश्न नैतिक समुदायकेँ वर्तमान मनुष्यसँ आगाँ बढ़बैत अछि। भावी पीढ़ी, नदी, जंगल, प्रजाति, पारिस्थितिकी तन्त्र आ दीर्घकालीन जोखिम—ई सभ निर्णयमे प्रवेश करैत अछि।”

समानान्तर दर्शनमे अध्यायक योगदान

खण्ड १क उपलब्धि प्रश्नकेँ नूतन स्रोतधरि विस्तारित करब अछि। एकर सीमा बृहद् संश्लेषणक कारण प्रत्येक शास्त्रीय ग्रन्थक विस्तृत प्राथमिक पाठालोचना संभव नहि रहल। अगिला मूल ग्रन्थसभ—तत्त्वचिन्तामणि, भामती, आत्मतत्त्वविवेक आ न्यायकुसुमाञ्जलि—अपन-अपन मूल DOCX पर आधारित पृथक अध्ययन माँगैत छथि। पहिल खण्डक समीक्षा तिनकर अग्रिम प्रमाणित पाठसम्पादनक विकल्प नहि।

समीक्षकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड १, मूल मैथिली अध्याय 72; समान शीर्षकक अंग्रेजी अध्याय केवल तुलनात्मक संदर्भक रूपमे चिन्हित। उद्धृत वाक्य मूल मैथिली स्रोतसँ अक्षरशः लेल गेल अछि।

अध्याय 65–72 : तुलनात्मक निष्कर्ष

अन्तिम आठ अध्याय पहिनुक ऐतिहासिक समीक्षाकेँ मूल प्रस्तावमे समेटैत अछि: अनेक प्रमाणक संशोध्य प्रयोग, सहअस्तित्वात्मक यथार्थ, गरिमा-मूलक नीति, सत्ता-विकेन्द्रण, धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता, समानान्तर इतिहासक स्रोत-शुचिता, दार्शनिक सूत्र आ उपसंहारक आत्मसमीक्षा। एहि सिद्धान्तसभक सबलता अपन अपवाद-समीक्षामे अछि, न केवल घोषणात्मक वाक्यमे।

समग्र दार्शनिक मूल्याङ्कन

प्रथम खण्डक मुख्य उपलब्धि मुख्यधाराक स्थानमे दोसर अचूक केन्द्र स्थापित करब नहि, प्रमाण, प्रतिपक्ष आ आत्मपरीक्षाक आवश्यकता सर्वपरम्परापर समान रूपसँ लागू करबाक आग्रह अछि। मिथिलाक दार्शनिक परम्पराक आधुनिक पुनर्पाठमे ई पद्धतिक महत्त्व विशेष अछि। एकर सीमा व्यापक तुलनाक कारण प्रत्येक ऐतिहासिक प्रतिज्ञाक समान रूपसँ विस्तृत मूलस्रोत-परीक्षण नहि भऽ सकब अछि।

मूल ग्रन्थ-सन्दर्भ

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन, खण्ड १। विदेह, २०२६। मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी द्विभाषिक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन, खण्ड २। विदेह, २०२६। तुलनात्मक सन्दर्भ।

प्रश्न — प्रमाण — प्रतिपक्ष

समानान्तर दर्शनक पुनर्परीक्षण

समानान्तर दर्शन

खण्ड २६ — प्रथम खण्डक समीक्षा

एहि ग्रन्थमे गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शनक प्रथम खण्डक बहत्तरि अध्यायक क्रमबद्ध, स्वतंत्र आ मूल पाठाधारित समीक्षा प्रस्तुत अछि।

भारतीय दर्शन, मिथिलाक न्याय आ नव्य-न्याय परम्परा, पाश्चात्य तत्त्वचिन्तन, सामाजिक न्याय, धर्म, आधुनिक विज्ञान आ कृत्रिम बुद्धिक प्रश्नसभकेँ मूल प्रतिज्ञा, प्रमाण आ प्रतिपक्षक कसौटी पर राखल गेल अछि।

मूल मैथिली पाठक साक्ष्य आ उपलब्ध अंग्रेजी रूपान्तरक तुलनात्मक परीक्षणक संग दार्शनिक पद्धतिक उपलब्धि तथा सीमाक विवेचन कएल गेल अछि।

विदेहक दू आधिकारिक वेबसाइट

www.videha.co.in

videha-ejournal.github.io/videha